किरणों के पदचिन्ह

डा० उदय सरन अरमान

इस पुस्तक के प्रकाशन का कुल व्यय मान्यवर श्री डा. ए. के. सिंह एम. एस. बंगला गांव मुरादाबाद द्वारा वहन किया गया है ।

किरणों के पदचिन्ह

डॉ. उदय सरन अरमान

हर उस भगवत श्रद्धालु
के नाम

जो वसुधैवकुटुम्वकम पर
विश्वास के साथ मानव कल्याण
की भावना से ओत प्रोत होकर जीता है

मेरी नज़र में
सर्वश्रेष्ठ उपास्य परमात्मा है ।

मेरी नज़र में
सर्वश्रेष्ठ उपास्य परमात्मा है ।
सर्वश्रेष्ठ पूजनीय देवी माता है ।
सर्वश्रेष्ठ आराध्य देवता पिता है ।
सर्वश्रेष्ठ माननीय फ़रिश्ता विद्या है ।
सर्वश्रेष्ठ प्रशन्सनीय हस्ती गुरू है ।
सर्वश्रेष्ठ लोकमान्य धर्म मानवता है ।

डॉ. उदय सरन अरमान
17 नवम्बर 1988

"अच्छे काम में देर , बुरे काम में जल्दी,
शत्रु पर दया और अश्रित पर जुल्म नहीं
करना चाहिये ।

रावण

(श्री लंका)

"धर्म मानव प्रगति में बाधक है
क्योंकि यह गतिरोध, निष्क्रियता,
परलोक परायणता आदि पैदा करते हैं ।
उन्नति और विकास तभी सम्भव हैं,
जब यह मान लिया जाये कि मनुष्य स्वतन्त्र है और उपवना
सुधार करत्ते और पूर्णता प्राप्त करने की क्षमता रखता है "।

अब्दुल्लाह अल कसैमी

(मिश्र)

"ख़ुदा से दुआ करो और उपनी वारूद ख़ुश्क रखो "

क्रामवैल

(इंगलैण्ड)

राज्य और धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है "

मुस्तफा कमाल पाशा

(तुर्की)

"रन चर शिङ्. पेन्शन, शिङ्.
शिआइ. चिउशी शिआङ. युवान"

(मानव प्रकृति मूल रूप से अच्छी है ।
प्रकृति मनुष्य को एक दूसरे के निकट
लाती है ।
किन्तु – संसारिक व्यवहार उन्हें प्रथक करता है)

– सानत्जु चिङ्.
(चीन)

"जो मन रूढ़ियों, अन्धविश्वासों,
कथनों, उदाहरणों आदि से भरा
पड़ा है, वह सत्य को ग्रहण कैसे
कर पायेगा भरे प्याले में कुछ
भी नहीं भरा जा सकता "

जिद्ध कृष्ण मूर्ति
(भारत)

विषय सूची

पैग़ामे अजल के आते ही,
खुलती हैं तग़ाफ़ुल की आँखें ।
इन्सान जनाज़े के पीछे,
कुछ होश की बातें करता है ।।

अरमान

1

श्री ईश्वराय नमः

(परमात्मा और प्रकृति)

किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व, श्री गणेशाय नमः कहने वाले सज्जन, "श्री ईश्वराय नमः" पर अवश्य चौंकेगे । चौंकने की बात भी है । कोई भी नई विचारधारा, पुरानी विचारधारा के अभ्यस्त कानों के खटकती ही है । मैं किसी व्यक्ति की "पवित्र धारणाओं" और धार्मिक विचारों पर आक्रमण नहीं कर रहा, क्या है, क्या नहीं है ? इस तर्क के माया जाल में फंसना मेरा उद्देश्य नहीं है । जिस का जैसा मत है, ठीक है । जहां तक मेरे व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न है, मुझे इन सुन्दर अप्रमाणित कल्पनाओं पर क़तई विश्वास नहीं है । जो बात समझ में नहीं आती उस पर विश्वास भी नहीं होता है और जो बातें तर्क की दृष्टि में सही नहीं जंचती हैं इस वैज्ञानिक युग में अग्राह्य और अविश्वासनीय होती हैं ।

न ले ज़िन्दगी में किसी का सहारा ।
ख़ुदा के सिवा सब सहारे हैं झूटे ।।

मैं ईश्वर के आलावा किसी भी देवी देवता को नहीं मानता हूँ । हां ईश्वर के बाद यदि किसी को सर्वश्रेष्ठ पूजनीय मानता हूँ तो वह देवी, माता है, और इस के बाद सर्वश्रेष्ठ आराध्य देवता पिता को मानता हूँ । मूझे यह भली प्रकार विदित है कि मुझ जैसे दीवानों के विरूद्ध समाज में

रूढ़िवादिता और अन्धविश्वासों की मदिरा में प्रमत लोग अजीब अजीब प्रकार की प्रतिक्रिया शुरू कर देते हैं । इस बात का इतिहास साक्षी है। मेरे सामने गिअडिनोब्रनो को इटली में जीवित जलाया जा रहा है, उस को ईसाई धर्म पर विश्वास नहीं रहा था' उस ने अन्धविश्वास को डाईबोर्स देकर तर्क और बुद्धि को गले लगाया था । मुझे हज़रत ईसा सलीब पर लटके नज़र आ रहे हैं, जिन्हों ने हिब्रु बोदे नियमों के प्रतिकूल जुबान खोलने का सफल प्रयास किया था । क्रान्तिकारी विचारधारा के जन्मदाता सुकरात मुसकराते हुये हैमलोक (विष) पीते नज़र आ रहे हैं । सत्यार्थप्रकाश के भक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती को लकीर के फ़कीरों द्वारा विषपान कराया जा रहा है । अब्राहमलिंकन, मार्टनलूथर किंग, जोन कनेडी और महात्मा गांधी के गोलियों से क्षत विक्षत कलेवर भी सत्य, प्रेम और सौहार्द्र की वलिवेदी पर कुर्बान होते दिखाई दे रहे हैं । इन तमाम भयावह परिणामों के बावजूद मेरे कानों में वेदों के स्वार्णिम पृष्ठों से "प्रथम ब्रह्म द्वितीय नास्ति" और कुरान शरीफ़ से "ला इलाहा इल्लल्लाह" की अभिराम, मधुर और प्रिय आवाजें भी अविराम सुनाई दे रही हैं । यही आवाजें मेरे जीवन का मूल मन्त्र हैं और लक्ष्य की ओर ले जाने वाले धर्मदूत भी । यह सत्य है और अकाल्य सत्य है कि इस वास्तविकता की ओर उठने वाले कदमों को न यज़ीद के भाले रोक सकते हैं, न हिरण्यकश्यप की यन्त्रणायें, न फ़रऊन की दहशत न हावान के जुल्म न शद्दाद् के सितम और न कन्स के घोर अत्याचार ।इसी लिये मैं हाथी के सिर वाले को नमस्कार न कर के ईश्वर को नमस्कार लिख रहा हूँ । यही विस्मिल्ला का परयाय है । यही सर्वमान्य है ।

मुझे ईश्वर पर पूर्णविश्वास है । उस के आस्तित्व पर पूरी आस्था है । वह मेरा माशूक़ है, मैं उस का आशिक हूँ । वह मेरा इष्ट देव है और मैं उस के चरणों में पड़ा हुआ नाचीज़ ख़ाक का एक कण । भगवान का आस्तित्व एक यूनीवर्सल ट्रुथ (Universal Truth) है । इस की जड़ पर ठन्डा पानी देने वाले माली (भक्त) आद्यन्त रहेंगे ।

अगर सन्सार सागर में हम स्वयं को पानी की एक बूँद मान लें तो

पानी की बुँद (एच टू ओ) का आस्तित्व ओक्सीजन और नाइट्रोजन दो गैसों के मिलने से बना है यदि यह दोनों गैसें अलग हो जायें तो पानी की वूँद का आस्तित्व नगण्य हो जायेगा।अर्थात पानी दो गैसों से बनता है । इसी प्रकार हम भी प्रकृति और परमात्मा से जुड़े हुये हैं । यही दोनों हमारे जीवन का सार हैं और यही जीवन का आधार। ईश्वर और प्रकृति इन्सान से पल भर को भी अलग नहीं होते हैं ।

"अन्तिसन्त न जहाति, अन्ति सन्त न पश्यति"

पानी जीव पास बैठे हुये साथी (प्रकृति) से चिपटा हुआ है और पास बैठे हुये अन्य साथी (परमात्मा) को देखता भी नहीं ।

ईश्वर पर विश्वार करना ऐसी सुन्दर भावना है कि इस को वैदिक धर्मावल्भ् वियों, पारसी, जरथुस्त्र, भेजी, यहूदी, टोओ, जैन, बौद्ध, शिन्टो, कन्फ्यशियस, इसाई मुसलमान और सिक्खों के अतिरिक्त दुनिया भर में फैले 96000 धर्मावलम्बी जिन की सभ्यताओं को पिछड़ा हुआ माना जाता है और मूर्ति उपासक बताया जाता है, वे सभी किसी न किसी रूप में प्रकृति उपासना के साथ साथ ईश्वर को भी मानते थे ।

हो सकता है वह हम से भी अधिक ईश्वरवादी हों । हम तो केवल आमिल के अमल होकर रह गये हैं । आज भी हम देखते हैं कि देहात के भोले भाले अनपढ़ लोग जिन के पास हमारी तरह धार्मिक किताबों का ढेर भी नहीं है और अच्छी धार्मिक जानकारी भी नहीं है लेकिन वह धर्म, कर्म, पूजा भक्ति में अटूट विश्वास रखते हैं जितना ईश्वर का भय और ईमान की चिन्ता इन ग्रामीण पिछड़े लोगों में व्याप्त है उतना शहरों की सभ्य सुसन्स्कृत जनता में भी नहीं है । खुद को सुपरमैन समझने वाले स्वयं अपने अपने दामनों में झांक कर देखें कि जितने आग के खेल और मानव रक्त से होली शहरों में खेली जाती है, शोलों और चीत्कार की सौगन्ध, गांवों में इस निन्दनीय कुकृत्य का नामोनिशान भी देखने को नहीं मिलेगा । गावों में शान्ति भाई चारा, मेल जोल जन्म लेता है तो शहरों

में आये दिन कर्फ़्यु पनपता है।

वेदों में भगवान को "निरतिशय" कहा गया है । अर्थात जिस से बड़ा कोई न हो । वाक़ी चीजों को "सातिशय" (यानी जिन से बढ़ कर कोई होता है) कहा गया है । मानव, दानव देवी देवता सभी "सातिशय" के अन्तर्गत आते हैं । कुछ लोग ऐसे भी हुये हैं जिन को नास्तिक कहा गया है । जैसे अंगरेज़ दार्शनिक (Thomes Hobbes) टामस हाब्स । यह भगवान को बिल्कुल नहीं मानता था केवल प्रकृति ही को सृष्टि का मूल कारण मानता था । रूसी क्रान्तिकारी महान नेता लेनिन और स्टालिन एवं भारत में गौतम बुद्ध को भी नास्तिक कहा गया है । मेरा तो यह ख्याल है कि जिन लोगों ने उन को करीब से समझने की कोशिश नहीं की वही इस प्रकार की बातें करते हैं । अन के भगवान को मानने का तरीका और सोचने समझने का ढंग हम से कुछ भिन्न था । इसी लिये नासमझी वश हमने इतने बड़े विचारकों को नास्तिक बता दिया है । यदि उन का अन्तर झांक कर देखा जाये तो वे भी किसी अद्वितीय दैवी शक्ति के सामने नतमस्तक नजर आते हैं । गरज़ यह कि

"किसी से न इन्कार बन आया तेरा"

ईश्वर को समझना कि वह क्या है ? कैसा है ? यह इन्द्रीयज्ञान से परे की चीज़ है । कोई अपने दिल को कैसे भी समझले लेकिन यह गुत्थी मानव बुद्धि के लिये एक जटिल समस्या अवश्य बनी रहेगी ।

प्रश्न उठता है कि उस को माना किस रूप में जाये ? इस का बहुत आसान उत्तर है । वह एक सुक्ष्मतम सर्वव्यापक, सर्वोत्कृष्ट, कूटस्थ, अमर, अजर, अभय, ऐश्वर्यवान, चराचरात्मा, सर्वान्तिर्यामी, अनादि, अनुपम, नित्य, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, निरविकार, सर्वाधार, सर्वेश्वर, शुद्ध, पवित्र, सर्वज्ञ, शाक्तिमान "शक्ति" है । इतने गुण जिस शक्ति में होंगे उस का रूप ही क्या हो सकता है । शक्ति का कोई रूप या आकार नहीं हेता है । उसके चमत्कारों का रूप होता है जो कि उस शक्ति पर विश्वास जमाये

रहने का इशारा करते रहते हैं । दर्द, प्यार, ग़म, लू, हवा की भांति परमात्मा महसूस करने की वस्तु है इन आंखों से देखने की चीज़ नहीं है ।

पौराणिक कथाओं पर विश्वास करने वाले लोग राजा सगर के सात हज़ार पुत्र और श्री कृष्ण को सोलह हजार रानियों की सात लाख छब्बीस हज़ार सतत्तर सन्तानों तथा तीन हज़ार पांच सौ बरस जीवित रहने वाले और ऊँचे से ऊँचे पहाड़ों से भी दूने ऊँचे कद वाले "ऊज" पर भी विश्वास कर लेते हैं तो फिर ईश्वर पर विश्वास करना तो आसान काम है ।

अगर रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास पर आक्रमण करना पाप है तो मैं पापी कहलाने को तैयार हूँ । ईश्वर के अलावा किसी पर आस्था रखना मुझे खलता है । कोई मुझे कुछ कहे मैं सूनने को तैयार हूँ परन्तु मार्ग से विचलित नहीं होना है कोई कहता है वह "क़ादिर-ए-मुतलक़' है यानी जो चाहे कह कर सकता है ।मगर फिर भी उस का अपना एक नियम है और उस नियम के विरूद्ध वह कुछ नहीं करता है । वह नियम प्रकृति है । प्रकृति को चन्द "उसुलों का मजमुआ" की संज्ञा भी दी जा सकती है । यानी प्रकृति कारण है । जिस वस्तु पर भी नज़र पड़ती है वह प्रकृति रचित है। प्रकृति को ईश्वर का सर्वशक्तिमान और नियमवद्धतापूर्ण हाथ भी कह सकते हैं ।

जिस प्रकार युद्ध में योद्धा हारते जीतते हैं और राजा की हार जीत मानी जाती है । इसी प्रकार प्रकृति द्वारा किये गये कार्य ईश्वर द्वारा किये गये कार्य मान लिये जाते हैं । ईश्वर और प्रकृति को एक समझने वाले लोग यहींएक भोली भाली भूल कर बैठते हैं । उन दोनों में आग और शोले का सा सम्बन्ध है ।

मैने अपने चमन में कमल लगाने के लिये सीमन्टेड हौज़ बनवाया था । उसी की तली में खेत की मिट्टी डलवा दी थी; फिर टयूबबैल से पानी भरवा दिया गया। एक साल के अन्दर उस टैंक में आनेकों प्रकार के कीटाणु और मेंढक पैदा हो गये। सिवार नाम का पौधा भी उग आया,

जिस का बीज ही नहीं होता है, जो खरपतवार में शुमार किया जाये । इस पोधे का जन्म ईश्वर की माया और प्रकृति का काम माना जाना चाहिये, न कि ईश्वर का काम और प्रकृति की माया । प्रकृति ने धीरे धीरे सारा संसार बनाया है । यहां कोई भी चीज एक दम नहीं बनी है । कमान पर कोई एक दम नहीं पहुँचता है । एक एक सीढ़ी चढ़ कर पहुँचता है। प्रकृति अनियमिता को बिल्कुल पसन्द नहीं करती है । बम बनाने में हाइड्रोजन, हैलियम, लैथियम, वैरीलियम, वोरन, कारबन, नाइट्रोजन, आक्सीजन आदि गैसों का प्रयोग होता है । यदि इस के फ़ार्मूले में से कोई एक चीज़ भी कम हो जाये तो बम नहीं बन सकता । आदमी भी पंचतत्व का पुतला है इन में से एक तत्व भी कम हो जाये तो यह मर जाता है और मर जाने पर जीवित नहीं हो सकता । आम पर आम की क़लम मो लगाई जा सकती है लेकिन गूलड़ की नहीं क्योंकि उन दोनों के तनों के रसों में अन्तर ड़ोता है । जिन के रस एक दूसरे से मेल खते हैं उन्हीं पोधों की डाली दूसरे पौधे की डाली पर पाली जा सकती है । यही प्रकृति का नियम है । इसी नियम में ताकत है । प्रकृति को कुदरत भी कहते हैं । क़ुदरत का अर्थ होता है शक्ति इसी लिये "अल्लाह की कुदरत" का वाक्य प्रसिद्ध है । यानी प्रकृति भगवान की देन है और सब कुछ प्रकृति की देन है ।

नीले रंग में लाल रंग मिलाने से काला नहीं हो सकता वल्कि बैंगनी हो जायेगा।चाहे उसे किसी भी नस्ल का आदमी मिलाये । चाहे किसी भी देश में और किसी भी जलवायू में मिलाया जाये । पानी भाप बन कर उड़ जाता है मगर आग पर जलता नहीं है ।

हवा के दो स्तर होते हैं । एक ट्रौपिकलस्फ़ियर और दूसरा स्ट्रैरौस्कियर। पहला धरती से दस बारह मील ऊपर तक माना जाता है। इस का ताप मान घटता जाता है क्योंकि पृथ्वी पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें पृथ्वी से टकरा कर उतनी ही ऊपर तक जा पाती हैं, इस लिये इस हिस्से में ठन्ड अधिक होती है और ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ पड़ने लगती है । बाक़ी ऊपर का भाग गर्म रहता है । जैसे दिये की लौ पीले भाग

से ऊपर कम गर्म होती है और पीले भाग के पास बहुत गर्म होती है । यह सब प्रकृति के नियमों का चमत्कार है ।

गन्ने का रस बहुत ही मीठा होता है । जब हम उस को किसी बर्तन में भरकर रख देते हैं तो वह चौबिस घन्टे बाद खट्टा हो जाता है सिरका (Vinegar) कहलाता है । अब उस को पकाया जाये तो चीनी नहीं बनती । वह मिठास कहां चली गयी। खटास कहां से आ गया । फटे दूध से घी नहीं बनता । वह चिकनापन कहां चला जाता है । दही बनने की विशेषता दूध में प्राकृतिक है । इस तरह हम देखते हैं कि प्रकृति दुनिया में किस किस प्रकार परिवर्तन लाती रहती है ।

कुछ लोग कहते हैं कि "बिना भगवान के हुक्म के पत्ता नहीं हिलता" जैसे अमरीकी पायलट ने अमरीकी सैनिक अधिकारी के हुक्म "Drop" कहते ही नागासाकी पर बम गिराया था । मैं इस धारणा को गलत बता कर किसी की तबीयत को दुख पहुँचाना नहीं चाहता लेकिन मैं इस विचार धारा से, जो बारह बरस से अन्धविश्वास की वैसाखियों के सहारे चली आ रही है ; बिलकुल भी सहमत नही हूँ । धार्मिक विचार धारा के लोग मेरे विचार से सहमत होंगे यह भी ज़रूरी अमर नहीं है थोडी देर को हम लकीर के फ़क़ीर ही बने रहें, पूर्वजों की बात ही सत्य मान लें और उस पर तर्क के बान न सन्धानें । फिर तो गांधी जी के कातिल नाथूराम गौडसे, इन्दिरा जी के खूनी विअन्त, बेगुनाहों और मासूमों पर अत्याचार करने वाले यज़ीद, लांगीवीले के क़बीले के चार लाख लोगों का रक्तपात करने वाले ईदी अमीन, साठ लाख यहूदियों को गैस चैम्बर में दम घोट कर मौत की नींद सुलाने वाले अडोल्फ आइख, चौसंठ मन्दिरों को लूटने वाले शंकर वर्मन, 13 अप्रैल 1919 को जालियां वाले बाग में ग्यारह सौ बेख़ता स्वतन्त्रता के शैदाई भारतियों को क्रूर गोलियों से निदर्यतापूर्वक भून देने वाले जनरल डायर, नादिरशाह, हलाकू, तैमूर लंग, हिटलर, आदि को ज़ालिम और दुष्ट आत्मा कह कर उन को घृणा की दृष्टि से देखना बिलकुल ग़लत है । क्योंकि उस के हुक्म ही से सब कुछ होता है वही

गुनहकार हुआ । क़त्ल करना या कतल किये जाने का हुक्त देना दोनों ही निन्दनीय बातें हैं । इस विचारधारा के तहत तो कोई मुजरिम ही नहीं ठहरता और दुनिया भर की बेशुमार अदालतों में अगणित मुजरिम , अनगिनत दोषी लोगों को भांति भांति की सजायें देना भी अनुचित ही है।

यदि उसके हुक्म ही से सब कुछ हो रहा होता और ऐसा वह जानता भी तो उस ने कयामत से बहुत पहले इतनी बड़ी जन्नत और दोजख क्यों बना कर रख दी होती । जब वह हर कार्य का कर्ता है तो फिर बुरों को नर्क और भलों को स्वर्ग की बात ही क्यों सोचता है । यदि वह हमारी परीक्षा लेता है और तदपश्चात फेल होने वाले को नर्क तथा पास होने वाले को स्वर्ग मिलता है, तो यह बात भी ग़लत है क्योंकि वह "सर्वज्ञ" है । उस को पता है कि कौन डिग जायेगा और कौन डट जायेगा । मैं तो यह कहूँगा कि इन्सान इन्सान की जाचं लेता है, भगवान नहीं ।

अब सवाल उठता है कि वह क्या करता है ? इस का उत्तर स्पष्ट है । उसने हमें पांच कर्मेन्द्रियों से सम्पन्न शरीर में आत्मा सहित मन और बुद्धि देकर यहां छोड़ दिया । यही उस का बेहतरीन कार्य है । बाकी सब कुछ हम करते हैं । ईश्वर में हमारी तरह वासना नहीं है, इस लिये वह कुछ चाहता भी नहीं । उस का प्रसन्न या अप्रसन्न होना भी मनगढन्त बातें हैं । ख़ुशी नाख़ुशी से भी विचार उत्पन्न होते हैं मगर वह "निर्विकार" है । उस के ख़ुश नाख़ुश होने की जो बातें समाज में प्रचलित हैं । वह पूर्व समय में मनीषियों द्वारा बनाई गई कुछ सुक्तियां हैं, जिन का उद्देश्य मानव को सही रास्ते पर बनाये रखने का है । आदमी को जितना ज्ञान और उपदेश अपने अन्दर से मिलता है उतना बाहर से नहीं मिलता है।

प्रत्येक प्राणी के अन्दर दो महान शाक्तियां बुद्धि और मन हमेशा हर घड़ी काम करती रहती हैं । इन्ही का संर्घष और उस का परिणाम हमारे काम आता है और हमारा पथ प्रदर्शन करता है । इन्ही दोनों शक्तियों को शैतान और फ़रिश्ते की संज्ञा भी दी जा सकती है, कवि या लेखक

का कर्तव्य जगत के वास्तविक सत्य का यर्थात चित्रण और प्रकाशन है। मैं इसी लिये अपने जीवन के अनुभव को लिखना अधिक मुनासिब समझूंगा क्योंकि इस में असत्य की कोई गुंजाइश नहीं हो सकती और प्रत्येक प्राणी अपने अपने जीवन में ऐसी या इस से मिलती जुलती घटनाओं को सत्य की तुला पर तोल सकता है ।

एक बार मैं हैरो आन दा हिल'' से बस द्वारा अपने एक भारतीय मित्र को हीथरो से (इंगलैण्ड का प्रसिद्ध हवाई अड्डा) रिसीव करने गया। सफर पन्द्रह मील लम्बा था । वहां किलोमीटर नहीं चलते हैं । बीच रास्ते में एक बस स्टेशन से आग के शोले सी एक स्मार्ट युवती मेरे सामने वाली सीट पर आकर बैठ गई । चंचला वही अंगरेजी पोशाक मिनिस्कर्ट पहने हुये थी । कभी कभी बस के झटके से उस की आपस में सटी सुडौल सांचे में ढली हुई सी जांघायें एक दूसरी से इतनी अलग हो जाती थीं कि उस का जांघिया तक दिखाई दे जाता था । जिस आदमी ने भारत में ग़ैर औरत की पिन्डलियां भी नहीं देखी हों, उसा का इस अर्धनग्न गौरर्वण शोले सा शरीर देखकर क्या हाल होगा ? समझने ही से सम्बन्ध रखता है ।

मैं कभी उसे कन्खीयों से देखता, कभी नज़र बचाकर निहारता, कभी बस के झटके के बहाने सिर झुकाकर उस के शरीर का जायज़ा लेता । उस को एहसास भी नहीं था कि उस का कितना शरीर नांगा दिखाई दे रहा था वह इस तरह रहने की अभ्यस्त हो जाने के कारण निश्चिन्त थी, तभी तो उघड़े हुये आंगों को भारतीय नारी की भांति बार बार ढकने की कोशिश भी नहीं करती थी । मेरे मन में बड़ा ज्वार भाटा उठ रहा था । उस समय दिन में दो शक्तियों में बराबर संघर्ष चल रहा था । एक शक्ति कहती थी खूब देख, जी भर कर देख

नूर उस का, ज़हूर उस का
जो न देखे, कुसूर ढल का ।।

दूसरी कहती थी, तुझे देखने वाले क्या कहेंगे , इस प्रकार देखना

असभ्यता का घोतक है । बुरी बात है । बदतमीज़ी है । बदअख़्लाक़ी है । **कुचरित्रवान** होना है।

हसीन शै को ज़रूर देखो ।
ख़ुदा का हुस्न-ए-ज़हूर देखो ।।
नज़र उठाने से क़ब्ल लेकिन ।
नज़र का अपनी शऊर देखो ।।

इस प्रकार पहली शक्ति से प्रेरित मन की हार हुई और दूसरी शक्ति आत्मा से प्रेरित बुद्धि की जीत हुई । मैं जब तक इंग्लैण्ड में रहा दूसरी ही शक्ति की जीत होती रही । भारत ही नहीं, यह क्रिया, प्रतिक्रिया सम्पूर्ण विश्व भर में होती रहती है । ऐसा मेरा विश्वास है । आत्मा परमात्मा का अन्श होने के नाते वह कभी बुरा नही सोचती और बुद्धि को वही प्रेरित करती है । हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना होने के कारण वासनाओं में लिप्त रहता है, इसी लिये चन्चल मन चूंकि वह शरीर से प्रेरित होता है, बुराई ही की तरफ़ भागता है । बुद्धि की रस्सियां चचंल घोड़े के समान मन को रोके रहती हैं, जो पाप से बचाती हैं और समाज में शान्ति एवं स्थिरता बनाये रखती हैं । धार्मिक आदर्श, गुरू उपदेश, और धार्मिक कहानियां भावुक और कामुक मन को नियांत्रित करने में सहयोग देते हैं। लेकिन यह सब श्रद्धा के विषय हैं । जिन के मन में भगवान के प्रति श्रद्धा और विश्वास नहीं होगा वह किसी की कुछ नहीं सुनेगा और पाप कर वैठेगा । "विश्वास फलदायकम्" गीता में सही कहा है । इसलिये इन्सान को आस्तिक बना रहना परमावश्यक है । यही सब पापों को दूर करने का मूल मन्त्र है ।

2

देवता

आधुनिक युग तर्क और विज्ञान का युग है । वह प्रत्येक दावे का प्रमाण चाहता है। विज्ञान उन घटनाओं को यर्थाथ मानने से इन्कार करता है जो प्रयोगों द्वारा आम सिद्धान्त के रूप में प्रतिपादित नहीं होता । जो कुछ ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्राप्त हो सके वही सत्य है । बाक़ी सब अप्रमाणित कल्पना मात्र ही है ।

सन्सार की सभी प्राचीन सभ्यातायें जैसे आयर लैण्ड की "सेल्टजन", रूस की "सिथियन", अमरीका की "नोर्स", माया, ओल्मेक, टालटेक, इंका, नाज्का, अज्टेक," साइबेरिया की सौरामाट", फारस की "कुर्द", भेजी, जरदोस्ती, गेरही," ईस्टर की "पोलिनेसियन", इंगलैण्ड की "ड्रइड," मैक्सीको की "नोमेडिक, चिचिमेक, मिय्तो", एशिया की "सूमेरी", अफ़्रीक़ा की "नीग्राइड", शाम की "द्रूज", चीन की "तूङ्, मन्चू", जिन नैसर्गिक (क़ुदरती) शक्तियों से प्रभावित होती थी उनका कोई न कोई नाम और काल्पनिक रूप भी अवश्य दे देती थी । देवताओं का अविर्भाव यहीं से हेता है । बहुत सी चीजें तो ऐसी होती हैं जिन क़ा कोई आस्तित्व ही नहीं होता लेकिन उनका भी कोई नाम रख लिया जाता है । जैसे धर्ती और आकाश, कहीं नहीं मिलते लेकिन मिलते नजर आने के कारण क्षिजित नाम से पुकारे जाते हैं, रेलवे लाइनें भी बहुत दूर जाकर मिलती नज़र आती हैं लेकिन वास्तव में मिलती कहीं नहीं हैं । इस का भी कुछ नाम रखिये,

इन्द्रधनुष में पानी की बूंदों पर विभिन्न कोणों से प्रकाश किरणों के पड़ने से सात रंग दिखाई देते हैं । वास्तव उनका कोई आस्तित्व नहीं होता है। नामकरण में मानव जन्म से बहुत तेज़ रहा है एक बार मैं विलारी क़स्बे में एक हलवाई की दुकान से जलेबी लेने गया । मैं कुछ सवेरी पहुँच गया था । जलेबी अक्सर दूध के साथ सवेरे के समय ही खाई जाती है । जब मैं पहुँचा तो वह पहला ही घान उतार रहा था । उस ने जलेबियों का पहला थाल उतार कर ज्यों ही थाल में डाला फौरन एक जलेबी भट्टी में डाल दी । मैने उससे पहिले यह काम कभी नहीं देखा था । इसलिये हलवाई से इस आहुति का कारण पूछा तो वह बोला "सब से पहिले अग्नि देवता को जिमाना चाहिये" । मैनें दूसरा सवाल दाग़ा "आप ने भट्टी कैसे सुलगाई थी "? यह सुनकर पहिले तो उसने मेरी तरफ इस अन्दाज़ से देखा जैसे कि उस की नज़र में मैं कोई बेवकूफ़ था, शायद मुझे वह इस बचकाने प्रश्न पर फटकार भी सकता था लेकिन तभी उसने मुस्करा कर कहना शुरू किया (जैसे किसान दूध देने वाले पशु को लात मार कर भी उस को डांटता पीटता नहीं है ठीक उसी प्रकार उसने अपने ग्राहक से बिगाड़ी नही) "भट्टी में लगे इंधन पर मिट्टी का तेल छिड़का और दिया सलाई की जलती तीली लगा दी "। मैंने पहिले ही सोच रखा था कि वह ऐसे ही कहेगा मैंने फिर सवाल उछाला " यह तो आप ने पैदा की है तो यह अग्नि देवता केसे हो गई ! यह सुनकर उसको टेलीफ़ोन के तार छूने जैसा झटका लगा, पलभर को विवेक ने उसे चौंकाया । शायद उसके मन ने उससे कहा भी हो कि इस पौराणिक विचारधारा को अन्धविश्वास से सहेजने में एक जलेबी रोज़ बेकार जाती है । इस प्रकार एक महीने में एक किलो से अधिक जलेबी आग में स्वाह हो जाती है । यदि यह किसी ग़रीब को यूँ ही दे दी जाये तो उसका पेट भी भरे और गोद भर भर कर आशीष भी दे ।मगर वाप दादा के जमाने से यूँ ही चली आ रही यह रस्म उस को तर्क से काम लेने से रोके रही और वह मुस्कराके चुपचाप जलेबी तोलने में व्यस्त हो गया । कारोबारी आदमी को इन बातों से क्या मतलब ।

मैं घर तक सोचता रहा कि इस देश का क्या होगा जहां नदियों में सिक्के फेंके जाते हैं । बन्दरों को हनुमान का [illegible] चने चबाये

जाते हैं । महाविनाशी चूहों को गणेश जी की सवारी मान कर बख़्श दिया जाता है । धार्मिक भावना से च्यूंटियों को जिमाया जाता है । नागों को दूध पिलाया जाता है । फ़स्लों को रोंधने वाली नील गायों को क्षमा दान दी जाती है । पीपल और बड़गद की पूजा की जाती है । पत्थर के टुकड़ों (शिवलिंग) पर घी और गुड़ चढ़ाया जाता है । बूढ़े मां बाप को दो वक़्त रोटी भी नहीं दी जाती । दुल्हनों को कम दहेज के चक्कर में मिट्टी का तेल छिड़क कर जला दिया जाता है । इतने दयावान धार्मिक लोग इतने क्रूर और अत्याचारी कैसे हो जाते हैं । सोचते सोचते मैं घर आ गया।

भांति भांति के अनुभवों ने मुझे इस नतीजे पर पहुँचा दिया कि देवी देवताओं के आस्तित्व पर शक ही नहीं करने लगा बल्कि उनको इन्सान का पैदा करा भी मानने लगा ।

भारत में 23 राग और 23 रागनियां प्रचलित हैं । प्रत्येक की अलग अलग काल्पनिक शक्लें भी हैं । जैसे राग खम्माज की सूरत राविन्दर नाथ ठाकुर की सूरत से मिलती जुलती मानी जाती है ।

बेबीलोन में जो अब इराक़ में है किसी युग में वहां नदी के बहते हुये पानी में उठने वाली तरंगों को भी देवता माना जाता था, जिस के द्वारा सच्चा इन्साफ़ कराया जाता था । जब राजा किसी मुजरिम का जुर्म साबित करने में विवश हो जाता या गवाहों पर शक हो जाता था, तो मुजरिम को नदी में फेंक दिया जाता था । यदि वह पार लग गया जब तो उसे निर्दोष समझा जाता और यदि वह डूब गया तो मुजरिम मान लिया जाता था । राजा का यह इन्साफ़ था और मुर्जरिम की यह सज़ा।

आज वहां इस देवता का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है । जब सत्य सामने आ जाता है तो ऐसा ही होता है । कोई वास्तविक मुजरिम मल्लाह या तैराक सन्देहास्पद स्थिति में नदी में फेंक दिया गया होगा और वह

तैर कर पार लग गया होगा । राजा ने तो इस घटना को जल देवता का चमत्कार समझा होगा, लेकिन जो प्रत्यक्षदर्शी उस को निकट से जानते थे, वे राजा के ख़ौफ से, देवता के झूठे इन्साफ़ और उस के कल्पित आस्तित्व के विरूद्ध कुछ न बोल सके हों, मगर धीरे धीरे इस जल देवता पर से उन्होंने विश्वास हटा लिया हो और इसी प्रकार आम जनता में यह बात फैंलने के बाद सभी ने उस पर से अपनी श्रद्धा और विश्वास की चादर समेट ली हो ।

स्फिनिक्स मि– को एक दानवी देवी है । अमरीका में "माया" जाति के मकानों पर सांप के मुहँ वाले देवता बने होते थे । सीथियन "शामन" देवता की पूजा करते थे जो दवा और पशु का देवता ही नहीं बल्कि भविष्य वक्ता के रूप में भी माना जाता था । भारत का सुयदिवता अफ़्रीक़ा में "रा" के नाम से पूजा जाता था "रा" का अर्थ भी सूर्य ही है । इंका सभ्यता भी सूर्य को देवता मानती थी अेर उस की सारी दासियां भी मानती थी ।

6260 वर्ष ईसा पर्वू केटल हुयुक नगर में सुमेरी सभ्यता के लोग भी "मात्र" देवी को सर्वोच्च्य पूजनीय समझते थे । अफ्रीका के प्राचीन नगर कार्येज के निवासी फोनोशियनों ने भी देवी देवताओं के सामने मानव बलि देकर जहाजी बेड़ा समुद्र में छोड़ा था । कैक्सिीको के तियुतीहुआकान शहर में पंखधारी सर्प देवता का मन्दिर था जहां मानव बलि देने की प्रथा थी। इस सर्प देवता को भारतीय नाग देवता की तरह क्वेटजेटकोटल नाम से पुकारते थे ।आज से 3200 वर्ष पूर्व मैक्सीको की खाड़ी में ओल्मेक सभ्यता भारतीय वरूण देवता की तरह वर्षा के देवता की पूजा किया करती थी और मानव बलि में विश्वास करती थी । शक्ति के वाासी सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र की पूजा करते थे, शुक्र को वे "अश्तर" के नाम से पुकारते थे ।

अरब में मुहम्मद साहिब के समय तक अकेले मक्का शरीफ़ में तीन सौपैसंठ देवता पूजे जाते थे जिन में लात, हवल, मनात और उज़्ज़ा का विशेष स्थान था ।

यूनानियों को तो Pagan यानी धर्म रहित, प्रकृतिवादी समझा जाता था भारतवसियों की तरह उनके भी अनेकों देवी देवता होते थे जिन में मिनर्वा, जेउस, अपोलो, योरोपा, पैर्सेउस, ओडियस, केडेमस, एफ़ोदित, एथेना, क्यूपिड, साइके, ज्यूस, डैफनी, हेरा बहुत प्रसिद्ध थे ।

जापान में हाचीमीन नामक एक युद्ध देवता होता था । आमातोरास सुर्यदिवी थी। भारतीय मारूत देवता की तरह जापानी लोग कामीकाजे को मानते थे, ईजानागी ईजानमी भी प्रसिद्ध देवता थे ।

इस्राइल में देवता हीरोन और देवी अतहिरत पूजनीय समझे जाते थे। मिश्र में, नृत्, गेब, थोत, होरस, सेन, नेपथे और आइसिस की पूजा होती थी।

आयरलेण्ड में एडाइन देवी माननीय थी । कांगों में लूम्का, अफ्रीका में ओगूनू, ओया और ओसचू की पूजा की जाती थी । मैक्सीको में त्याकोल, वितोल, अलोम, कांहोलोम, तेपेड, गुकुमात्य, कवागील, चिराकान, नाना-हुआत्थिन और तेक्कुथिथतेकात्ल प्रसिद्ध देवता थे ।

ईरान में अहुरमज़्द, साइरस और फ्रावेश प्रसिद्ध देवता थे। विश्व भर में ऐसी ही अनेकों जातियां एवं सभ्यताये और भी थीं जो देवी देवताओं को मानती थीं । जहां तक मैं समझता हूँ हिन्दू लोग इस दौड़ में सभी से बाजी मार गये हैं । इन के यहां देवी देवताओं की शुमारी करोड़ों तक पहुंच गई है । हर घर का एक अलग देवता होता है जिसको गृहवत के नाम से पुकारा जाता है ।

वास्तविकता की आंख से देखा जाये तो इन देवी देवताओं में कुछ भी नहीं है। न कभी यह मानव कल्याण में आगे बढ़े हैं और न कभी इस के आड़े वक़्त में काम ही आये हैं । एक पत्थर के टुकड़े पर छैनी हथोड़े से तराशे गये मूर्तिकार के आइडिये वाली यह सुन्दर मूर्ति इन्सान के दिल बहलाने के अतिरिक्त और आ भी किस काम में सकती है । इन देवताओं और मूर्तियों के आसरे पर दुख हल्का हो न हो लेकिन दुख

के समय की सीमा अवश्य आसानी से लांघ ली जाती है । कोई भी सहारा न हो तो दुख मुसीबत का समय बड़ा और कष्टकारक प्रतीत होता है । डूबते को तिनके का सहारा बचा थोड़े ही देता है हसीन सहारे कष्ट और मौत को आसान बना देते हैं । इन्सान की नेचर है कि वह कायरता वश आश्वासन, मददगार और सहारे (सपोर्टर) तलाश करता है ।

जैसे बहुत ज़ोर की बारिश जब कई दिन तक बराबर होती रहती है तो अधिकान्श किसान परेशान हो जाते हैं और एक दूसरे से कहने लगते हैं "भगवान को क्या मन्ज़ूर है अब तो दुखी हो गये हैं । अब कच्चे घर गिरने शुरू हो जायेंगे । जानवरों को चारा तक नहीं लापाते" । इसी प्रकार के चन्द प्रश्न हर एक दूसरे से कहने लगता है । ऐसा कहते फिरने से कोई कुछ कर थोड़े ही पाता है । बस समय का सर्प सरकता रहता हे नगरों में दंगा फ़िसाद होने पर भी लोग बाग आपस में एक दूसरे की बुराईयां तो निकालते रहते हैं लेकिन उन हालात का मुक़ाबिला करने के लिये क़दम कोई नहीं उठाता है ।

ठीक इसी प्रकार देवताओं के खोखले अस्तित्व पर विश्वास करने वाले भोले भाले नासमझे लोग सृजनात्मक मूल्यवाान समय का गला घोंट कर भूत के दमन में फेंक देते हैं । नाकामयाब होने पर वही अपनी मूर्खता और देवता या देवी को कुछ न कह कर भाग्य पर देषारोपण करने लगते हैं ।

काम जब बिगड़ा तो शिकवा कर दिया तक़दीर का ।
बन गया तो शोर करते फिरते हैं तदबीर का ।।

(इंक़लाब)

सच तो यह है कि सड़कों के किनारे दूर तक खड़े ख़ामोश पेड़ों की छाया जितनी हमारे काम आती है, ये देवता जीवन के पथ पर इतने भी काम नहीं आते । यदि इन के माध्यम से किसी का कोई काम सिद्ध हुआ

भी है तो वह अटूट श्रद्धा और विश्वास का परिणाम होता है, चमत्कार होता है जिस में कि दैवी शक्तियां जलवागर होती हैं । सहायक होती हैं? ईश्वर कृपा जिन का मूल स्रोत होती है । यदि वही प्रगाढ़ विश्वास जो मनोकामना पूर्ण किये जाने के लिये किसी देवी देवता पर बलिदान किया गया था, ईश्वर पर किया जाये तो भगवान उस काम को कहीं जल्दी और सुगमतापूर्वक सिद्ध कर सकता है ।

इस सारहीन कारण का अन्त करने वाले महान विचारक सुक़रात, दया नन्द और हत्रत मुहम्मद तीनों ही मूर्तिपूजकों की सन्तान थे । उन्होंने लीक से हट कर आवाज़ उठाई । मूर्तिपूजा और उसकी निरर्थकता के विरूद्ध बोले । बात भी ठीक है । एक लड़का कुछ चाहता है तो बाप से स्वयं क्यों नहीं कहता, पड़ोसियों से सिफारिश क्यों कराता है । काम तो पिता ही को करना होता है । क्या डायरेक्ट और इन्डायरेक्त में कोई अन्तर नहीं होता है ।

कभी कभी संयोग (हुस्न-ए-इत्तिफ़ाक़) वश होने वाले अदभुत कार्य भी देवों के चमत्कार मान लिये जाते हैं । जैसे किसी को छींक आजाये और ठीक उसी समय किसी पथिक को ठोकर लग जाये, तो वह, उस छींकने के कुप्रभाव से सम्बन्धित कर दी जाती है । यह कोई नहीं सोचता कि राहगीर छींकने वाले की आवाज़ सुन कर उधर देखने लगा था । क्योंकि उस का मन किसी सम्भावित भावी दुर्घटना से शंकित और भयभीत हो गया था और उसी समय रास्ते में उभरी हुई ईंट का रोड़ा उस को दिखाई नहीं दे सका और ठोकर लग गई । ठोकर खाने के बाद पथिक को दृढ़ विश्वास हो जाता है कि छींकने का कुप्रभाव होता अवश्य है । अपने अनुभव के आधार पर वह इसी दक़ियानूसी विचारधारा की पब्लिसिटी करता है। भोले भाले लोग उसी की बात को सही मान लेते हैं ? कोई तर्क और बुद्धि से काम लेकर यह नहीं समझाता कि बेज़ुबान ठोकरें राह चलते समय राहगीर को केवल अपने मार्ग और लक्ष्य की और ध्यान रखने का संकेत करती हैं ।

हर इक ठोकर मुसाफ़िर के लिये ख़ामोश रहबर है ।

एक बार मंगोलों ने 1274 में 450 जहाजों के एक बेड़े से 30000 हजार सैनिकों द्वारा जापान पर आक्रमण कर दिया । एक भयंकर तूफ़ान ने उन की सम्पूर्ण सेना को तितर बितर कर दिया और तेरह हज़ार सैनिकों को अपनी जान से हाथ धोने पड़े । इस घटना से उतसाहित होकर जापनियों ने उसी साल मंगोलों के एक दूत की हत्या कर दी । अतः 1281 में फिर डेढ़ लाख मंगोल सैनिकों से लदे जहाजों के दो बेड़े जापान पर टूट पड़े। पाँच दिन तक घमासान युद्ध हुआ, अब की बार फिर पहले की भांति तेज़ तूफान ने मंगोल सैनिकों को लील लिया । जापान में ज्वालामुखी विस्फोट और तेज हवायें आये दिन की बात हैं ? लेकिन वहां एक देवता है "कामीकाजे" (दैवी हवायें) । इन संयोगवश या हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से हुई घटनाओं को जापानियों ने कामीकाजे का प्रसाद समझा, लेकिन उस समय यह देवता कहां सो गया थ जब दस मार्च 1945 को 130वी 29 विमानों ने तोक्यो में आग लगाने वाले वमों द्वारा एक लाख पूल से बाल बच्चों बेख़ता बड़े बूढ़ों को निर्दयता से भून डाला था । 6 अगस्त 1945 कोअभी यह आग ठण्डी भी नहीं हुई थी कि हीरोशिमा में अणुबम विस्फोट से साठ हज़ार नर नारियों को और 9 अगस्त 1945 को नागासाकी में चालीस हजार नर नारियों को आन की आन में पिघला कर रख दिया था ।

सत्य बोलना या सत्य के हक़ में क़लम उठाना अच्छा तो है ही हिम्मत का काम भी है । छटी सदी ईसा पूर्व एक चीनी राजमहल के रक्षक ने भारतीय प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी के कातिल बेअन्त सिंहं की तरह राजकुमार की हत्या कर दी । सरकारी इतिहासकार ने इस घटना को अशुभ कर्मों की सूची में रखा । इस पर नाराज़ होकर उस सेनानी ने सत्यनिष्ठ इतिहासकार का वध कर दिया । इस के बाद उसी स्वर्गीय इतिहासकार के भाई ने पूर्वोक्त कथन को दुहराया । उस को भी मृत्युदण्ड दिया गया । इतने पर भी सत्यानिष्ठता का भाव निर्बल नहीं हुआ बल्कि उस का तीसरा भाई राजा के सामने पहुँचा और कहा, सत्य के लिये उस के भी प्राण ले लिये जायें । यह सुनकर अन्ययी नरेश का ह्दय पिघल

गया और उस को सच्चा इतिहास लिखने की अनुमति मिल गई इसलिये यहां मैं भी दूसरों की मिसाले न दे कर अपनी स्वयं की व्यवहारिक अनुभूतियों का ही सहारा लेनाा चाहता हूँ ।

एक दिन एक बूढ़ा भिखारी शेरपुर ग्राम के श्री नून से बोला "तुम बड़े चालाक और काइंयां आदमी हो, कुछ मुझे भी सुख से रहने की जुगत बता दो । अब में बूढ़ा हो चुका हूँ । दर दर घूमा फिरा नहीं जाता । "श्री नून को बूढ़े फकीर की हालत पर तरस आ गया और बहुत सोच विचार के बाद उस के कान में निकट से कुछ कहा । वह फौरन तड़प कर बोला । " यह तो बहुत बड़ा झूट है, फ़रेब है, अल्लाह मियां को जुल देना है । पेट के लिये ईमान को बेचना तो कहीं भी अच्छा नहीं समझा जाता मेरे भाई ।"

फ़क़ीर की बात पर कुछ मुस्करा कर श्री नून ने कहना शुरू किया। इस दुनिया में सब कुछ चलता है । व्यापारी सौ बोरी दाल में एक बोरी उसी रंग की कंकड़ें मिला देते हैं । ज़ीरे में सींकों की बाली के बीज, काली मिर्चों में पपीते के बीज, डालडे में चर्बी मिला रहे हैं । टैक्स से बचने के लिये बजाज थानों के टुकडे करके दुकान में कटपीस बता कर बेच रहे हैं । दूध में पानी, सोने में पीतल, चाँदी में गिलट, रेल्बे टिकटों का रिसोलिंग, मूर्तियों की चोरी, युवतियों की बिक्री, किडनेप, चोरी, डकैती, रिश्वत क्या कुछ नहीं हो रहा है यहां । छोटे से लेकर बड़े से बड़ा य्हां पेट और लालच के चक्की में ईमान धर्म और अख़लाक़ को उठाकर ताक पर रख देता है। किसी के राज पर हमला करके उस को हथिया लेना वीरता है या बेईमानी ? बिनाझूट और मक्कारी के यहां कोई व्यापार नहीं चलता है । सच बोलने लगे तो इनकम टैक्स के कर्मचारी उधेड़ के खा जायेंगे । धर्म ईमान ही की बातें करते रहे तो यूँ ही गलियों में तिनके चुनते फिरंगे । सुख से रहना है तो जो बता रहा हूँ फ़ौरन कर गुज़रो। इन्शा अल्लाह औलाद पुश्त दर पुश्त बैठी मौज उड़ायेगी " । यह सुनकर फ़क़ीर मौन होकर कुछ सोचने लगा, फिर बिना कुछ कहे सुने उठ कर चला गया । कई दिन बाद पावर हाऊस के सामने, सड़क के ठीक किनारे,

पी. डब्लू. डी. की हद में कुछ ईंटें तरतीब से रखी देखी गईं जैसे किसी ने क़ब्र का नमूना बनाया हो । मैंने कुछ दिनों तक तो यह समझा कि किसी मज़ाक़िये ने बिखरी पड़ी ईंटों को इस तरह चुन दिया है । शायद हर पथिक ने इसी प्रकार सोचा हो । कुछ दिनों बाद पी. डब्ल्यू. डी. रोड की मरम्मत करने वाली युनिट के कर्मचरियों ने उन तरतीब से रखी इंटों को उठा कर किसानों के खेतों में फेंक दिया । मगर अगले दिन वह फिर वहीं उसी तरतीब से रखी हुई देखी गई । बिलारी को आते जाते अन्य लोग भी यह तमाशा देखते रहे ।

कुछ महीनों बाद वहां एक बढ़िया क़ब्र भी बन गई और फिर गुम्बद भी बन गया । एमरजेन्सी के ज़माने में सरकारी कर्मचरी सड़कों के किनारे अवैध निर्मित मकानों को गिराते हुये बिलारी बस स्टेशन पर भी आये और सैंकड़ों सालपुराने मन्दिर के अग्र भाग को हटा कर सम्भल की तरफ़ चले गये लेकिन रास्ते ही में पड़ी इस नयी निर्मित क़ब्र को किसी ने छुआ तक नहीं जिसकी न परमिशन थी न नक्शा था । यह घटना मुजाबिर साहिब को वरदान सिद्ध हुई । वह सीना तान कर जगह जगह कहते हुये देखे गये कि पीर साहब की तासीर का करिश्मा था जो किसी ने उधर का रूख तक भी नहीं किया । सुनने वालों को मुजाबिर साहिब की बातों पर विश्वास हो गया। और हर ब्रहस्पतिवार को पहिले से दूने चढावे आने शुरू हो गये। मुजाबर साहिब ने एक शानदार उर्स भी कर डाला और नाम रखा "खामोश मियां का मजार" । बूढ़ा मुजाबिर मर चुका है अब उसका लड़का बैठता है । एक दिन मैंने वहां जाकर एक बुढ़िया से प्रश्न किया कि आप यहां किस लिये मीठा और चादर लेकर आई हैं ? फ़ौरन उस बुढ़िया के साथ अनेकों स्त्रियों ने अपने अपने अनुभव और मुरादों की कामयाबी के वर्णन शुरू कर दिये । मैं चुपचाप सुनता रहा और सोचता रहा कि इस तरतीब से चुने ईंटों के मज़ार से लोगों की मुरादें पूरी होती कैसे हैं? और यदि यह सच नहीं हैं तो यह लोग चादरें चढ़ाने क्यों आते हैं। वास्तव में बात यह थी कि मिसाल के तौर पर किसी बुढ़िया ने दुआ मांगी कि उस के पोता हो जाये तो वह "ख़ामोश मियां" की ज़ियारत करेगी और चादर चढ़ायेगी । लड़का या लड़की कुछ तो होना ही था । संयोगवश हो गया

लड़का, तो बुढ़िया ने ज़ियारत भी की और चादर भी चढ़ाई और अनेक औरतों में "ख़ामोश मियां" के करिश्मे की तारीफ़ भी की जिस से प्रभावित होकर दूसरी औरतों ने भी ऐसा ही किया । यदि मान लिया जाये कि संयोगवश पचास प्रतिशत मुरादें इच्छानुसार पूरी हो गई तो वह मियांकी करामात मान ली जायेगी और पचास प्रतिशत की नाकामयाबी भाग्य का खेल मान लिया जायेगा जिस को भाग्यवादी और अन्धविश्वासी लोग चुपचाप पीकर बैठ जायेंगे। मियां को बुरा नहीं कहेंगे । यानी सफलता देवता के हिस्से में गई और असफलता भाग्य के भाग में आई । तर्क से काम न लेने पर आदमी स्वर्णिम हिरन के पीछे भागता है और राम की सेना को अठासी पदम चौरासी लाख भी मान लेता है जो न तो लंका की ज़मीन पर आ सकती थी और न उस समय से लेकर अब तक कुल दुनिया कीआबादी ही उतनी है ।

प्रसिद्ध अंगरेज़ी नाटककार विलियम शोक्सपियर 23 जूलाई (1564) को पैदा हुये थे तो 23 जूलाई (1616) ही को मृत्यु को प्राप्त हुये थे । यही संयोग की बात यदि उन के द्वारा किसी पत्थर की मूर्ति के सामने मांगी गई होती तो अधिकांश लोग इसे देवता का चमत्कार समझने लगते। इसी प्रकार इस विशाल काय दुनिया से अनेकों अजीब अजीब संयोग की मिसालें दी जा सकती हैं । 1760 में नेपोलियन बोनापार्ट जन्मा था, इस के ठीक एक सौ उन्नीस साल बाद 1889 में हिटलर का जन्म हुआ। नेपोलियन 1804 में शक्तिशाली बना, ठीक 129 वर्ष बाद हिटलर 1933 में शक्तिशाली बना । नेपोलियन बोनापार्ट वेआना में 1809 में जीता था, तो ठीक 129 साल बाद हिटलर 1938 में बेअना में जीता था । नेपोलियन ने 1812 में रूस पर आक्रमण किया था, ठीक 129 सााल बाद हिटलर ने 1941 में रूस पर आक्रमण किया था । नेपोलियन 1818 में हार गया, तो 129 साल बाद 1945 में हिटलर हार गया । दोनों के एक जैसे कार्यों में 129 साल ही का अन्तर रहा है । यह संयोग की बात है जो दैविक चमत्कार सा लगता है । कनेडी को गोली, सुक़रात को विष, मन्सूर को फांसी, ईसा को सूली दयानन्द को शीशा शुक्रवार ही की घटनायें है । शुक्र का दिन कितनी ही महान विभूतियों को निगल गया । यह भी

संयोग ही की बात है, दैवी चमम्कार नहीं ।

एक बार फ़ोलोशियनों ने एक नौजवान की बलि देवता पर चढ़ा कर लाल सागर में अफ़्रीक़ा का चक्कर काटने के लिये दस जहाज़ उतार दिये । तेज़ तूफ़ानों ने कुछ दूर चलकर उन को तित्तर बित्तर कर दिया और बारह नर नारी विछड़ कर नई द्वीप पर जा पहुँचे । यह नया तट था **an island of iron** जो ब्राज़ील में स्थित है । एक नवयुवक की बलि भी देवी को दी और व्यर्थ गई ।

अगणित मन्दिरों को विदेशी आक्रमणकारियों ने तोड़ फोड़ कर तहस नहस कर दिया और उन मन्दिरों में स्थापित देवी देवताओं की मूतियों को पौरों तले रोकने के लिये नवनिर्मित महलों, मस्जिदों और मक़बरों की सीढ़ियों पर बिछा दिया गया । अगर उन देवी देवताओं में कोई शक्ति होती तो विध्वंस के हाथ न रोक लेती । फूल की सुगन्धि फूल के साथ ही रहती है चाहे वह डाली पर रहे, चाहे हार में गुंधे, चाहे कहीं अन्य स्थान पर रहे । इसी प्रकार देवी देवता का अपना प्रभाव भी मूर्ति के साथ सम्बन्धित रहना चाहिये चाहे वह मूर्ति कहीं भी क्यों न हो । जो देवी देवता अपनी सुरक्षा में सक्ष्म नहीं हैं वह हमारी रक्षा क्या कर सकते हैं । कहते हैं कि एक देवता के आदेश से "कोन्डिन्या" नामक एक ब्राहाण कम्बोडिया के तट पर उतरा उसने वहां की रानी को जादुई बाण चला कर अपने वश में कर लिया तथा शादी भी कर ली । दोनों से सन्तानें भी पैदा हुईं । जो फुनाना वंश के पूर्वज बने । खमेरों के भी यही पूर्वज थे । 1500 वर्ष तक फुनाना वन्श का राज चलता रहा । इस युग में अनेकों शानदार महलों और मन्दिरों का निर्माण हुआ । यह लोग भी देवी देवताओं की पूजा करते थे । 550 ईस्वी में जब कम्बूजा लोगों ने फुनाना राजधानी को हमला करके जीत लिया तो किसी देवी देवता ने उनका साथ नहीं दिया ।

कम्बोज राजा भी ब्रह्मा विष्णु, महेश आदि हिन्दु देवी देवताओं की पूजा किया करते थे । 18वीं सदी में जावा के राजा ने हमला कर के कम्बोज

को हरा दिया और उसका सिर काट लिया । किसी भी आराध्य ने आराधकों की रक्षा नहीं की । कोई भी देवता उनके आड़े समय काम नहीं आया ।

वास्तव में बात यह है कि देवी देवताओं का सृजन एक पवित्र सोद्देश्य कल्पना के आधार पर किया गया था । यह किसी शक्ति विशेष का, प्रस्तुतीकरण नहीं है न किसी अस्तित्व की रूप रेखा है ।ईश्वर साक्षात्कार और उसकी उपासना को सफल बनाने के लिये साधारण बुद्धि वाले व्यवसाय में व्यस्त और गृहस्त लोगों के लिये जल्दी एकाग्रचित होने का यह आसान तरीक़ा धार्मिक मनीषियों ने खोजा था । यह एक अच्छा आइडिया था । छोटे बच्चों को भी अक्षर बोध कराने के लिये अक्षर की ध्वनि से मिलती जुलती और बाल बुद्धि परिचित चीज़ों का सहारा लिया जाता है । जैसे "अ" से अनार, "आ" से आम । अ से अख़रोट और अमलतास भी बनता है । मगर इन से बच्चे परिचित नही होते हैं। यही आइडिया मूर्ति के द्वारा चित्र को शांत और एकाग्र कर के ईश्वर में लीन करने का था लेकिन ख़ूबसूरत मूर्तियों के ख़ूबसूरत उभरे हुये अंग पुजारी के मन को शान्त और एकाग्र करने के बजाये अस्थिर और अशान्त बना देते हैं । वह ईश्वर पूजा में लीन होने के बजाय उद्वेलित और विक्षिप्त हो जाता है । वास्तविक आराध्य को भूल जाता है ।

आर्य जाति के मनीषियों ने मूर्ति निर्माण और चार वर्णों का विभाजन , यह दो भूलें इतनी भयंकर की हैं कि इन से उन्नति के स्थान पर अवनति ही हुई है । इनसे छुटकारा पाना भी असम्भव प्रतीत होता है । और इन से छुटकारा पाये बिना "सुखमय" "सुरक्षित", और "सशक्त " जीवन जीना भी सम्भव नहीं है ।

कोई प्रेमी प्रेमिका की याद में इतना लीन जो जाता है कि वह आस पास की चीज़ों से भी बेख़बर हो जाता है । ऐसी ही लगन यदि हम ईश्वर से लगा लें तो हमें मूर्तियों के सहयोग की नितान्त भी आवश्यकता नहीं रहेगी । प्रेमी के प्रेम में तल्लीन होने के लिये श्रद्धा और लगन (इश्क़)

से बढ़ कर दूसरा कोई साधन नहीं हो सकता। तरह तरह की मूतियों से सजे मन्दिर और पूजागृह देखने में देवालय, संग्रहालय और अजायबघर से लगते हैं । वे उपासना गृह कम और मनोरंजन स्थल अधिक लगते हैं।

किसी ज़माने में इन पूजागृहों और उपासनास्थलों से बैंकों का काम लिया जाता था । पुजारी लोग भगवतभक्त न होकर सम्पत्ति रक्षक होते थे । महमूद ग़ज़नवी के भारत पर सत्रह आक्रमण मन्दिरों में शताब्दियों से संचित अथाह निधि से प्रेरित होकर ही हुये थे । सौर्राष्ट का प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर जो कठियावाढ़ के समुद्रतट पर स्थित है अपार सम्पत्ति से भरा पड़ा था । 1023 ईस्वी में जब महमूद ग़ज़नवी ने ने इस की मूर्तियों को तोड़ा तो उसकी आंखें चौधिया गईं । साठ ऊंटों पर सोना चांदी हीरे जवाहरात लाद कर ग़ज़नी ले गया था । वेदों में कहा गया है कि लक्ष्मी (धन) गेन्द की तरह गोल होती है । वह कहीं ठहरती नहीं है इसलिये उस को ख़र्च करना चाहिये । बात सही है । यही हुआ । बेशुमार मन्दिरों को तोड़े जाने के पीछे एक राज़ यह भी था । 1294 ईस्वी में अलाऊद्दीन खिलजी ने शंकर देव को हरा कर छै सौ मन सोना, सात मन मोती, दो मन हीरा, पन्ना, लाल पुखराज आदि एक हजार मन चाँदी, चार हज़ार रेशम के थान और अन्य असंख्य बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त की थी । ऐसी अनेकों मिसालें भारतीय लक्ष्मी देवी की इतिहास में भरी पड़ी हैं ? जो हमारी होकर भी हमारी नहीं हुई ।

देवी देवताओं पर विश्वास रखने वाले सज्जन स्वयं विचारें कि देवी देवता इन्सान के आड़े दक्त में कितने काम आये हैं ? इतिहास गवाह है कि इन के सहारे पर रहने वाले लोग अपना सर्वस्व खो बैठते हैं । भगवान, बल, और वुद्धि इन तीन के अतिरिक्त इन्सान का कोई सच्चा ईमानदार मददगार नहीं है और न कभी हो सकता है ।

3

एकाग्रता

एकाग्रता - यकसूईयत या सेन्टराइज़ेशन एक ही लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने को कहते हैं । एक ही विषय में आसक्ति के लिये रज ओर तप के विक्षेप रूक जाना अति आवश्यक हैं । परमात्मा और प्रकृति ने सभी जीवात्माओं कको अभूतपूर्व शक्तिया प्रदान की हैं, जिन के द्वारा मनुष्य तमाम सान्सारिक वैभव और सम्पदा प्राप्त कर सकता है । जिस प्रकार पृथ्वी में कोयला, शोरा, गन्धक हर जगह बिखरे पड़े हैं, परन्तु उनका मिश्रण किये बिनाा बारूद नहीं बन सकती । एक महान शक्ति सन्सार के प्रत्येक अणु में समाई हुई है, परन्तु जब तक उन के द्वारा अणुबम के रूप में योजित नहीं किया गया तब तक उस की महत्ता किसी ने नहीं मानी ।

एकाग्रता महान शक्ति की जन्मदाता है । इसी के बल पर इन्सान अनेकों चमत्कार दिखा सकता है, ये मानव जीवन का विशेष अंग है और सफलताओं की कुन्जी है । हिन्दु धर्म का तमाम योग शास्त्र और दर्शन शास्त्र इसी की ओर कमर झुकाये खड़ा है । लेकिन यह बड़े परिश्रम, प्रयास और अभ्यास के बाद प्राप्त होती है क्योंकि मन बहुत चन्चल होता है। यह जागते में तो क्या सोते समय भी स्थिर और शान्त नहीं रहता। इस को स्थिर और शान्त करने के लिये ऋषि, मुनियों ने योग साधाना का तरीक़ा खोजा है । योग सौ से भी ऊपर हैं जिन में ख़ास ख़ास निम्न हैं ।

राजयोग – हठयोग – ज्ञानयोग – कर्मयोग – शक्तियोग – जय योग – लय योग – मन्त्र योग – शब्द योग – प्रमाण योग – हन्स योग – तन्त्र योग – स्वर योग – ध्यान योग – मृगयोग – शिवयोग – पशुपति योग – प्रेम योग - अनाशक्ति योग – समाधी योग – वहत योग – तारक योग – नामर्कीतन योग – पुरूषोत्तम योग – प्रकृतियोग – भावयोग – पुरूषयोग – अभावयोग - स्पर्श योग – अस्पर्श योग – व्रत योग – सांख्य योग – पूर्ण योग – कुन्डलिनी योग – सुसुप्तियोग – स्वप्न योग – इच्छा योग – मानस योग – अंकार योग – ज्ञानोन्दिय योग – कर्मी न्द्रय योग – कबीर योग – स्वामी नारायण योग – बौधमत योग – जैनमत योग – पार्सीमत योग – ईसाईमत योग आदि ।

योग दर्शन में जहां आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान को योग का मुख्य अंग माना जाता है वहां पांच यमों (अहिन्सा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और पांच नियमों (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर, प्रणिधान) को भी योग साधाना का मूल तत्व माना गया है । यमों और नियमों का वृत जिस ने निभा लिया वह स्वयं एक तपस्वी के समान वन जाता है । यह दसों मानवता के चिन्ह हैं और एकाग्रता के प्रथम चरण भी । दुनिया भर के सारे ही धर्म इन अच्छी बातों को स्वीकारते हैं । इन को चाहे धार्मिक दृष्टि से देखा जाये, चाहे सामाजिक दृष्टि से, चाहे मानवता की दृष्टि से देखा जाये, चाहे योग की दृष्टि से, हर हाल में यह बातें माननीय, सर्वग्राह और परमावश्यक हैं ।

(कर्मेन्द्रिय सिद्धिर शुद्धिक्षयातपस (43)

तप के प्रभाव से जब अशुद्धि नष्ट हो जाती है तब शरीर तथा इन्द्रियों की सिद्धि हो जाती है । एकाग्रता के लक्ष्य (मन्ज़िल) तक पहुंचने में मददगार योग के उपरोक्त साथियों के अतिरिक्त और भी अनेकों सहायक है जिन का विवरण यहाँ अप्रसांगगिक है । एकाग्रता के चमत्कारों को दर्शाने के लिये मैं महान योगियों और ऋृषि मुनियों के जीवन का दिग्दर्शन कराना पसन्द नहीं करता । मैं साधारण से साधारण लोगों में एकाग्रतावश होने

वाले चमत्कारों पर प्रकाश डालूँगा ताकि आदमी इस बात को आसानी से समझ सके और इस को महत्त्व दे तथा एकाग्रता प्राप्ति का अभ्यास करने में रूचि उत्पन्न हो । Telepathy टेलीपेथी Clairvoyance अतीन्द्रीय दृष्टि Precognition पूर्वज्ञान तथा Psychol-cinesis सभी एकाग्रता की देन हैं । टेलीपेथी का अर्थ होता है दो व्यक्तियों के बीच सीधा सम्पर्क और उनके विचार पढ़ना । अतीन्द्रीय दृष्टि का अर्थ होता है किसी घटना या वस्तु के बारे में किसी प्रत्यक्ष माध्यम के बिना जान लेना । पूर्व ज्ञाना का अर्थ होता है मौजूदा ज्ञान के बिना मदद लिये हुये भविष्य की घटनाओं को जान लेना । पीके का अर्थ होता है बाह्य पदार्थ में मस्तिष्क की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर पाने की क्षमता रखना, कभी कभी यह शक्तियां पशु पक्षियों में भी पाई जाती है। पशु भावी ख़तरे को और मौसम के परिवर्तन को समझ लेते हैं । तथा अपनी विशिष्ट टेलीपेथी शक्ति से, काफ़ी दूर होते हुये भी अपने मालिक को खोज निकालने की क्षमता रखते हैं । यह सारी शक्तियां कहीं बाहर से नहीं आती हैं बल्कि हमारे ही अन्दर सब कुछ हैं । दसों इन्द्रियों मन मस्तिष्क और आत्मायें यह चमत्कारी शक्ति लुप्त है । आवश्यकता एकाग्रता और केन्द्रीभूत होने की है । जैसे कि मेग्नीफाइंग ग्लास से किरने केन्द्रीभूत होकर आग लगा देती है । एकाग्राचित व्यक्ति के सामने से आदमी निकल जाता है लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं चलता इसी प्रकार एकाग्रचित्त न होकर पढ़ते समय पन्ने के पन्ने पढ़ जाते हैं और यह पता नहीं चलता कि हमने क्या पढ़ा है, क्या इसमें लिखा है । छोटी छोटी बातें विद्यार्थियों को याद नहीं हो पाती जबकि पिक्चर हाल में बैठे दर्शक फिल्म की पूरी कहानी याद कर लेते हैं । कारण एकाग्रता की कमीवेशी ही है । इस से सिद्ध होता है कि आदमी के जीवन में एकाग्रता का बहुत ही बड़ा महत्व है।

कभी-कभी आपने लोगों को कहते हुये सुना होगा "भाई साहब आप की बड़ी उम्र है । मैं आप को अभी अभी याद कर रहा था ।" आप ने इस रहस्य की गहराई में झांक कर नहीं देखा होगा । बात अस्लियत में यह नहीं है बल्कि जिस का ज़िक्र आप उस की अनुपस्थिति में कर रहे थे वह आप को एकाग्रता के साथ, आप के द्वार के निकट आकर इस

तल्लीनता से याद कर रहा था ।" भगवान करे अमुक व्यक्ति कहीं बाहर नहीं गया हो । " घर ही पर मिल जाये " दिल की गहराई से एकाग्रता के साथ निकले यह शब्द वायरलैस की तरंगों की भांति आप के मस्तिष्क से आ टकराये और आप को किसी भी घटना विशेष द्वारा उसे याद करने पर मजबूर कर दिया । यह केवल चमत्कार है एकाग्रता का जिसके लिये आप ने कोई प्रयास या अभ्यास नहीं किया । केवल आप की परमावश्यक मिलन उत्कन्ठा की शिद्दत ने क्षण भर स्वतः ही एकाग्रचित कर दिया । जिससे तमाम इन्द्रियां केन्द्रीभूत हो गईं और आप पर यह प्रभाव पड़ गया । मैं समझता हूँ ऐसे अवसर हर व्यक्ति के जीवन में यदा कदा आया ही करते हैं ।

24 जनवरी 1556 ईस्वी को पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर लाहौर में मरने वाला हुमायूँ जब 1590 में बीमार पड़ा तो ज्योतिषियों ने बाबर को राय दी कि शहज़ादे की कुशलता के लिये किसी बहुमूल्य वस्तु का त्याग आवश्यक है । बाबर ने सोचा कि उसको अपने प्राणों से बढ़कर मूल्यवान वस्तु और क्या हो सकती है । उस ने बीमार हुमायूँ की चारपाई के तीन चक्कर लगाये और ईश्वर से प्रार्थना की कि हुमायूँ ठीक हो जाये और उसे के बदले में बाबर के प्राण ले लिये जायें । बाबर हुमायूँ की चारपाई पर स्वयं लेट गया और उसको अपनी चारपाई पर लिटा दिया। 26 दिसम्बर 1530 को बाबर दुनिया से चल बसा और वेटा स्वस्थ हो गया । यह एक ऐतिहासिक घटना है जो सच्ची है और सर्वविदित है। ये केवल एकाग्रता के साथ की गई प्रार्थना का चमत्कार था । बाबर कोई बड़ा साधू सन्त या तपस्वी नहीं था ।

दसों इन्द्रियों को वृतियों के निरोध के बाद केन्द्रीभूत करके, श्रद्धा और विश्वास के साथ अपनी शक्ति को अल्प और त्रुटिपूर्ण समझकर, अपने कर्मों को ईश्वर अर्पण करने का मार्ग अपना कर, सफलता विफलता को उसी पर छोड़ देने से जल्दी ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है । क़ुरान शरीफ़ में कहा गया है कि "आजिज़ी अल्लाह तआला को भी प्यारी है ।" बहुत आसान लगने वाला यह कार्य वास्तव में आसान नहीं होता है ।

एकाग्रता ईश्वर से साक्षात्कार कराने की एक मात्र विशेष विधि है । मुझे इसका अपने जीवन में कई बार अनुभव हुआ है । इस सिलसिले में सुबूत के लिये मैं एक घटना को लिखना ठीक समझता हूँ ।

मैंने अपने भतीजे डा. विश्वास की पढ़ाई का शुरू ही से कुल भार बोझ अपने ही कन्धों पर ले रखा था । यह घटना उन दिनों की है जब यह एस. एम. काॅलेज चन्दौसी में पढ़ते थे और मैं अस्पताल बनवा रहा था कभी कभी पूरे दिन की कमाई खर्च हो जाती थी और मैं ख़ाली हाथ ही घर को लौटता था । गोया 'रोज़ कुंआ खोदना और रोज़ पानी पीना' वाली बात चरितार्थ हो रही थी । एक दिन यह शाम को कालेज से आये और बिना कुछ कहे सुने मेरे पास होते हुये मुन्डिया (एक गांव, मेरा निवास स्थान) चले गये मैं उन दिनों रोज़ वहां शाम को चला जाया करता था। जब विश्वास ने घर पहुँचकर मुझ से 30 रूपयों की मांग की तो मुझे सांप सूंघ गया क्योंकि उस समय मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं थी मगर उस समय शाम का समय था मैंने आश्वासन देकर टाल दिया । मैंने फ़ौरन तीस रूपये न देने की विवशता और परेशानी इन पर प्रकट नहीं की ।

शाम को जब मैं चारपाई पर लेटा तो मन ही मन ईश्वर से बोला "तू अर्न्तयामी है, सर्वज्ञ है मेरे पास कहीं भी तीस रूपये नहीं है अगर मैं कल सुबह को इसे तीस रूपये नहीं दे पाया तो इस के पिता और सौतेली मां यह कभी इतमीनान नहीं करेंगे कि मेरे पास इतने रूपये भी नहीं होंगे। बल्कि वह उल्टा ही सोचेंगे । न जाने किन किन शब्दों का मेरे ख़िलाफ़ प्रयोग किया जायेगा ।" दिन भर का थका मांदा न जाने भगवान से बातें करते करते कब सो गया दिन निकला तो मैंने इन से अस्पताल ही पर पहुँचकर रूपये देने को कहा । मुन्डिया से बिलारी अस्पताल तीन मील दूर था । बेचारा बिना कुछ प्रतिक्रिया किये झोला लिये चला गया । बाद में मैं भी साइकल से रवाना हो गया । मैंने सोचा था कमा कर दे दूँगा मगर उसके चेहरे से यह प्रकट होता था कि वह कहने वाला है "वहाँ जाकर दोगे तो यहां क्यों नहीं दे देते ?" मैंने उस की परेशानी खूब महसूस की मगर मैं विवश था । मेरी तरह अनेकों मां बाप घरेलु समस्याओं से

दो चार होते हैं । मगर औलाद कोई बिरली ही होती है जो मां बाप की वास्तविक स्थिति को समझ सके। समझने से कुछ हासिल भी तो नहीं होता।

जब आधा रास्ता तै हो गया तो मेरे ध्यान में आया कि बिजली घर में बाबू बुद्धा सिंह (एक लाइनमैन थे) पर मेरे कई महीने से तीस रूपये आते हैं । उन्होने कुछ तो सोचा नहीं आज क्यूँ न उनसे तक़ाज़ा किया जाय। ज़रूरत आदमी को दीवाना बना देती है । आज मैं उनसे कहूँगा कि आप के पास नहीं भी हों तो कहीं से लाकर देदें, लेकिन मेरी अदायगी कर दें । मन ही मन तरह तरह के विचार और तरह तरह के डायलाग बकता हुआ चलता रहा मैं बिजली घर से भी आगे निकल गया जबकि वहीं जाना था । एकाग्रता और विचारों में लीन होने की पराकाष्टा दखिये। उसी समय किसी ने मुझे सम्बोधित करके बुलन्द आवाज़ से पुकारा । मैं चौंका और पीछे मुड़कर देखा तो पीछे बिजली घर से बाबू बुद्धा सिंह ही टेर रहे थे, मैंने साइकिल मोड़ी और उनकी तरफ़ चल दिया, अब मैंने सोचा कि सबसे पहिले उन्हीं की बात सुनूंगा । किस परेशानी में हैं । मेरे योग्य कोई सेवा है क्या । तब जाकर अपनी बात सामने रखूँगा । मैं ज्यूँ ही पास पहुँचा वह एक दम बोले "डॉ. साहिब कल वेतन मिली थी अभी अभी सोचा कि आपके कई महीने से चले आ रहे तीस रूपये ही दे दूँ वरना फिर देर हो जायेगी ।" मैंने मुस्कराते हुये सधन्यवाद रूपये लेकर जेब में रख लिये, भगवान को लाख लाख बार शुक्राना भेजा और अस्पताल आकर रूपये विश्वास को देदिये । वह रूपये लेकर मुस्कराते हुये बोला "आपने यह रूपये यहां आकर दिये हैं । अब मुझे रेलगाड़ी से जाना पड़ेगा जिससे मेरा पहिला पीरियड मिस हो जायेगा । अगर आपने यह घर पर ही दे दिये होते तो मैं बिलारी से बस द्वारा सीधा चन्दौसी चला जाता । समय की भी बचत हो जाती ।"

मैंने उस की बात ध्यानपूर्वक सुनी वह बिलकुल ठीक कह रहा था। "हां यह मैंने ग़लती की है " मेरे मुंह से उत्तर में निकला । मैंने उस को पढ.लिया और समझ भी लिया लेकिन वह बेचारा मुझे न पढ़ सका न समझ सका ।

मैने पहली बार एकाग्रता और ईश्वर से प्रार्थना का चमत्कार देखा। इसके बाद मुझे भगवान में और भी अटूट श्रद्धा, प्रगाढ़ विश्वास और असीम आस्था हो गई ।हरेक के दो शरीर होते हैं । एक स्थूल और एक सूक्ष्म (एक लतीफ़ , एक कसीफ़) स्थूल तो सभी को दिखाई देता है सूक्ष्म किसी को दिखाई नहीं देता । इसी की सिद्धि को छाया पुरूष की सिद्धि या हमज़ाद सिद्धि के नाम से पुकारते हैं। इस सिद्धि के बाद मनुष्य में आपार शक्तियां आ जाती हैं । वह कल, आज, और कल की बात बता सकता है । हर एक के मन की बात समझ लेता है और बता सकता है। पल भर में कहीं से भी, कुछ भी ला सकता है हनुमान की तरह आदमी को अपनी शक्ति का बोध नहीं है ।

एकाग्रता कैसे प्राप्त की जाये इसे नियमबद्ध सीखने के लिये मुनिवर पतन्जलि का योग शास्त्र पढ़ना होगा । मन की एकाग्रता अभ्यास से सम्भव है । यदि आदमी स्वयं को ढीला करके शान्तभाव से लेट या बैठ जाये और आांखे बन्द कर अपनी नज़र नाक के अग्र भाग पर केन्द्रित करके कुछ भी न सोचने की चेष्टा करे तो धीरे धीरे एकग्रता आने लगती है।

मैं 1951 में के.जी.के कॉलेज में पढ़ता था और कालेज से एक मील दूर दक्षिण में स्थित कुन्दनपूर ग्राम में रहता था । वहां एक पुतलीघर (कताई बुनाई मिल) है, जिस तक रेलगाड़ी की पटरी पड़ी हुई थी । मगर सड़क नहीं थी । अधिकांश लोग पटरी के किनारे किनारे पगडन्डी पर ही आते जाते थे । एक दिन मैंने उसी के पदचिन्हों पर पैर रख रख कर चलना शुरू कर दिया । इस प्रकार मुझे चलने में परेशानी हुई । डगमगाने लगा, सही ढंग से चलना कठिन हो गया । इस शरारती हरकत ने मेरे दिमाग़ में एक रहस्य को कुरेदा, यानी हम दस फुट चौड़े मार्ग ही पर क्यों न चलें लेकिन चलते समय एक फुट से अधिक स्थान नहीं घेरते लेकिन एक ही फुट चौडे मार्ग पर चलना पड़े तो चलने में कठिनाई होती है। यानी नियमबद्धता के साथ चलना कठिन होता है । इसके बाद मैं रेल पर चलने का अभ्यास करने लगा । थोड़े से फ़ासले पर कई बार पटरी से नीचे गिरा उसी समय किसी ने अन्दर से ताना मारा, सर्कस में लड़कियां

तो एक तार पर साइकिल चला लेती है तू चार इन्च चौड़ी पटरी पर नहीं चल सकता । मैं संभला और दृढ़ संकल्प के साथ सन्तुलन संभाल कर चलने लगा । कई दिन तक इसी ज़िद ने मुझे पहिले से चौगुने फ़ासले तक बिना नीचे गिरे चलने योग्य बना दिया । तफ़रीहन पटरी पर चलने का अभ्यास कई दिन तक जारी रहा । कभी कालेज से आते समय कभी कालेज को जाते समय, पटरी पर अवश्य चलता था । मैंने इस अनुभव से यह सीखा कि मैं रेल से नीचे तभी गिरता था जब नज़र रेल से विचलित हो जाती थी या ध्यान कहीं और चला जाता था । एकाग्रता ने यहां भी काम कर के दिखाया ।सिद्धि देवी देवताओं की ही नहीं होती है । मुसलमान देवी देवताओं को नहीं मानते लेकिन वहां भी लोग सिद्धि या अमल करते हैं । सिद्धि तो विचार (मन्त्र) की होती है मन्त्र के माने विचार के हैं । विचार करने वाले को मन्त्री कहते हैं । राजकाज बिना मन्त्री या मन्त्रणा के नहीं चलते हैं । जब हम किसी आयत या मन्त्र की सिद्धि करते हैं तो मन्त्रानुसार आत्मा सिद्धि हो जाती है । हमारी आत्मा विचारों के अनुसार बन जाती है जिसको देवता की सिद्धि दानव की सिद्धि के नाम से पुकारा जाता है । मिसाल के तौर पर एक क़त्ल करता है, एक लूटता है, एक बलात्कार करता है, एक जेब काटता है, एक धोखा देता है और छल करता है । दूसरा दान करता है । रक्षा करता है, पिआऊ लगवाता है, लंगर चलाता है, धर्मशाल बनवाता है, ग़रीब असहायों की सहायता करता है, हातिम सिफ़त बनता है । यह भांति भांति के विचार उसी मन आत्मा और बुद्धि से सम्बन्ध रखते हैं । जैसा जिस का भाव होता है वैसा ही उसका मन बन जाता है और सूक्ष्म शरीर भी वैसा ही हो जाता है । यदि कर्मों और विचारों का प्रभाव सुक्ष्म शरीर पर नहीं पड़ता तो अच्छी बुरी आत्माओं की बात व्यर्थ हुई । लोग गायत्री मन्त्र की सिद्धि करते हैं । कहते हैं इस का सिद्ध पुरूष बड़ा चमत्कारी और शक्तिशाली हो जाता है ।

ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहीधियो योनः प्रचोदयात ॐ ।

यह गायत्री मन्त्र है । इस का अर्थ है ''वह ईश्वर जो सब ब्रह्माण्ड का बनाने वाला है, सारी ज्योतियों को प्रदान करने वाला है, हर भांति

की प्रसन्नता का दाता है और जिस के पाने की सभी आस करते हैं, उस परमात्मा के स्वरूप को हम धारण करें, वह गिलोकी परमेश्वर हमारी बुद्धि को बुरे कर्मों से हटाकर अच्छे कामों में लगाये "।

जिस मन्त्र को सिद्ध करने से हमें परम शक्तियां प्राप्त होती हैं उसके भाव आपके सामने हैं । इनमें किसी भी देवी देवता का कोई ज़िक्र तक नहीं है केवल ईश्वर से भलाई और स्वास्थ्य की कामना की गई है । कहने का तात्पर्य यह है कि जहां भगवान है वहां सब कुछ है और जहां सत्य है धर्म है वहां भगवान है । जैसे सूर्य की किरनें सूर्य से कितनी ही दूर चली जायें सूर्य से सम्बन्धित रहती हैं इसी प्रकार आत्मा परमात्मा का अन्श है और वह उससे सम्बन्धित रहती है अलग नहीं हो पाती इसीलिये इस की शक्ति और विशेषतायें भी अपार हैं केवल विचारों द्वारा इस का साधन है । तुम जैसा चाहो बन सकते हो । जिस प्रकार बुरी चीज़ से बदबू आती है अच्छी चीज़ से ख़ुशबू आती है लेकिन बू या गन्ध निराकार होती है। देखी नहीं जाती, केवल महसूस की जाती है । इसी प्रकार अच्छे आदमी की आत्मा अच्छी और बुरे की बुरी होती है ।उसी के अनुसार उसे भले और बुरे फल प्राप्त होते हैं । साधक जिस मन्त्र की सिद्धि करता है उस का अर्थ भी नहीं जानता परन्तु एकाग्रता, दृढ़ संकल्प और निर्भय भाव उस की सिद्धि करा देता है कैसे होता है यह सब कुछ ? सवाल बहुत ही आसान है । उत्तर बहुत ही मुश्किल है ।

कोई किसी को गाली देता है तो वह बुरा मान जाता है मारने मरने पर उतर आता है । केवल एक बात थी जो उस के कानों के पर्दे पर टकराई और बुद्धि ने सोची और उसकी यह प्रतिक्रिया हुई, इसी प्रकार प्रशन्सा और अच्छी बातों से आदमी ख़ुश हो जाता है । यह हमारी इन्द्रियों का खेल है, लेकिन यही बातें एकाग्रचित योगी या सुसुप्त व्यक्ति से कही जाती है तो उस पर इन बातों का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता । कभी कभी साधारण से साधारण व्यक्ति को किसी व्यक्तिगत समस्या में इतना व्यस्त और लीन देखा गया है कि वह पास बैठे व्यक्ति की बातें भी नहीं सुन पाता । जब हम कोई पिक्चर देखते हैं तो हम कभी रो पड़ते हैं कभी

हंस पड़ते हैं लेकिन समाज में ऐसी ही अनेकों रात दिन घटने वाली घटनायें हमें इतना प्रभावित नही करतीं कारण है एकाग्रता । पिक्चर हाल में हम सीन के साथ आत्मघात हो जाते हैं और वहां अन्धेरा होता है उसके अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता इसलिये आत्मविभोर हो जाते हैं परन्तु बाहर हमारा ध्यान बटाने वाले, बुलन्द आवाज़ के गाने, हार्न, कारख़ानों के शोर भीड़ का हड़बोंग एकाग्र होने ही नहीं देता इसलिये बेवा विधवा के क्षत विक्षत इकलौते पुत्र को सड़क पर छोड़कर सरासर दुख प्रदर्शित कर आगे बढ़ जाते हैं । एकाग्रता हमें सिद्धि योग बनाती है ।भगवान दुनिया भर की भाषायें जानता है । सबकी प्रार्थनायें सुनता है जबकि उस ने किसी भी विद्यालय में कोई भाषा नहीं पढ़ी है । यह बात तो सर्वमान्य है फिर उस का अंश यह आत्मायें भी मन्त्रों का अर्थ समझती हैं । स्थूल शरीर का ज्ञान सूक्ष्म शरीर के ज्ञान से भिन्न होता है । सिद्धि का डायरेक्ट सम्बन्ध आत्मा से होता है । और आत्मा की शक्ति को वह सब कुछ बोध होता है जो स्थूल को नहीं होता क्राइटन की भविष्यदृष्टा मार्ग्रेट कलन अपने ढाले हुये ढंग से मन की स्पन्दन तरंगों द्वारा पशु, पक्षियों की भावनायें तक समझ लेती हैं । इसी लिये मन्त्र का अर्थ न जानते हुये भी मन्त्र सिद्धि होती है । एकाग्रता से पैदा होने वाली शक्तियां, मन, बुद्धि, आत्मा, इन्द्रियां और परमात्मा इन सब की साइन्स इतनी जटिल है कि कोई भी आसानी से समझ नहीं सकता ।

4

सपना

आदमी के शरीर में दो ही तत्व प्रधान हैं । मन और बुद्धि। इसलिये शरीर और इन्द्रियों से होने वाले कार्य भी दो ही प्रकार के होते हैं । एक मन के द्वारा प्रेरित होकर होने वाले कार्य, एक बुद्धि द्वारा प्रेरित होने वाले कार्य । बुद्धि द्वारा होने वाले कार्य भी मन के माध्यम से इन्द्रियों द्वारा ही सम्पादित होते हैं । बुद्धि मन की दृष्टा है और मन के द्वारा होने वाले तमाम कार्यों की समीक्षा भी करती है ।

मन चूंकि बहुत ही चन्चल है । पारद की भांति पल भर को कहीं भी नहीं ठहरता है और इन्द्रियों से प्रेरित होकर बराबर लौकिक व्यवहार में सामाजिक, सांस्कृतिक, मानवी, शिष्ट और सभ्य नियमों का उल्लंघन करने को लालयित रहता है लेकिन बुद्धि भी पल पल पर उस को टोकती और रोकती रहती है । वह बुरा काम पसन्द नहीं करती क्योंकि वह आत्मा की और आत्मा परमात्मा की दासी है । आम का फल आम के वृक्ष का मूल्यवान प्रतिनिधित्व करता है लेकिन आम के वृक्ष के हर अंग में आम की गन्ध आती रहती है । मन और बुद्धि का संघर्ष, यानी भले बुरे कर्मो की प्रेरणाओं का आपसी झगड़ा मानव जीवन में कभी भी समाप्त नहीं होता। सड़क पर चलते समय, मेले में घूमते हुये, हाट बाजार में फिरते समय, फिल्म देखते वक़्त, नुमाइश में दृश्यावलोकन करते हुये, मन्दिर की झांकियों

में या ब्याह शादी के समय मन की चन्चलता और उसकी वृतियों का यर्थात चित्रण किया जाये तो शायद अपनी बातें भी आप से न पढ़ी जायें। आदमी क्या क्या सोचता है और क्या क्या करना चाहता है । इस वास्तविकता पर प्रकाश डालने से तो अपने अपने दामन में झांक लेना ही अच्छा है ।

एक बार मैं अपने साथी श्री मुकट सिंह और श्री इन्दल सिंह भदौरिया जिला सूचना अधिकारी के साथ "हैरो आन द हिल इग्लैण्ड" स्थित अपने कमरे में एक भारतीय पीतल के बर्तनों के विक्रेता के साथ बैठा उस के बर्तनों के नमूने देख रहा था, जो वह इंग्लैण्ड के मार्केट में दिखा कर आर्डर लेने गया हुआ था । वह तरह तरह के सुन्दर आइटम दिखा रहा था । हम लोग उस के हर नमूने की प्रशन्सा कर रहे थे । मुझे उस का एक कैन्डिल स्टैण्ड बहुत पसन्द आया । जी में आया कि उसको ख़रीद लूँ । फिर किसी ने अन्दर ही से कहा यह भारत वर्ष से यहां और माल का आर्डर लेने के लिये नमूने की चीजें लाया है, यही तूने ख़रीद लिया तो यह दूसरे अंगरेज़ों को कैन्डिल स्टैण्ड कहां से दिखायेगा । हो सकता है यह इस के रूपये लेना भी पसन्द न करे और उदारता या शिष्टाचारवश वैसे ही दे दे या यह भी सोचे कि फ़्री लेने की नियत से ख़रीदने का बहाना बना रहा है वरना भारत के मार्केट में क्या केण्डिल स्टेण्डों की कमी है। मन तनिक बहका था कि बुद्धि ने इतना व्याखयान देकर उसको शान्त भी कर दिया । और समझा भी दिया । लेकिन मन की चन्चलता कुछ देर बाद फिर रंग लाई । वह केण्डिल स्टेण्ड पर मोहित हो चुका था। उसने फिर कुरेदा और कहा कि जब यह सो जायेगा तो इस की अटेची में से, जो कि बिना ताले के ही छोड़ दी गई थी, निकाल कर अपनी अटेची में सरका लिया जाये तो ठीक रहेगा । न कुछ देना पड़ेगा न एहसान होगा । बुद्धि ने फिर अपना रोल अदा किया और मन को टोका यदि वह व्यापारी जिस को तू सोता हुआ समझकर अटेची खोलेगा, उसी समय जाग गया या जागा हुआ हो तो कितनी किरकिरी होगी । इस के बाद मन फिर अपनी योजना में नाकाम रहा और बुद्धि की जीत हुई । यह घटना 27.8.1983 शनिवार की है और आज भी जब याद आती है तो

मुझे लरज़ा सा हो जाता है और पापी मन पर हंसी भी आती है ।

शायद यही वो शक्तियां है जिन को धार्मिक गुरूओं ने शैतान और फ़रिश्ते की संज्ञा दी है । जो भी हो जहां मन की जीत होती है वहां अधर्म होता है जहां बुद्धि की जीत होती है वहां धर्म होता है । धर्म की परिभाषा समय समय पर विश्वभर के मनीषियों ने अपने अपने तरीक़े से अलग अलग की है लेकिन धर्म की परिभाषा संक्षिप्त में है, जिस कार्य के करने में शर्म, संकोच और भय न हो धर्म कहलाता है । इसी के अनुसार हम धर्म और सुकर्म कुकर्म की परख कर सकते हैं ।

मन चंचल ज़रूर है लेकिन उस पर बुद्धि का नियन्त्रण नितान्त आवश्यक है । जहाँ बुद्धि का नियन्त्रण ढीला होता है वहीं पाप से दामन गीला होता है ।

हर आदमी की दो स्थितियां होती हैं एक जागृत चेतन्य एक सुसुप्त, अवचेतन्य । जागते समय की स्थिति पर तो हमने थोड़ा प्रकाश डाल लिया और इस नतीजे पर पहुँचे कि मन चन्चल और रंगीला है, कामातुर छैलछबीला है । अब सोते समय की स्थिति पर ध्यान देते हैं । मन चन्चल है और अपरा शक्ति (लौकिक शक्ति) के प्रकाश से परिपूर्ण है । बुद्धि आत्मचेतना के प्रकाश से परिपूण है । परन्तु बुद्धि आत्मा के निकट होने की वजह से आत्मा की चेतना का प्रकाश बुद्धि में अधिक होता है । आत्मा परमात्मा का अंश माना ही जाता है । बुद्धि की छत्रछाया से बाहर मन जो सपने देखता है या उड़ानें भरता है वह अजीब अजीब अर्थहीन घटनायें होती हैं, अधिकांश वास्तविकता से परे, अव्यवहारिक और अप्रसंगिक बातों से युक्त होती हैं लेकिन वही मन जब बुद्धि के थोड़े बहुत नियन्त्रण में सपने देखता है तो कुल अर्थ रखते हैं और यर्थाथ दृष्टिगोचर होते हैं। बड़ी बड़ी मार्मिक बातें, जो ईश्वर की माया की गुत्थी को सुलझाने की दावत देती नज़र आतीं है और कहना पड़ता है कि "सपने भी जिन्दगी से बेतआल्लुक़ नहीं है "। पैट्रीशिया गारफ़ील्ड की पुस्तक "क्रियेटिव ड्रीमिंग", ।.......... सपनों का संग्रह जिसके 17 भाग प्रकाशित

हो चुके हैं, इस बात की गवाह है कि चेतन मन पर घटित बातें अवचेतन मन पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं और सपनों को सार्थक बनाती हैं ।

1916 में जब हिटलर एक सिपाही था और युद्ध के मोर्चे पर एक बंकर में अन्य साथियों के साथ सो रहा था, उसने एक सपना देखा कि बंकर पर एक गोला गिरा और सभी साथी दबकर मर गये वह भी मलबे में आधा दबा पड़ा है मगर जीवित है । हिटलर हड़बड़ा कर उठा और बंकर से कुछ दूर जाकर खड़ा हो गया, अभी वह भयानक सपने की यर्थाथिता पर मनन ही कर रहा थ कि सचमुच एक गोला बंकर पर आकर गिरा और सारे सोते हुये साथी बंकर की कब्र में सोते ही रह गये । अब प्रश्न जन्म लेता है कि यह सपना अक्षरशः और तत्काल सत्य कैसे हुआ? किस ने ऐसा सपना देखने को और युद्ध के सम्भावित ख़तरों से प्रभावित चेतन्य मन को अचेतन मन की ओर प्रेरित किया ? इस का उत्तर है सूक्ष्म शरीर द्वारा मानव को देन ।

प्रिन्स सेल्शियर बॉन मैकाऊ ब्रिक्सेन आस्ट्रिया का नृप 1509 में रोम के दौरे पर जाते समय मर गया । जब उसकी निर्जीव काया दर्शनार्थ रखी जा रही थी तभी रक्षकों में से एक रक्षक ने सपना देखा कि मृत नृप अपने साथ बहुत बड़ा ख़ज़ाना ले जा रहा है । फ़ौरन शव की जांच की गई और उस की एक आस्तीन के कफ़ से 30,00,000 (तीस लाख) रूपये के सोने के टुकड़ों की एक रसीद मिली जो प्रिन्स ने जमर्नी के एक बैंक में जमा कराये थे रसीद जो क़ागज़ का एक टुकड़ा थी 20,00,000 (बीस लाख) डालर मूल्य की थी । यहां भी सवालों के नाग फन उठाते हैं कि ऐसा सपना देखे जाने में कौन प्रेरक है । उत्तर की नागिन फुंकारती है, नृप की मृत्यु, उपरान्त उसकी आत्मा रक्षक को सूचित करती है । यहॉ केवल सुक्ष्म शरीर ही जलवा दिखा गया ।

11 दिसम्बर 1985 को मैंने एक सपना देखा तीन मुसलमान एक साथ एक लम्बी बैंच पर बैठे हुये हैं, बांई तरफ वाले गोरे हैं और खुबसूरत हैं । दोनों की दाढ़ियाँ बिलकुल श्वेत हैं । बीच वाले "सज्जन" का रंग

दोनों से उन्नीस है । उन की दाढ़ी के बाल आधे काले आधे सफ़ेद हैं मैंन सबसे पहिले बांई तरफ वाले बुर्जुग को ध्यानपूर्वक देखा फिर दाई तरफ़ वाले साहिब को देखा मगर कहा किसी से कुछ नही । मेरी जिज्ञासु दृष्टि को भांप कर उन्होंने बीच वाले "सज्जन" की तरफ संकेत करते हुये कहा " यह मुहम्मद साहब" हैं मैंने फ़ौरन बीच वाले "सज्जन" पर नजरें जमा दीं और बराबर देखता रहा कि सालार - ए - रसूलां, सरदार - ए- पैग़म्बरां, इमामुलस्फिया, शहन्शाह - ए - मुर्सिलां, रसूल - ए – अकरम, सल्लल्लाहो अल्हे वसल्लम कुछ बोलें मगर वह कुछ बोले नहीं और गम्भीर भाव से मेरी तरफ़ देखते रहे । इसी स्थिति में मेरी आंख खुल गई और फिर सुबह तक नींद नहीं आई । उनका चेहरा और दाढ़ी की आकृति मेरी नज़र में अभी तक ज्यूँ की त्यूँ समाई हुई है लेकिन दायें बायें बुजुर्गों की शक्ले याद नहीं रहीं ।

एक बार मैंने सपना देखा आसमान में बादल छाये हुये हैं मैं भाई से पूछ रहा हूँ कि समय क्या है तो वह बोले डेढ़ बजा है तभी मेरी आंख खुल गई मैंने घड़ी देखी तो रात का डेढ़ बजा था ।

15 फरवरी 1984 को मैं ने दस बजे एक सपना देखा कि मैं एक एक्सीडेन्टल केस का ड्रेसिंग कर रहा हूँ मेरे कपड़े भी खून से अछूते नहीं रहे हैं । तभी मेरी पत्नी ऊषा रानी शर्मा ने मुझे झकझोरा और उठाते हुये कहा "एक मोटर साइकिल एक्सीडेन्ट का केस नीचे आया हुआ है । जल्दी जाओ, सीरियस है ।"

एक बार मैंने सपने में देखा कि बिलारी और मेरे गांव के बीच से हरोरा ग्राम के पश्चिम में होती हुई रेलवे लाइन बिछी हुई है और उस पर ट्रैन जा रही है । मैंने सोचा कि अब तो मेरा गांव भी तरक़्क़ी कर जायेगा । कुछ देर बाद आंख खुल गई । उसी साल चन्द दिनों बाद उसी स्थान से होती हुई एक बस रोड का सर्वे हो गया और आज पुख़्ता सड़क ठीक सपने में देखे हुये रूट पर पड़ी हुई है ।

19.8.83 शुक्रवार की रात में जब मैं श्री मुकुट सिंह के निवास स्थान पर सोया हुआ था तो एक सपना देखा कि मेरी टांगों में मेरा लड़का लिपटा हुआ पड़ा है और मैं उस को झटके से हटा रहा हूँ । जब मैं भारत आया और अपना सपना पत्नी को सुनाया तो उसने भी याद करके बताया कि ठीक 19.9.83 की रात को ऐसा ही सपना उसने भी देखा था । एक ही रात में दो सम्बन्धी एक ही जैसे सपने देखें यह सत्य भी मनगढ़न्त सा लगता है क्योंकि ऐसा बहुत ही कम होता है । इस लगन निष्ठा प्रेम के साथ टेलीपेथी ने भी काम किया है ।

जब हम सोते हैं तो यह इरादा कर के नहीं सोते कि ऐसा सपना देखना है । इससे यह सिद्ध होता है कि सपनों पर नियन्त्रण और अधिकार नहीं होता है । ना ही सपनों में देखी जाने वाली फ़िल्म की बेतरतीब कहानी हमारी पूर्व रचित होती है । हम ही सपनोंकी फ़िल्म के हीरो होते हैं। लेकिन सोचने की बात यह है कि अन्य सहयोगी लोग यहां कहां से आते रहते हैं और घटनास्थलों का सृजन कौन करता है ? यह सब हमारे सूक्ष्म शरीर मन और बुद्धि के त्रिगुट का करिश्मा होता है । जब मन सपने देखता है तो उसमें सन्सार सम्वन्धी बातों का वाहुल्य होता है क्योंकि मन अपरा शक्ति वाला होता है यह शक्ति विकारात्मिका और त्रिगुणात्मिका है । अतःमन में विकारों, रजस और तमस की प्रधानता है । यह अतृप्त इच्छाओं की भी समाधि है जिन को बुद्धि सामाजिक व्यवस्था, बन्धन या परिस्थिति वश पूरे हुये बिना दबा देती है (डॉ. टार्ट ऐसी इच्छाओं को दबाना पसन्द नहीं करते) परन्तु कर्फ़्यू में दबी छिपी जनता की भांति यह इच्छायें समय पर फिर उभर आती हैं और सपनों में भांति भांति के ऐसे हसीन और सजीव दृश्य उपस्थित करती हैं कि हमारी तमाम इन्द्रियां भड़क उठती हैं और उनकी प्रतिक्रिया सारे शरीर को प्रभावित कर देती हैं और तरह तरह के वासना तृप्ति के ड्रामे बन जाते हैं ।

जब बुद्धि के प्रभाव में मन सपने देखता है तो उनमें कुछ वास्तविकता होती है क्योंकि बुद्धि आत्मा से और आत्मा परमात्मा से अटूट बन्धन में बन्धे होते हैं । कभी कभी आपने देखा होगा कि सपनों के कार्य कलाप

का समय हमारे लौकिक कार्य कलाप के समय से बिलकुल भिन्न होता है । जैसे कल्पना कीजिये हम एक बहुत ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर अनेकों दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके अपने घर पहुँच जाते हैं । इसमें जो समय लगता है वह मिन्टों से भी कम होता है जबकि इतना ही काम यदि जागते समय पैरों से चलकर किया जाये तो सुबह से शाम हो जायेगी । यहां अभी आंख लगी होती है अभी सपना देखकर उठ भी बैठते हैं । यह ख्यालों की उड़ान, मन की रफ़्तार बुद्धि और सूक्ष्म शरीर की द्रुतगति का करिश्मा है जो प्रकाश से भी तेज रफ्तारी के साथ काम करते हैं । सूक्ष्म शरीर की इच्छा मात्र ही से सब कुछ बनता और उपस्थित होता चला जाता है । इसी लिये सपनों में ऊल जलूलपन और अनियमता होती है।? कभी सपनों में यर्थात और वास्तविकता ऐसे ख़िल्त मिल्त होती है जैसे रेत में सोना चांदी के कण और कभी कभी यर्थाथ साफ़ साफ़ दिखाई दे जाता है। मन चन्चल होता है और सोचने मात्र ही से इच्छित वस्तु को प्रत्यक्ष देख लेता है । इसी की इच्छा पर सपनों की नींव रखी जाती है इसीलिये सपनों की कहानी भी न सिलसिलेवार होती है न लौकिक दृष्टि से उचित होती है।

पानी में विद्युत की शक्ति एडिसन से पहिले कोई नहीं जानता था । आज बिजली का प्रयोग जीवन के अनेकों क्षेत्रों में किया जाता है और सभी जानते हैं कि बिजली पानी से बनाई जाती है । इसी प्रकार योगियों द्वारा सूक्ष्म शरीर की शक्ति का पता लगाने के बाद जीवन में उस का अनेकों रूप में प्रयोग होने लगा है ।

इस त्रिगुट के आस्त्वि पर यदि किसी को सन्देह चेतता है तो मैं एक बात सामने रखूंगा किसी पागल में तीनों चीजें होती है मगर बुद्धि विक्ष्ति होती है तभी तो वह भले बुरे कहे जाने की कोई प्रतिक्रिया नहीं करता लेकिन कोई भी पागल स्वयं किसी ट्रक के सामने आकर मरता नहीं देखा गया । फौरन बच जाता है । इसी प्रकार सपनों में इन तीनों मे से जिस का प्रभाव अधिक होगा सपने भी उसी नोइयत के देखे जायेंगे । सपनों की कथा चूंकि इस जल्दबाज़ और चन्चल त्रिगुट की देन होती है इसीलिये

इस का लौकिक होनी भी अनिवार्य नहीं होता है । यदि हमारे सपने लौकिक होते, हमारी जानकारी और दुनिया के दृश्यों ही से सम्बन्धित या प्रभावित होते तो वह नवजात शिशु जो कुछ भी नहीं जानता सोते समय हंसते मुस्कुराते और कभी कभी सुबक सुबक कर रोता हुआ दिखाई नहीं देता । वह किस प्रकार के सपने देखता है । इस प्रश्न का न जार्ज टाउन विश्वविद्यालय के मनोचिकित्सक डॉ. आरनातड मिज्योर के पास है ना पैट्रीशिया गरफील्ड के पास ज़वाब अभी तक बूढ़ी अम्माँ को छोड़कर किसी के पास भी नहीं है । लेकिन मनुष्य सपना देखता अवश्य है यह अकाट्य सत्य है ।

5
बल

पृथ्वी और आकाशलोक, स्थूल और सूक्ष्म, भौतिकवाद या अध्यात्मवाद सभी बल के आश्रित टिके हुये हैं, बिना बल के कोई जीवित नहीं रह सकता । जब से सन्सार बना है बलवान, निर्बल को हाय हाय करते आये हैं । सबल निर्बल की यही लीला प्रलय तक यूँ ड़ी चलती रहेगी । बल का अर्थ शारीरिक शक्ति ही से नहीं है । बल क़ई प्रकार के होते हैंजैसे धन बल, जन बल, तन बल, मनबल, नीतिबल, प्रीतिबल, छल बल, दल बल, बुद्धि बल, आत्म बल, योगबल आदि अनेकों बल और भी हैं ।

सफल जीवन बिताने के लिये इन्सान को हर बल आवश्यक होता है । देखना केवल इस बात का होता है कि क़िस समय किस बल का प्रयोग किया जाये । मेरा मतलब अधर्म प्रचार से नहीं है परन्तु स्थिति को देखते हुये आदमी को कार्य करना चाहिये । धर्मात्मा होना अच्छी बात है । कोई भी इस को बुरा नहीं बतायेगा । गंधी जी बड़े नेक और धर्मात्मा पुरूष थे लेकिन उन्होंने सदा धर्म ही का पालन किया नीति बल का प्रयोग नहीं किया । अगर नीति बल का प्रयोग किया होता तो जैसे जिन्नाह ने मुसिल्म बाहुल्य प्रदेश को पकिस्तान बनाने की मांग रखी और वहां के सारे हिन्दुओं को मार भगाया, गांधी भी कह सकते थे कि भारतीय मुसलमानों को आदर और सुरक्षा सहित पाकिस्तान भेजा जायेगा । इसमें

कोई बुरी बात नहीं थी दो भाई न्यारे नहीं होते हैं क्या, इस नीति में हमारा मुस्लिम समुदाय से बैर का भाव प्रदर्शित थोड़े ही होता था । आज भी तो भारत "अरब" का साथी है "इज़राइल" का नहीं । पाकिस्तान और बंगला देश से दोस्ती का हाथ बढ़ाये रहता है । यदि गांधी जी ने ऐसा किया होता तो शायद आज हिन्दू मुसलमान अधिक क़रीब और प्यार से रह रहे होते । यह ख़ून ख़राबा आपसी वैमनस्य, मनमुटाव, झगड़े फ़साद, आगज़नी और भाई-चारे का अभाव गांधी जी की देन है इस राजनैतिक भूल के लिये भारत की आत्मा उन्हें कभी भी क्षमा नहीं करेगी । मैं तो यह समझता हूँ कि उस प्यार के दूत अहिन्सा के पुजारी ने नीति बल का प्रयोग न करके दो दिलों में नफ़रत भी पैदा कर दी है जो उन के उच्चार्दशवाद के चन्द्रमा को गहती रहेगी । शरीर बल श्रेष्ठ माना जाता है और यही वह बल है जो हर समय काम आता है मगर बुद्धि बल की जीत होती है और शरीर बल रखा रह जाता है जैसे कि इतिहास प्रसिद्ध रामगुप्त को शकों ने घेर लिया था, इस संकटापन्न अवस्था में रामगुप्त को शकों से सन्धि करने के लिये बाध्य होना पड़ा और रानी ध्रुवदेवी को शकों के समर्पित कर देने के प्रस्ताव को स्वीकार करना पड़ा । चन्द्रगुप्त रामगुप्त का छोटा भाई था बड़ा वीर और बुद्धिमान था उसे यह शर्त बिलकुल अमान्य थीं चुनांचे वह स्वयं ध्रुवदेवी के वेश में स्त्री रूपधारी सैनिकों के साथ शकों की सैनिक छावनी में गया और जब कामातुर शक नरेश ध्रुवदेवी का आलिंगन करने के लिए अग्रसर हुआ तब चन्द्रगुप्त ने उसका वध कर दिया और मार भगाया । 1303 इस्वी में मेवाड़ के राना रत्नसिंह की पत्नी पद्मिनी ने भी रत्न सिंह को अलाउद्दीन की क़ैद से मुक्त कराने के लिये राजपूतों से युक्त सात सौ डोलियों का प्रयोग किया था। छल बल की अहमियत क्या है ? इस सिलसिले में मैं अपनी ओर से कुछ भी कहना पसन्द नहीं करूँगा बल्कि ऐतिहासिक तत्त्व पेश करूँगा । पाठक स्वयं निर्णय करें कि किस समय किस बल प्रयोग की आवश्यकता होती है और उसका प्रयोग करना चाहिये । राम ने बालि को एक पेड़ की ओट से मारा, कृष्ण ने असहाय कर्ण पर तीर चलाने का अर्जुन को आदेश दिया, दुर्योधन द्युत क्रीड़ा में छल से पांडवों को हराता है, लक्षागृह में पांडवों को जीवित जलाने का षडयन्त्र रचा गया, चक्र व्यूह की रचना करवाकर

निशस्त्र बालक अभिमन्यु को चारों ओर से घिरवाकर मरवाया गया, इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि छल बल भी जीवन में अति आवश्यक है मुसलमान, अंगरेज़ और अन्य विदेशी आक्रान्ताओं ने इसी नीति का भरपूर प्रयोग किया और सफलता ने उनके विजय पद चूमे । उदाहरण पेश है रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई ने मन्डला के डिप्टी कमिश्नर वाशिगटन के घोड़े को एक ही बार में धराशायी कर दिया तो समर्पण के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं रहा । रानी ने क्षमा कर दिया । प्राण दान दे दिया लेकिन उसने अपने उच्च अधिकारी ईराकाइन से अधिक सेना मंगाकर रानी पर फिर आक्रमण कर दिया और रामगढ़ की ईंट से ईंट बजा दी मूर्ख दया की देवी रानी अवन्ती बाई को दूवहरगढ़ के घने जंगलों में घेर कर मार दिया गया और वहां अंगरेज़ों का प्रभुत्व हो गया ।

1191 में थानेश्वर से 14 मील दूर तराइन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद ग़ौरी को बुरी तरह परास्त किया मगर बख़्श दिया, अगले साल उसने पृथ्वी राज को हराकर मार डाला । प्राणदान देने वाले का एहसान भी नहीं माना । जिस बल प्रयोग से ग़ौरी जीता उसी के प्रयोग न करने से पृथ्वी राज मिट्टी में मिल गया ।

1600 में असीर गढ़ के बाहर अकबर ने धोखे से मिलने का बहाना कर मीरन बहादुर को क़ैद कर लिया था । तब भी रक्षकों ने फाटक नहीं खोला तो अकबर ने उत्कोच का क़िला रिश्वत में देकर गेट खुलवा लिया और असीर गढ़ पर अधिकार कर लिया । लेकिन भारतीय राजाओं ने छल बल को त्याग कर उच्चादर्शवाद अपना लिया और " हा हा करते को मत मारो, मत भजते के परौ पिछार " । की नीति पर अमल करके अवनति के गर्त में गिर गये । इहि लोक से परलोक को अधिक महत्व देने लगे । अपने जीवन के दुख सुख के लिये पूर्व जन्म के कर्मों की माया समझ कर उदासीन होने लगे । भविष्यवाणी तथा नियति पर विश्वास करके किंकर्तव्यविमूढ़ होने लगे । अहिन्सा के पुजारी बन गये। उच्च कोटि की धर्मपरायणता आ गई । भौतिकवादी न होकर अध्यात्मावादी बन गये । एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान वाले की जीत

हुई और एक हाथ में वेद और एक में पुरान वाले की हार हुई । चाणक्य नीति और गीता चीख़ चीख़ कर कहती रही कि कुपात्र और सुपात्र की पहिचान करना सीखो, दान, दया, प्यार, क्षमा, उदारता, शराफ़त को मुफ्त की दौलत समझ कर मत लुटाते फिरो, वरना इतिहास क्षमा नहीं करेगा, मगर किसी ने नहीं सुनी और अपनी मूर्खता पर मुस्कुराने वाले चालाक मक्कार और बदकार दुश्मन को मीत समझकर दूध पिलाते रहे। और चोट खाते रहे भारत वासी ।

मनोबल इन्सान का सब से बड़ा हमदर्द और सहयोगी है । नित्य, संयम का पालन स्वस्थ शरीर, स्वस्थ आत्मा, स्वस्थ मन और स्वस्थ विचार प्रदान करता है । यही चीजें मनोबल को दृढ़शक्ति प्रदान करती हैं । यदि कोई आदमी शरीर से दुर्बल हो जाता है और उसका मनोबल बराबर बना रहता है तो वह प्राणी कभी असफल नहीं हो सकता । वह घुटने नहीं टेक सकता । परेशानियां उसको विचलित नहीं करती बल्कि बल देती हैं ।

इतिहास साक्षी है कि जितने भी विदेशी आक्रान्ता भारत में आये वे हार कर, पिट कुट कर भाग जाने के बाद अपनी शक्ति बढ़ा कर यहां फिर आ धमके और सैंकड़ों साल तक इस धरती पर शासन किया और इस वैभवशाली धरती के सुख भोगे वे शरीर से हार जाते थे मगर उनका मन कभी नहीं हारता था बल्कि वह यहां के राजाओं के लड़ने के ढंग और उनकी कमियों को समझ कर नये सिरे से तैयारी करके आक्रमण करते थे और जीतते भी थे । जिस का मनोबल नहीं हारता वह व्यक्ति भी नही हारता है ।

भारतीय वीरों में विशेषतयः यह बात देखने में आती है कि वह शरीर से हार जाने पर अपने मन से भी हार जाते थे । अनकी आत्मा उनको हिम्मत करके सुगठित होकर, नई उत्साह और उमंग के साथ दुबारा युद्ध करने को प्रेरित नहीं करती थी बल्कि जौहर करके या आत्महत्या करके अपनी आन बचाने का पाठ पढ़ाती थी । वह सन्धि करने, युद्ध भूमि से

भाग जाने या कूटनीति, छल बल और घात लगाकर दुश्मन पर आक्रमण करने की अपेक्षा मर मिटना चिता में जल भुन जाना ही पसन्द करते थे। यह सब मनोबल की कमी थी । जो इस आर्यवर्त पर गुलामी का धतूरा हो गई । मिसाल के तौर पर देखिये । गोंडवाना की रानी दुर्गावती अकबर से परास्त होकर, चांदबीबी की भांति सन्धि नहीं करती, बल्कि आग की लपेटों में फांद पडती है । नबाव बाज बहादुर की बेगम रूपमती मुग़ल सेनापति आध्म खां द्वारा पति पराजय के बाद विषपान कर लेती है । वाडिंगन से परास्त होकर अवन्ती रानी आत्महत्या कर लेती है । राजा सूरजप्रसाद अंग्रेज़ों की हिरासत में ग्लानिवश आत्महत्या कर लेता है डॉ, सन शेवा जी मरहटा, सुभाषचन्द्रबोस, स्टालिन, लेनिन यात सेन और चर्चिल की भांति आज़ाद होने का प्रयास नहीं करता ।

इस जग में जीत उसी की है, जो सोच समझकर कदम रखे ।
इक हाथ से ले तलवार उठा, इक हाथ में अपना धरम रखे ।।

6
भाग्य

भाग्य संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है हिस्सा या भाग करने योग्य । यह संज्ञा भी है । जब इस को संज्ञा के अर्थ में प्रयोग करते हैं तो इसका अर्थ होता है वह निश्चित तथा अटल दैवी विधान जिस के अनुसार मनुष्य के सब काम पहिले ही नियत किये हुये माने जाते हैं और जिस का कल्पित स्थान ललाट (माथा) बताया जाता है (मैं इस विचार से सहममत नहीं हूँ) हिन्दी में भाग कहते हैं जिसका अर्थ हिस्सा होता है । गणित में किसी राशि की संख्या को कई अन्शों या भागों में बांटने की क्रिया को भी भाग कहा जाता है । भाग्यवान और भागी इन्हीं शब्दों से बने है जिन के अर्थ होते है सौभाग्यशाली या क़िस्मतवर या ख़ुशबख़्त या फ़ॉर्चूनेट । प्रारब्ध भी भाग्य ही के लिये प्रयोग किया जाता है । इसके शाब्दिक अर्थ हैं वह कर्म जिसका फल भोग आरम्भ हो चुका हो। प्रारब्धि का अर्थ शुरू होना होता है । बख़्त, नसीब, क़िस्मत तक़दीर सभी के अर्थ हिस्से के हैं । "क़िस्म हिस्सा करने को कहते हैं । इसी से क़िस्मत बना है जिसका अर्थ बंटवारा होता है और क़िस्मत यानी जो हिस्से में आया हुआ हो । पश्चिमी सभ्यतायें भी इस छलावे से बची नहीं है । अंग्रेज़ी में प्रीडेस्टीनेशन, फेट, लक, प्रीडोर्स्टनी, हैप, हैपहिजार्ड, लॉट आदि शब्द भी भाग्य ही के लिये प्रयोग होते हैं । लॉट Lot ही से Lottery

लॉटरी बना है जिसे भाग्य का खेल कहते हैं । इसे जुये की नाजाइज़ औलाद कह सकते हैं लेकिन चूंकि शासन ने इसको मान्यता प्रदान कर रखी है इसलिये इसको किसी घटिया दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिये।

कल्पना की कोख से जन्म लेने वाले शब्द भाग्य पर विश्वास करने वाले अन्धविश्वासियों ने इस को इतना उठाया कि हर साल बनाया जाने वाला रावण का पुतला भी नीचा हो गया । यदि भाग्य के अस्तित्व को रूढ़िवादी दृष्टि कोण के अनुसार मान भी लिया जाये तो जिस प्रकार अन्धविश्वासी लोग इस को मानते हैं उस तरह से इसे इस विज्ञान के युग में नहीं मानना चाहिये । युगयुगान्तर से चली आ रही ऋृषि मुनियों की पुरानी बातें निरर्थक तो नहीं हैं । वे मनीषी जब समाज को कुछ सिखाना चाहते थे तो धर्म का सहारा लेकर सिखाते थे । यही एक ऐसा भाव है जिस का सम्मान किया जाता रहा है और लोगों ने धार्मिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया । सुबह के समय ""च्यूँटियां जिमाने" के विचार के पीछे भी धार्मिक भावना काम कर रही है । मन्शा इस का दिमाग़ को तरावट पहुँचाने और आँख की ज्योति बढ़ाने का है । दूब घास हरी होती है । उस पर ओस पड़ कर उसको शीतल बना देती है उस पर नंगे पैरों से तलवों के द्वारा ठन्डक सारे रक्त कणों को सुहावनी शीतलता प्रदान करती है । जब आँखें बराबर घन्टे दो घन्टे हरी चीज़ देखती है तो आंख को बल मिलता है परन्तु आदमी इस क्रिया को यों ही सम्पन्न करता कैसे। मनीषियों ने धार्मिक भावना का सहारा लिया और च्यूँटियां जिमाने के प्रभाव द्वारा आंखों की ज्योति बढ़ाने की बात दिमाग़ में बिठा दी बात यह है कि च्यूँटियॉ अक्सर हरी घास ही में बाल्मीकि बना कर रहती हैं। उन को जिमाने वाला घास पर ग़ौर कर के उनके बाल्मीकि देखता हुआ चलेगा और एक निश्चित मात्रा में लिये हुये आटे को दूर तक फैले च्यूँटियों के परिवारों में बांटने के प्रयास में बराबर हरी घास को देखना पड़ेगा यही मन्शा था ऋृषि मुनियों का जो उन्होंने धार्मिक भावना के सहारे पूरा करा लिया । हरी चीज़ आँख को गुणकारी होती है इस तथ्य को साइन्स के युग ने भी स्वीकार किया है । आपने दुनियाभर के किसी भी आँख के अस्पताल में आँख के आपरेशन के बाद हरी पट्टी माथे पर

बांधे फिरते हुये रोगी देखे होंगे । हरे रंग की पट्टी के अतिरिक्त किसी भी अन्य रंग की पट्टी नहीं बांधी जाती है । इस एक मिसाल से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि हर मान्यता, हर परम्परा हर रस्म और रिवाज के दामन में कुछ न कुछ रहस्य अवश्य हैं । इसी प्रकार भाग्य का मुआमला है । हर किये हुये काम का फल मिलना भी आवश्यक है गीता का क़ौल है । यही भाग्य है । और कार्य करो फल की आशा को त्याग दो जो होना होगा होता रहेगा । यह भी गीता का क़ौल है जिस का साफ़ साफ़ अर्थ है कि भाग्यवाद पर हाथ पर हाथ रखे बैठे रहना व्यर्थ है मूर्खता है । कितनी अजीब बात है कि यही मूर्खता भारतियों ने की है और बराबर पिछड़ते चले जा रहे हैं फिर भी आंखे नहीं खुलती विदेशी आक्रान्ताओं ने गीता के इस क़ौल को पूर्णतया अपनाया और कर्मठता के जादू ने उन्हें सब कुछ बना दिया ।

भारत में अफ़ग़ान साम्रज्य के संस्थापक बहलोल लोदी की मां जब गर्भवती थी तो वह दौराला महल की छत गिर जाने से उसमें दब गई। बहलोल लोदी के पिता मलिक काला ने मृतक मां का पेट फाड़ कर बच्चे को बाहर निकाल लिया । यही बच्चा बहलोल लोदी बना । अगर कोई राजपूत होता तो हाथ मलता रहता और भगवान की माया या भाग्य का खेल समझकर निष्क्रय खड़ा देखता रहता, मां तो मर ही गई पुत्र भी मर जाता और सुनारिन से ब्याह कर के सिकन्दर लोदी का जन्म नहीं होता।

एक दिन टी.वी. पर क्रिकेट का खेल चल रहा था दो साथियों में बहस छिड़ गई एक बोला भारत हारेगा एक बोला भारत जीतेगा । दोनों ने सौ सौ के दो नोट मेरे पास जमा कर दिये भारत हार गया नोट दूसरे ने ले लिया । उसी के हिस्से की चीज थी । जिसका नोट गया वह भाग्यहीन यानी हिस्से से रहित और जिसको मिला वह भाग्यवान यानी हिस्से वाला कहलाया । एक हिस्सेदार बना एक इस सुअवसर से वन्चित रह गया। यही होना था । न दोनों हार सकते थे न दोनों जीत सकते थे । इसी हिस्से या भाग्य, किस्मत या नसीब, फेट या लॉट को ''संयोग'' से सम्बन्ध विच्छेद करके किसी काल्पनिक दैवी शक्ति से सम्बन्धित कर देना कर्म और

कर्मशीलता, कोशिश और युक्ति का अपमान करना ही तो है । हमारी रूढ़िवादिता और दक़ियानूसी विचारधारा की प्रबलता ही हमें आगे बढ़ने और दरिद्रता दूर करने में फुलस्टाप का काम कर रही है । मेरे क़स्बे में एक ग़रीब मुसलमान था जिसके पास जबान लड़की शादी करने को थी । साइकिलों की मरम्मत करता था । पेट भरने लायक रोज़ कमा लेता था । बीबी कान खाती थी कि शादी करने की कुछ तरकीब सोचो। वह "खुदा मालिक है" कहकर चुप तो करा देता था मगर बीवी मन ही मन सोचती रह जाती थी कि ख़ुदा मालिक है ? कैसे ख़ुदा मालिक है। वह छप्पर फाड़ कर दे देगा क्या । एक दिन उसके कानों में भनक पड़ी कि एक पड़ोसी मुसलमान अपना जमीन का एक हिस्सा जो सड़क के किनारे है आबादी में बेच रहा है । जमीन चूंकि महंगी है इसलिये कोई मुसलमान उस को लेने को तैयार नहीं है एक हिन्दू तैयार है उसको गैर मुस्लिम होने की वजह से वह बेच नहीं रहा है । साइकिल वाले ने लड़की की शादी के बहाने कई रिश्तेदारों से क़र्ज लेकर मामूली सी रक़म में उस ज़मीन को ख़रीद लिया । एक ही हफ़्ते बाद उसने उस ज़मीन को उसी पहिले वाले एक्सपोर्टर हिन्दु ग्राहक को ढाई लाख में बेच डाला । हजारों में खरीदी जमीन लाखों में बेच कर उस साइकिल वाले ने क़र्ज़ा भी चुकता कर दिया और दुकान मकान भी ठीक कर लिया और लड़की की शादी भी अच्छी तरह से कर दी । उसने अपनी गरीबी दूर कर ली केवल युक्ति से, लेकिन दूसरा निर्धन का निर्धन ही रह गया और जायदाद भी गई। भाग्य का अर्थ समझने वालों को अपनी धारणा में कुछ तबदीली लानी चाहिये। सोचने समझने में अन्धविश्वास का दख़ल न होकर तर्क का समावेश होना चाहिये । युगयुगान्तर से चली आ रही एक काल्पनिक विचारधारा को झकझोर कर जगा कर देखना चाहिये कि उसमें कुछ है भी या सोमनाथ की निर्जीव पाषाण मूर्ति मात्र ही है और सांप का शैतान बनो या रस्सी का सांप बनी बैठी है । जो जन्म लेता है वह मरता भी अवश्य है । यानी जीवन मरण का अटूट सम्बन्ध है। इसी प्रकार सफलता और असफलता दोनों ही अदृश्य रूप से काम करने वाले पौरूष युक्त पुरूष के साथ साथ चलती है सफलता कर्मठवीर, साहसी और दृढ़ संकल्पी के गले लग जाती

है और असफलता भीरू, निकम्मे, कायर, अकर्मण्य और भाग्यवादी का दामन पकड़ लेती है दो लड़ते हैं तो एक जीतता ही है । दोनों की विजय तो होती नहीं है । विजय एक के हिस्से में आती है तो पराजय दूसरे के नसीब में । एक भाग्यवान यानी जीत के हिस्से वाला बना दूसरा भाग्यहीन कहलाया यानी उसके हिस्से में वह चीज़ नहीं आ सकी । जिस प्रकार हर कार्य का परिणाम अवश्य होता है उसी प्रकार भाग्य के निश्चित होने में भी कोई सन्देह नहीं है । यह वास्तव में पूर्व निश्चित है । लेकिन पुराने विचार के अनुकूल नहीं बल्कि जो करेगा वह पायेगा जो कमायेगा वो खायेगा के अनुकूल है केवल यही निश्चत और नियमित विधान है । कुछ लोग कहते है भाग्य कुछ नहीं है तो ज्योतिषी लोग भविष्यवाणी कैसे कर देते हैं । जो सत्य भी सिद्ध होती हैं । इसके पीछे भी एक त्रुटिपूर्ण धारणा कार्यरत है जो समझने के ग़लत दृष्टिकोण की तरफ़ ख़ामोश इशारा कर रही है जैसे एक बच्चा पहाड़ा सुनाते "पन्द्रह छक्का" कह कर रूक जाता है उसे इसका परिणाम नहीं सूझता मास्टर साहिब फ़ौरन "नब्बे" कह देते हैं । बच्चा नब्बे तो कह देता है मगर मन में पल भर को सोचता ज़रूर है कि मास्टर साहिब की जानकारी कितनी अधिक है कि वे सब कुछ जानते हैं ।

इसी प्रकार ज्योतिषी की भविष्य वाणी है । ज्योति प्रकाश को कहते है । "ईष" राम के लिये आया है । यानी ईश्वर का प्रकाश दोनों शब्दों से मिलकर "ज्योतिष" बना : आप एक अजनवी अन्धेरे पथ पर रात में संफर कर रहे हैं । आप को पता नहीं कि सामने रीछ है या झाड़ी । टार्च वाले साथी ने मार्ग पर प्रकाश फेंक कर रास्ता प्रकाशित कर दिया और आप कुछ दूरी तक संभल कर चलने लगे । इसी प्रकार जीवन के पथ पर यह लोग ज्योतिष की टार्च से मार्ग प्रकाशित कर देते हैं । इसका यह मतलब नहीं कि वो झाड़ी को रीछ या रीछ को झाड़ी बना देते हैं । दो दूने चार होते हैं तो चार ही होंगे । जीवन के कार्य कलापों को निश्चित मान लेना समझदारी नहीं है । कार्य परिणाम निश्चित होता हैं ।

यह तो भविष्य को झांकने की एक विद्या है । हर विद्या प्रकाश का

काम करती है । इसके विषय की गहराई में जाने का यहां कोई औचित्य नहीं हैं । मैं यहां भाग्य के गोरख धन्धे से जुझ रहा हूँ । दो प्रकार के आदमी हमेशा होते आये है एक मरे हुये शेर में मन्त्र द्वारा जान डालने का प्रयास करता है तो दूसरा यह सोचकर पेड़ पर चढ़ जाता है कि यदि यह जी उठा तो अवश्य ही खा जायेगा । जीवित होने पर शेर सिद्ध पुरूष को खा जाता है और मूर्ख पेड़ पर चढ़कर बच जाता है और विद्वान पर हंसता है । जैसे मिज़ाइलों पर अंसख्य रूपया ख़र्च करने वाले अब उन को अपने ही हाथों नष्ट करने की सोच रहे है और मानव सेवा में लगे सत्पुरूष इस मूर्खता की खिल्ली उड़ा रहे हैं यह धन मानव कल्याण में लग गया होता तो कितना अच्छा होता ।

यही हुआ है इस दुनिया में और आगे भी होता रहेगा । एक व्यक्ति सम्भावित खतरों का ज्ञान होने पर उनसे बचाव की युक्ति सोचेगा जैसे बीमार हुमायूँ को बचाने के लिये ज्योतिषियों ने बाबर से कहा था कि आप किसी मूल्यवान वस्तु का बलिदान करें तो शहज़ादे के प्राण बच सकते हैं ।" बाबर ने यहीं किया और हमायूँ स्वस्थ हो गया परन्तु राजपूतों को ज्योतिषियों ने सूचित किया था कि "भारत पराजित हो जायेगा और यहां यवन राज्य करेंगे ।" तो राजपूतों ने इस भविष्य वाणी से सचेत होकर आपसी फूट विलासता दवेश भावना, भाग्यवादिता, रूढ़िवादिता, को मिटा कर एक जूट होकर यवनों से लोहा लेने के बजाये अद्वितीय वीर योद्धा अन्धविश्वासी दुर्भाग्य की माया को बिल्कुल अपरिवर्तनशील समझ कर नैराश्य में ग्रसित हो गये ।

तार्किक, बद्धिमान, साहसी, चेतन्य सभ्यतायें ज्योतिष से अपना मार्ग प्रशस्त करके संभलती सुलझती हैं और उन्नति की दौड़ में अवरूद्ध बाधाओं को दूर करने की युक्तियां सोचती हैं । उनके यहां अन्धविश्वास जन्म नहीं लेता और हमारे यहां इसको मौत नहीं आती ।

आकाश और धरती दूर जाकर मिलते नज़र आते हैं और हमने इसका नाम भी रख दिया है क्षितिज (Horizon) लेकिन यह दृष्टिभ्रम है दो

समान्तर रेलों की भांति कोई किसी से नहीं मिलता हैं, बस मिलते नज़र आते ही हैं । इसी प्रकार भाग्य को मानने वाले हैं जो कुछ का कुछ समझते और विचारते हैं ।

7

परिवर्तन

परिवर्तन आवश्यक प्राकृतिक प्रतिक्रिया तो है ही मानव जीवन को उन्नति की ओर ले जाने वाला एक सशक्त नियम भी है । परिवर्तन कई प्रकार के होते हैं, जैसे प्राकृतिक दैविक, भौतिक, भौगोलिक समाजिक व्यैक्तिक मानसिक आदि । लगभग सभी प्रकार के परिवर्तन प्राकृतिक परिवर्तन ही के अर्न्तगत आते हैं । मानसिक परिवर्तन सबसे महत्व का हैं इसलिये मैं यहां इसी के विषय में विस्तार से लिखना पसन्द करूँगा ।

सुधार, सन्शोधन, या तबदीली जीवन में अति आवश्यक हैं जब जब इन्सान ने परम्परा को जोड़ कर लीक से हटकर सोचा है रूढ़िवादिता से नफ़रत करके रस्म व रिवाज को ठुकराया है तर्क से काम लिया है, तब तब इन्सान ने उन्नति का लक्ष्य प्राप्त किया है । रस्म व रिवाज अर्वाचीन मानव सम्यताओं के आयाम तो अवश्य सन्जो कर रखते हैं मगर यह दोनों उन्नति में अवरोध पैदा करते हैं। रस्मो रिवाज परिवर्तन के सख़्त दुश्मन हैं । आदमी में नवीनीकरण का भाव जागृत नहीं होता । तार्किक विवेक की न्यूनता हो जाती

है । स्वतन्त्र विचार धारा और उग्रवाद की अल्पता हो जाती है। आदमी लकीर का फ़क़ीर होकर रह जाता हैं । (गांधी जी आदि अनेक नेताओं को समुद्र पार शिक्षा पाऐ जाने के लियें पुरानी रस्मों का कड़ा मुक़ाबिला करना पड़ा था।) नवीनता को अपनाना बहुत ही कठिन हो जाता है । जिस वातावरण में आदमी पलता है उसका, प्रभाव उसके मन मस्तिष्क तक को अपने अनुरूप बना लेता है । मिसाल के तौर पर एक बच्चे को ले लीजिये जो अपने पिता से डैडी कहता आया है यदि बड़े होकर उससे कहा जाये कि वह पिता को पिता कहे डैडी न कहे । तो वह लड़का पिता नहीं कह पायेगा । ऐसा कहने में उसको बड़ा अजीब सा लगेगा । यदि वह डैडी शब्द को अपनी संस्कृति से अलग का शब्द समझे और नफ़रत करे और हिम्मत करके डैडी कहना छोड़कर पिताजी कहने लगे तो इसी को परिवर्तन कहा जायेगा । यही हिचकिचाहट की समाप्ति परिवर्तन का द्वार खोलती है ।

जापान में तौकूगावा काल में आयुर्वेद को छोड़कर सभी पश्चिमी विद्याओं को सीखने पर पाबन्दी लगाई गई थी । परन्तु इस युग में भी परिवर्तन और सुधार के शैदाई मौजूद थे । 1784 में तानूमा नामक एक जापानी को पश्चिमी लोगों से सम्पर्क रखने के अपराध में फांसी दे दी गई थी । जनता ने इसको पसन्द नहीं किया । परिणामतः यह कानून तोड़ दिया गया और आम लोग उदार प्रवृति वाले बन कर तरह तरह की विधायें और तकनीकें सीखने लगे । इस पग्विर्तन का धीरे धीरे यह नतीजा निकला कि आज दुनिया भर के बाज़ारों में जापानी चीज़ों का बाहुल्य है मैंने स्वयं लन्दन में हर दुकान पर जापानी चीज़ें विकती देखी हैं । यदि जापानी परिवर्तन को न अपनाते तो उनका यह उत्कर्ष पंगु बनकर रह गया होता । तबदीलियां जीवन का नियम है ।

21 अप्रैल 1526 में पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी की एक लाख सेना बाबर की पच्चीस हज़ार सेना के सामने बुरी तरह

परास्त हो गई । बाबर के पास सात सौ तोपें थी और भारतीयों को अपने तीर कमान वर्क़ी भालों पर ही नाज़ था उन्होंने हिन्दूकुश से परे झांक कर ही नहीं देखा कि युरोप में विज्ञान क्या चमत्कार दिखा रहा है । 16 मार्च 1527 को कनवाह के मैदान में राणा सांगा के टिड्डीदल को भी बाबर ने इसी प्रकार पराजित किया था। शेवानीयां की तुलगया नीति बाबर ने पहिली ही बार भारत में प्रयोग की थी जिससे पूरी पूरी सफलता मिली और भारतीय इस रणनीति से अपरिचित थे ।

भारत में समुद्रपार जाना कर्म भ्रष्ट होना माना जाता था इसीलिये वह पश्चिमी देशों में हो रहे नये नये परिवर्तन, सुधार, और खोजों के बारे में काला अक्षर भैंस बराबर बने रहे और मुसलमानों ने उनसे फ़ायदा उठाया । भारतीय संकीर्णता, अपरिवर्तन शीलता, रूढ़िवादिता, फूट आपसी वैमनस्य और जातीय द्वैश जो आज और भी विक्राल बन गये हैं, भारत में आक्रान्ताओं के लम्बें शासन के कारण हैं ।

समाज में पढ़ा लिखा कोई व्यक्ति सुधार का मार्ग अपनाता: भी है तो कट्टरपन्थी और बूढ़े दिमाग़ उसका विरोध कर के बिठा देते हैं। 1951 में मेरे साथ के जी. के कालेज मुरादाबाद में एक यादव का लड़का पढ़ता था । यादवों में अल्पायु में विवाह करने का आम रिवाज हैं और अभी तक प्रचलित है वहां तक न कानून की लम्बी बांह पहुँची है और न समाज सुधारकों की आवाज़ ही । उस लड़के का रिश्ता तै हो गया । शादी का दिन भी तै हो गया । यादव लोगों में शादी में दूल्हा जाता है मगर उसके साथ दुल्हन नहीं आती है (शायद अल्पायु होने की वजह से यह नियम बनाया गया होगा। गोने में यानी शादी के बाद दुल्हन को बुलाने दूल्हा नहीं जाता है। कहीं कहीं ऐसा भी रिवाज है कि दूल्हा घोड़े पर बैठकर बान बटता है मगर ससुराल नहीं जाता है बल्कि अन्य लोग दुल्हन को बुलाकर ले आते हैं । मेरे मित्र ने अपनी शादी में बूढ़ी रस्मों का गला घोटना चाहा । दुल्हन को साथ लाने की शर्त रखी, लड़की वालों ने दबी

उंगली निकालने की गरज़ से हां कर दी लेकिन शादी के ऐनमौक़े पर दूसरे बड़े बूढ़ों की आड़ लेकर दुल्हन को साथ भेजना अशुभ बता कर चली आ रही रस्म की जड़ पर ठन्डा पानी दिया । लड़का कुछ बिगड़ा और उसने अपनी शर्त दुहराई, मगर उसी के घरवालों ने उसको समझा बुझा कर तत्तेभात की तरह दबा दिया और सभी ने लड़की वाले की हां में हां मिला दी । इस प्रकार पिछड़े समाज के एक कोन से उठी परिवर्तन की आवाज़ और उमंग का गला घोंट दिया गया और उस बेचारे को सुधारवादी परिवर्तनशील प्रवृति पर तरह तरह के व्यंग भी कसे गये ।

यह माना कि विद्या आदमी के विचारों में सन्शोधन लाती है। उसमें और उसके व्यवहार में परिवर्तन लाती है मगर कहीं कहीं रूढ़िवादिता कीचड़ बनती है । और आदमी पिछड़ जाता है । परिवर्तन और प्रतिक्रिया प्रकृति का विशेष नियम है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, न उसको टाला जा सकता है । सुक़रात, मुहम्मद साहिब, स्वामी दयानन्द सरस्वती इन तीनों ही के पूर्वज मूर्ति उपासक थे । परन्तु यही तीनों मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी बने और उनका विचार अक्षरशः सत्य था कि शिल्पकार अपनी छेनी से एक पत्थर को तराश कर कोई भी रूप दे लेकिन उसमें शिल्पकार के विचार और भावनायें ही समा सकती हैं किसी दैवी शक्ति का समावेश नहीं हो सकता। मूर्तियों से शिल्पकार के परिवार का भरण पोषण तो हो सकता है लेकिन दरिद्र भिखमगें और भूखे प्यासे को उससे कुछ नहीं मिलेगा। मानव के काम तो मानव ही आयेगा उसके हाथ पैर, उसका बल और उसकी बुद्धि ।

चाड. तुड. सेन ने सन्शोधित क्रान्तिवाद का प्रतिपादन किया और पुराने विचारों तथा विश्वासों का भन्डा फोड़कर चिन्तन को नई दिशायें प्रदान कीं । फलतः 1922 के पीकिंग सम्मेलन में धर्म को ढकोसला सिद्ध कर समाज के लिये हानिकारक बताया गया ।

ताहा हुसैन का मिश्र की जनता से कहना था कि धर्म सशक्त, प्रतीकों द्वारा विश्व के कुछ सामान्य सत्यों का प्रतिपादन कर मानव ह्दय को सन्तोष प्रदान करता है । समय के साथ साथ इन प्रतीकों में परिवर्तन की आवश्यकता है धर्म का भावना मूलक महत्त्व कुछ भी हो यह राजनीतिक जीवन की कुन्जी नहीं बन सकता और न राष्ट्रीय जीवन की कसौटी हो सकता है । राष्ट्र की परिकल्पना धर्म की शब्दावली में प्रस्तुत नहीं करनी चाहिये ।

1860 में जापान में व्याप्त अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता के विरूद्ध कीदो, ओकूवो, साइगो, ईनोऊरा और ईतो नव युवकों ने तेज़ी से पाश्चात दर्शन, विज्ञान, विद्या, संस्कृति और जीवन पद्धति को अपनाने का संकल्प किया उनका सूत्र ''फूको कूहयो हेई'' (समृध्द देश और सुदृढ़सेना) था । इसके बाद जापान की स्थिति बदलती चली गई।

भारत में विधवा विवाह एक लम्बे समय से वर्जित है । यदि यही क़ानून या सामाजिक निकम्मा मूर्खता पूर्ण बनधन आदमियों के साथ भी लागू किया गया होता तो इसने नारी जाति को भी मुक्त कर दिया होता । क्योंकि वह इस प्रकार उसके दुख को अपने दुख के साथ जोड़ लेता मगर प्रत्येक मर्द आज़ाद है कृष्ण सोलह हज़ार नासिरउद्दीन पन्द्रह हजार, देवराज द्वितीय बारह हज़ार, अकबर पांच हजार, शाहजहां दो हज़ार स्त्रियों के मालिक बन सकते हैं स्त्री जो जवानी में विधवा हो गई है उसको एक विवाह करना भी हेय समझा जाता है । अगर इस महत्वाकांक्षी मानव ने पर्दे के पीछे सुवक सुवककर रोने वाली निदोर्ष विधवा के आंसू पोंछे होते तो भारत की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति ही बदल गई होती ।

मैनें अपने फुफेरे सुसर को समझा बुझा कर उनकी जवान विधवा लड़की का ब्याह करा दिया । अब वह कई बच्चों की मां है और खुश है ।

1843 में ग्वालियर के महाराजा जनकोजी का परलोक वास हो गया । उस समय उनके कोई भी सन्तान नहीं थी क्योंकि रानी की आयु केवल ग्यारह वर्ष ही थी महारानी ने अपने निकटवर्ती सम्बन्धी को जिसकी आयु केवल आठ वर्ष थी गोद ले लिया जयाजीराव नाम से गद्दी पर बिठा दिया । मिस्टर एलनवरा ने मौके की नज़ाकत से लाभ उठाया, ग्वालियर पर आक्रमण कर उसको हथिया लिया । रानी लक्ष्मीबाई ने भी ऐसा ही किया था । यदि उनके अपनों ने उन को समझा बुझा कर विवाह सूत्र में बांध दिया होता तो बात दूसरी ही होती स्त्री को पुरूष के आश्रय की बहुत ही आवश्यकता है । मर्द की तरह उस की भी कुछ उमंगे होती हैं जो शर्मो लिहाज़ और रस्मोरिवाज के भारी पत्थर के नीचे दबी रहती हैं । वह दबी ज़ुबान से भी कुछ न कहे तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उसको शादी के लिये तैयार किया जाये तो वह तैयार नहीं होगी । हमने अभी तक परिवर्तन और सुधार को गले नहीं लगाया है । बदलना नहीं सीखा है । प्रकृति के नियमों के अनुकूल और समय के साथ चलना नहीं सीखा हैं ।

ऐसी भी नहीं है कि हमारे यहां समाज में कोई प्रेरक या समाज सुधारक ही नहीं हुआ राजा राम मोहन राय, कबीर, दादू, एनीवी सेन्ट, मदर टरेसा, दयानन्द आदि अनेकों सुधारकों ने कान पर खन्जरी बजाई है । मगर हम रूढ़िवादिता के नशे में ऐसे सोये हुये हैं कि करवट ही बदल कर रह जाते हैं । बदलना ही नहीं है । 712 ईस्वी के ऐतिहासिक थेपेड़े भी निष्क्रय ही रहे और राजा दाहिर लुटपिट कर बैठ गया । 1947 का खूनी तमांचा भी कोई विशेष प्रतिक्रिया न दिखा सका ।

एक बार मै अपनी विदेशी मेहमान, कुमारी जोयना माईस्को को रावण का मेला दिखाने ले गया । वहां वह मिट्टी के बतर्नो को देख कर बहुत खुश हुई । बर्तनों के पास बैठ कर उनके डिज़ाइन

और उन पर हाथ से बने बेल बूटों कों निहारने लगी । उसने एक घड़ा उठाया और साफ़ समतल भूमि पर रख दिया । मै उसे वग़ौर देख रहा था मगर यह नही समझ पाया कि वह क्या देखना चाहती है। हर तरफ झुका झुका कर देखती घड़ा सीधा ही रहता वह बोली ''इस कुम्हार के हुनर का कमाल तो देखिये कि घड़े की पैंदी बिल्कुल गोल है मगर हाथ से बनाये हुए घड़े का इतना अच्छा बैलेन्स है कि किसी भी तरफ़ को लुढ़कता नहीं हैं । उसने पास के नल से पानी भर कर भी देखा । वह तब भी सीधा ही रहा लुढ़का नहीं। वह इस हुनर को देखकर बड़ी चकित थी और मैं यह सोच सोचकर कुढ़ रहा था कि आज से साढ़े पाँच हज़ार साल पहिले से चाक पर बर्तन बनाने वाला कुमहार घड़े में कोई परिवर्तन नहीं कर सका जैसे उसके पूर्वज बनाते आ रहे हैं वैसे ही वह आज भी बना रहा है । कम से कम उसकी पैदी चपटी ही कर देता जिससे ठसक लगने और लुढ़कने की सम्भावना ही समाप्त हो जाती । लेकिन उसने परम्परा से हटकर नवीनता और परिवर्तन की ओर कभी ध्यान ही नही दिया । यही नहीं यदि कोई परिवर्तन और सुधार की आवाज़ उठाता है तो समाज उस पर पुराने पन के नशे में पत्थर फैंकता है, देश निकाला देता है और विष देता है । लिंकन मार्टिन लूथर किंग, गान्धी, इन्दिरा और जोन कनेडी को गोलियों से छलनी कर देता है । मगर इतने अत्याचारों के बावजूद सुधारों और परिवर्तनों की भावनायें दब थौड़े ही गईं । बल्कि नये रास्ते और नये तरीकों से जीने की कानाफूसी बराबर चलती रही और रेनेदेकार्ट, पीरगसेंडी, टामस हाब्स, बरूच, स्पिनेजा, लाइबनित्ज़, जॉनलॉक, डेविड ह्युम, इम्मेनुअलकान्ट, लेनिन, डा. सन आदि ने अपनी नवीन सामाजिक और दार्शनिक विचार धारा के प्रभाव से सत्य और वास्तविकता अपनाने को योरोप भरके दिग्गजों को मजबूर कर दिया । सम्राज्ञी केथरीन, मेराया थेरेसा, सम्राट जोजेफ़, फ्रेड्रिक महान हयूपोल्ड, ज़ार आदि के पुरानी लीक से हटकर शासन सुधार करने लगे । यह हवा योरोप ही तक सीमित नहीं रही । बल्कि एशिया की तरफ़ भी प्रवाहित हुई । मुस्तफ़ा कमाल पाशा रिफ़ार्मर आफ टर्की ने तुर्किस्तान की

काया पलट दी। माओत्से तुंग और चूतेह ने चीन में क्रान्ति की मशाल जलाई। जार्ज वाशिंगटन ने अमरीका को और गांधी ने भारत को आज़ादी दिलाई । यह लोग समझ गये कि वासी वुसे विचार और धारणायें उन्नतशील मार्ग पर चलने के लिये अवरोधक है । जो लोग परिवर्तन को किसी भी कारण वश अहमियत न देकर उसकी अवेहलना करते हैं, समय उनको नहीं बखशेगा। वह पिछड़ जायेंगे।

फिरोज़ तुगलक़ ने एक लाख अस्सी हज़ार गुलामों को दरबार की हिफाज़त में लगा रखा था । जिन में हिन्द सामन्तों के बेटे ऐवेसीनी हवशी थे । पैगम्बर की ललकार से प्रभावित होकर जिन रिसालों ने एशिया, अफ़्रीक़ा, योरोप को जीता था उनकी फ़ौज इन गुलामों से कहीं कम थी, अगर यह ग़ुलाम एक जूट होकर अपनी धारणाओं में परिवर्तन लाकर कुल भाग्य बदलने का प्रयास कर बैठते तो दुनिया को जीत सकते थे मगर उन्होंने अपने भाग्य को बदलने की कोशिश ही नहीं की और अत्याचारियों के शासित ग़ुलाम बने रहे और कोड़े खाते रहे ।

खुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली ।
न हो जिसको ख़याल आप अपनी ही हालत बदलने का ।।

(हाली)

8

दुआ

लार्ड टेनीसन अंग्रेज़ी भाषा का विद्वान कवि था उसने कहा था "दुआ से ऐसे ऐसे काम हो जाते हैं कि आदमी उम्मीद भी नहीं कर सकता" मैंने यह शब्द आठवीं कक्षा में पढ़े थे । उस समय मैं इस वाक्य की गहराई तक नहीं पहुँच सका था, आज कई अनुभवों के बाद मैं इसका रहस्य समझ पाया हूँ । वास्तव में दुआ में बड़ी तासीर होती है । लोग बाग इस विचार धारा को लेकर मुझे अन्धविश्वासी भी कह सकते हैं मगर मुझे इसकी तासीर पर पूरा भरोसा है दुआ हो कि बददुआ जो दिल से निकलती है वह ज़रूर कामयाब होती है । दिल से मुराद शरीर के किसी विशेष केन्द्र से है । यदि शरीर को एक छाता मान लिया जाये तो उसकी दसों तानों को दसों इन्द्रियां और डन्डे को आत्मा समझ लीजिये । दसों तानें एक डन्डे पर एक केन्द्र पर जुड़ती है यदि वहां का सम्बन्ध किसी कारण वश टूट जाये तो तानें बिखर जाती है । और हम छाता नहीं तान पाते । इसी प्रकार जब हमारी इन्द्रियां एक केन्द्र (आत्मा) पर एकत्रित हो जाती हैं तो हम इस शरीर से चमत्कारिक कार्य ले लेते हैं । दुआ या वद दुआ को प्रभावकारी होने के लिये इन्द्रियों का केन्द्रीकरण

आवश्यक है । इसी केन्द्रीकरण की स्थिति में आदमी जो कुछ सोचता है वही हो जाता है। यही ईश्वर की माया है जो एक पहेली बनी हुई है । अब सवाल उठता है दुआ दी जाती है या ली जाती है । मैं समझता हूँ दुआ दी नहीं जाती ली जाती है । किसी के प्रति किया जाने वाला हमारा व्यवहार यदि अच्छा है तो वह आत्म विभोर होकर दुआ देगा और यदि बुरा है तो बददुआ देगा ।

हाजी बख़्श इलाही सिगरेट वाले दिल्ली के प्रसिद्ध दानी और धनी व्यक्ति थे करोड़ो में खेलते थे । एक बार उन्होंने वायसराय को अपने घर चाय की दावत पर बुलाया तो वायसराय के लिये जो प्याली भर चाय बनाई गई थी उसके लिये उन्होंने अस्सी हज़ार रूपये के करेन्सी नोट जलाकर चाय बनवाई थी । हाजी जी हर साल ज़िकात भी धार्मिक दृष्टिकोण के अनुसार निश्चित समय पर किया करते थे । हाजी जी की धर्मपत्नि जो अम्मां जी कहलाती थी बड़ी शानो शौकत की महिला थी, दौलत मन्द घरानों की औरतों में अहम का माद्दा कुछ अधिक होता है । एक दिन फटे पुराने बुर्क़े में एक निर्धन मुसलमान भिखारिन उनके द्वार पर उपस्थित हुई। उसने प्रश्न किया कि उसे भी ज़िकात में से कुछ हिस्सा दिया जाये। अम्मां जी ने तिनक कर कहा "अब तो ज़िकात बट चुकी है अगले साल आना" भिखारिन ने फिर मिन्नत समाजत के साथ विनती की कि सख़्त ज़रूरत है किसी न किसी तरह उसकी मदद की जाये । इस पर अम्मां जी ने फ़रमाया चली जाओ वरना चुटिया पकड़वा कर निकलवा दूंगी ।" ग़रजमन्द दीवाना होता है । उस दुखिया निर्धन ने अपनी मजबूरी और ज़ोरदार तरीक़े से कहनी शुरू कर दी और फिर मांग की कि उसको जैसे भी हो ख़ाली हाथ न भेजा जाये। अम्मां जी को क्रोध आ गया और उन्होंने वही किया जो पहिले कहा था घिसट घिसट कर जाते हुये उस औरत ने कहा "इन्शा अल्लाह, आइन्दा ज़िकात बांटने के लिये अल्लाह मियां तुम्हें इस का अहल (योग्य) नहीं छोड़ेगें।

चन्द ही दिनों बाद घरेलू झगड़ों ने वह तबाही मचाई कि अम्मांजी के खाने के लाले पड़ गये । और भगवान ने वास्तव में उन्हें अगले साल दान पुण्य करने योग्य ही नहीं छोड़ा । अब पाठक स्वॅय फ़ैसला कर लें कि यह बददुआ दी नही गई बल्कि दुष्ट व्यवहार द्वारा ले ली गई । किसी का जी दुखाओगे तो उससे बददुआ निकलेगी, किसी को खुश करोगे तो वह दुआ देगा । सूखे पत्तों को दबाकर देखिये चुरमुर की आवाज निकलती है ।

दुआ का एक ऐतिहासिक उदाहरण देखिये । जब अकबर बादशाह नमाज़ पढ़कर निवृत हुये तो पास बैठे श्री गुरूनानक जी से बोले आप हमारे साथ नमाज़ में शरीक नहीं हुये ? गुरूनानक देव जी ने फ़रमाया "तुम तो काबुल में घोड़े ख़रीदने में लगे हुये थे नमाज़ कहाँ पढ़ रहे थे ।" वास्तव में अकबर नरेश को नमाज़ के फ़ौरन बाद काबुल से घोड़े ख़रीदना था । यही विचार नमाज़ के दौरान भी मस्तिष्क में घूमता रहा । और नियत इबादत से हट गई । अकबर बादशाह ने सत्य को ठुकराया नहीं बल्कि गुरूजीकी हक़ बयानी और चमत्कारी दृष्टि से इतने प्रभावित हुये कि उनके साथ हो लेने को तैयार हो गये । गुरू जी ने ख़ुश होकर दुआ दी "तू राजपाठ करने को पैदा हुआ है और सात पुश्त तक राज्य करेगा । चुनाँचेः सात ही पुश्तों तक मुग़लिया वन्श ने राज किया । (बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगज़ेब, अकबर) औरंगज़ेब के पांच लड़के थे सुल्तान मुहम्मद, मुअज्ज़म, आज़म, काम बख़्श, अकबर । अकबर ने काम बख़्श और आज़म का वध कर गद्दी प्राप्त की थी । इसके बाद इस वन्श का शीराज़ा बिखर गया और शासन सत्ता समाप्त हो गई । दुआ देने वाला साधू सन्यासी ही नहीं मामूली से मामूली आदमी भी हो सकता है । इसमें एकाग्रता का प्रभाव काम करता है । यदि इसमें कोई कमी रह जाये तो सन्त महन्त की दुआ भी बेअसर हो सकती है ।

सिख गुरू अर्जुन देव ने 1617 में जहांगीर के लड़के खुसरो को

आर्शीवाद दिया था । जहांगीर इस आर्शीवाद से नाखुश हो गया । और उसने उनको सज़ाये मौत का हुक्म दे दिया । उनके लड़के को 12 साल तक के लिये जेल मे डाल दिया । खुसरों रो रो कर मर गया । जहांगीर के चार लड़के थे ख़ुसरो, ख़ुरर्म, शहरयार, परवेज़ । ख़ुर्रम शाहजहां के नाम से गद्दी पर बैठा और तीनों हुकूमत की गलियों में ख़ाक छानते फिरते रहे ।

छोटे छोटे लोगों मैं भी ऐसी चमत्कारी घटनायें दुनिया भर में रोज़ घटती रहती है । दुआ और बददुआ के प्रभाव से प्रभावित होने का मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव भी है । कभी कभी दुआयें देर से असर करती देखी गई हैं । एक बार मेरे जन्म स्थान मुन्डिया राजा गांव में एक बढ़ई लकड़ी का काम करने वाला अली बख्श रहते थे । उनकी धेवती (लड़की की लड़की) उनके पास रहा करती थी । उन्होंने किसी कारण वश उस कन्या को उसके मां बाप की मरज़ी और आज्ञा के बिना किसी ज़रूरतमन्द के हवाले कर दिया। उसने उस लड़की को ले जाकर अपने घर निकाह कर लिया । मां बाप को पता चला तो वे अली वख़्श के पास आये । उसकी मॉ के रोने चीख़ने की आवाज़ गांव के बाहर ही से लोगों को सुनाई देने लगी थी गांव की नर नारी अपने अपने घर से बाहर निकल आये और उसे देखने लगे । रोते रोते उसके मुंह से बार बार यही बात निकल रही थी "बाप बन्दे तू कोढ़ी हो । तूने मुझसे पूछा भी नहीं और मेरी मासूम सोनी सी लड़की को बेच डाला ।" इस घटना के दस बारह साल बाद अली बख़्श कोढ़ी हो गया । और मुहल्ले वालों की दया के सहारे उसके अन्तिम दिन व्यतीत हुये । अब कई साल हुये दोनों अल्लाह तआला को प्यारे हो चुके हैं।

एक बार 1956 में मेरे जीवन में एक हसीन हादसा हुआ । मैं अपने निवास स्थान मुन्डिया राजा में छप्पर के नीचे सो रहा था। एक नौजवान भिखारी आया । मैंने उससे कहा तुम तो नौजवान हो । तन्दरुस्त हो फिर भी भीख मांगते हो । (मैंने कहा तो नहीं

लेकिन "तुमको शर्म नही आती" यह भाव इसी वाक्य में छिपा हुआ था ।) वह कुछ बोलता इससे पहले ही मेरे निकट मेरे परम पूजनीय स्वर्गीय पिताजी श्री मुन्शी लाल शर्मा बोल उठे "भिखारी से तर्क नही करते हैं गृहस्ती का नियम है कि जो भी बन पड़े भिखारी को दे दें किसी को ख़ाली हाथ नहीं भेजना चाहिये । निरादर करना बुरी बात है । माताजी ने कुछ आनाज लाकर उसको दे दिया । वह दुआयें देता चला गया । और मै भीगी बिल्ली सा चुप चाप पड़ा पड़ा सोचता रहा । तभी मैंने मन ही मन प्रतिज्ञा की और इस नियम का पालन करने का वृत लिया ।

मैने विलारी स्टेशन रोड पर अपना अस्पताल बनाने के लिये तीन बीघे ज़मीन ले रखी थी जिसमें माली की एक कोठरी भी बनी हुई थी और फलों के पेड़ लगे हुये थे एक कुआं भी बनवा दिया था । सुबह को प्लाट पर गया और हप्पू माली को आदेश दिया कि रात को यहां कोई भी ठहरे उसकी हर आवश्यकता पूरी कर दी जाये कल्लूमल बनिया तुम्हें सब कुछ देगा । मैने कह रखा है, उसका बिल मै· चुकता कर दिया करूंगा । एक दिन शाम को एक फ़क़ीर आकर वहां ठहरा, हप्पू ने आदेशानुसार उसकी आव–भगत की और विनय पूर्वक खाने पीने के बारे मे पूछा, साधू बोला, "इस जंगल में तू हमारे लिये कहां से खाने पीने को लायेगा ? हप्पू ने सविस्तार मेरा प्रबंध बताकर उस महात्मा को सन्तुष्ट कर दिया । सन्त ने कोई भी इच्छा प्रकट नहीं की वह चार पाई तक पर नहीं सोया और सुबह को चलते समय एक तरह के बीज एक क्यारी में बिखराकर यों कहता चलता बना "हमारी यह बूटी अब यहां से कभी नहीं जायेगी और यहां तीन मन्ज़िल ऊंची कोठी बनने वाली है, मेला लगा रहेगा । और लक्ष्मी धन वर्षा करेगी । वह बीज ज्यूलाई में उग आये । मेरे पिताजी भांग के पत्ते काली मिर्च और काला नमक मिलाकर चूर्ण बनाया करते थे । और रात को सोते समय आठ आने भर खा कर सो जाया करते थे । वह भांग समझ कर उसके पत्ते [illegible] चूर्ण खाकर

सो गये तो बारह बजे के क़रीब उनकी हालत ख़राब हो गई । बड़ी मेहनत से वह ठीक हुये । मैंने गुस्से में उस साधू को बड़ी सख़्त सुस्त कहीं उन तमाम पौधो को जिनपर अभी फूल भी नहीं आया था खड़े होकर अपने सामने एक एक पौधा उखाड़ दिया। अगले साल ज्यूलाई मैं फिर वही पौधे दुगने क्षेत्र में उग आये । मैंने उनको भी उखड़वा दिया । और उस तमाम टुकड़े में मक्का बुवा दी । ताकि निकाही गुड़ाई के दौरान एक एक पौधा समाप्त हो जाये इतने पर भी तीसरे साल ज्यूलई में वही पौधे तमाम खेत में उग आये। मैं अचम्भे में था कि जिन पौधो को बीज आने से पूर्व ही उखड़वाकर बाहर फिंकवा देता हूं तो वह उग कहाँ से आते हैं । अब की बार मेरे नौकर हप्पू ने मुझसे कहा कि "यह साधु की वूटी है" और वह कहकर गया था कि यह बूटी कभी नहीं जायेगी । आपने काफी कोशिश कर ली लेकिन इसका उगना ख़त्म नहीं कर पायें इसलिये अब इसका नाश करने की कोशिश करना ठीक नहीं है । देखो जंगल में मंगल है तीन मन्ज़िल कोठी बनी खड़ी हैं, सुबह से शाम तक बीमार आते रहते हैं । मेला लगा रहता है । दौलत वरसती रहती है । साधू की हर बात पूरी हो गई है। "मैने उसकी बात मान ली और पौधे नहीं उखड़वाये । आज बत्तीस साल हो गये है वे पौधे बराबर जहां तहां उगते रहते हैं । लेकिन कमाल यह है कि मेरे चमन की सीमा से बाहर एक पौधा भी नहीं उगता । जबकि इस अवधि में दो बार सैलाव भी आ चुके हैं। उस सन्त की दुआ का प्रमाण अभी तक मेरे साथ जुड़ा हुआ है जिसकी मैने कोई सेवा भी नहीं की ।

आप जितना जिस व्यक्ति को खुश कर देंगे । उतनी ही अच्छी दुआ उससे प्राप्त होगी । सेवा भाव में पवित्रता, सौहार्द, सम्मान, स्नेह, प्रगाढ़ सहानुभूति होना आवश्यक है । और परम आवश्यक है सेवक का विनम्र भाव ।

9

सत्यमेवजयते

यह शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है । **सत्यं**-सच्चाई, **इव**-ही, **जयते**-जीतता है । अर्थात सत्य ही जीतता है । इस मन्त्र की उत्पत्ति कब हुई ? किसने इसको जन्म दिया ? किस घटना से प्रभावित हाकेर इसका अविर्भाव हुआ ? कुछ नहीं कहा जा सकता । हां यह सत्य है कि यह अशोक महान की लाट पर तीन शेरों के नीचे अवश्य खुदा हुआ है । अशोक 269 वर्ष ईसा पूर्व गद्दी पर बैठा था । उस समय उसकी आयु पच्चीस वर्ष की थी और चालीस साल तक उसने सफल राज्य किया । विन्दुसार पिता था और जनपकल्याण ब्रह्मणी इसकी मां थी । इससे प्रकट होता है कि उसमें धार्मिकता थी और यह लाट इन्ही चालीस साल के शासन में बनी होगी । यानी वाइस सौ छप्पन वर्ष इस मन्त्र की आयु हो सकती है । जो हो, यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका सृजनहार कोई कवि, कोई मनीषी कोई संत या महात्मा ही होगा । इसीलिये यह सुन्दर, अर्थयुक्त और सर्वप्रिय है । हमारी सरकार भी इस पर विश्वास रखती है ।

यह एक अन्धविश्वास है । परम्परा है और अंधेरे में रस्सी का सांप बनी पड़ी है । मुझे कोई कुछ कहे मगर मैं इसमें विश्वास नहीं रखता । मै इतना तो मानता हूँ कि सत्य जीतता है । सत्य की जीत होती है । लेकिन सत्य ही जीतता है, मै इसको नहीं मानता साम्यवादी दल को बदनाम करने के लिये चुनाव होने से पूर्व ही हिटलर ने एक रात को पार्लियामेंट के भवन में आग लगवा दी और यह प्रचार करवा दिया कि इस भवन में आग लगाना साम्यवादी दल के नेताओं की करतूत हैं । इस घटना से नाज़ी दल को अधिक लाभ पहुंचा और अप्रैल 1942 की रीशटाग ने अपने सब अधिकार हिटलर को सौंप दि्ये । साम्यवादियों को बुरी तरह कुचला गया। अब हिटलर जर्मनी का सर्वे सर्वा हो गया । यहाँ सत्य की क़तई भी जीत नहीं हुई और "सत्यमेव जयेत" सही सिद्ध नहीं होता । यह तो रहा राजनैतिक प्रमाण अब धार्मिक दृष्टि कोण से देखिये। लाख का घर बनाकर उसमें पाण्डवों को भस्म करने वाले, बिना लड़े सुई की नोक बराबर भी राज्य न देने वाले, पाँसे चुराकर जुअे में द्रोपदी को जीत कर उसको भरी सभा में अपमानित करने वाले, अभिमन्यु को धोखे से मारने वाले, पाण्डवों के पुत्रों को सोते पर वध करने वाले, श्रीकृष्णजी द्वारा सुलह की बात को ठुकराने वाले घमन्डी कौरवों का महाभारत में कोई नाम लेवा और पानी देवा शेष नहीं बचा । जबकि पाण्डवों में पांचों तो बचे ही द्रोपदी भी वची और अर्जुन का पोता परीक्षित भी बचा जिसने सैंतीस साल राज्य किया यह तो रहा तसवीर का एक रूख़ जिसकी बिना पर यह कहा जा सकता है कि सत्य की जय हुई और असत्य या अधर्म की पराजय।

लेकिन जिसको आप सत्य की जीत मानते हैं उस जीत में अस्त्र शस्त्र लेकर सत्य कहीं भी "गाण्डीव" के साथ नज़र नहीं आता । जब श्रीकृष्ण जी ने वब्रुवाहन की अद्वितीय वीरता देखी और उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा (मैं हारने वाले का साथ दूंगा" वब्रुवाहन अर्जुन का पुत्र था और यह जानता था कि कौरवों के सामने पाण्डवों की शक्ति कमज़ोर है इसलिये पराजय पाण्डवों की सम्भव है । उस बेचारे को

यह क्या पता था कि बिन्दुसार के एक सौ एक़ पुत्रों में से सौ मारे जाने के बाद अशोक महान की भांति, कृष्ण केवल पाण्डवों ही को जीवित रखेंगे बाकी सभी को रण वेदी पर स्वाह कर देंगे) सुनकर घवरा गये और उन्होंने छल से उसका सिर दान में मांग लिया। भीष्म पितामह के बाणों से विनहित अर्जुन मूर्छित होकर जब नीचे गिर पड़ा तो श्री कृष्ण जी ने रथवान ही बने रहने की प्रतिज्ञा को त्याग कर चक्र हाथ में उठा लिया और अर्जुन को

स्वर्धममपि चावेक्ष्य न विकम्पितर्म हसि ।
धर्म्यां सिद्ध युद्दाच्छ मौ ऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ।।

(स्वधर्म को समझ कर भी तुझे लड़ने से हिचकिचाना उचित नहीं है । क्योंकि धर्म युद्ध की अपेक्षा क्षत्रि के लिये और कुछ अधिक श्रेयस्कर नहीं हो सकता) का उपदेश देने वाले स्वंय लड़ने को खड़े हो गये ।

भीष्म पितामह (दादा) को द्रुवद के पुत्र अम्बा शिखन्डी को युद्ध क्षेंत्र में उनके सामने खड़ा करके छल से मारा, जैसे राम ने बालि को पेड़ की आड़ से मारा था भीष्म पितामह स्त्री रूप के सामने हथियार नहीं उठाते थे यह उन की आन थी ।

जयद्रथ को मारने के लिये श्री कृष्ण जी ने माया के वादलों में सूर्य को छिपाकर, रात्रि का दृश्य उपस्थित कर, अर्जुन को चिता में बिठाकर पास आ खड़े हुये जयद्रथ को संकेत कर अर्जुन से मरवा दिया और सूर्य दिखा दिया, यदि ऐसा नहीं होता तो अगले दिन अर्जुन नहीं होता ।

दुर्योधन को मारने के लिये श्री कृष्णजी ने भीम को आदेश दिया था कि गदा उसकी जंघा में मार दें वरना यह मरेगा नहीं जैसे विभीषण ने राम को रावण की नाभि में तीर मारने को कहा था । गदा कटिभाग से नीचे नहीं मारी जाती है यह नियम है । मगर श्री कृष्ण जी ने नियम का उल्लंघन किया और दुर्योधन की टांग तुड़वा दी

गई । वह वहीं तालाब पर तड़प तड़प कर मर गया । युधिष्ठर जैसे सत्यवादी से मिला जुला सत्य केवल इसलिये बुलवाया गया कि द्रोणाचार्य का ह्दय भंग हो जाये । स्वार्थ वश युधिष्ठर ने श्री कृष्ण जी की युक्ति मान ली । और "अश्वत्थामा हतो, नरो व कुंजरों" का उच्चारण कर दिया । इसके अन्तिम आधे वाक्य को जो उन्हें सच्चा ठहराता था शंख ध्वनि में दबा दिया ? और पूर्वाध भाग से वह झूटे सिद्ध हुये जिसकी वजह से उन्होंने अपनी प्रतिज्ञावश हथियार डाल दिये और निहत्थी स्थिति में शहीद हो गये । असहाय स्थिति में श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को कर्ण पर तीर चलाने का आदेश दिया था । इन तमाम ऐतिहासिक मिसालों से यह स्पष्ट होता है कि सत्य से अधिक असत्य की जीत हुई है छल की जय हुई है ।

विक़ारे ख़ूने शहीदाने कर्वला की क़सम ।
यज़ीद मोर्चा जीता है जंग हारा हैं ।।

(दिवाकर राही)

यह कहकर सन्तोष तो कर लिया जाता है मगर यज़ीद की कई पुश्तों ने राज्य किया और यह वहत्तर के वहत्तर शहीद हो गये । धर्म के रक्षार्थ इमाम हुसैन की दुनिया में लाजवाब, बेमिसाल, कुर्बानी और शहादत उनकी अमरता का कारण तो वनी "इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद" यानी मुसलमानों का सिर शान से ऊंचा तो हुआ मगर भौतिक विजय तो यज़ीद ही की हुई और सत्य निष्क्रय सिद्ध हुआ । धार्मिक दृष्टिकोण कुछ भी हो मुझे तर्क में नहीं फंसना है जिस प्रकार "मारो, मत जाने दो" वाक्य के केवल पढ़नें के ढंग ही से दो अर्थ हो जाते हैं इसी प्रकार तार्किक दृष्टि और धार्मिक दृष्टि हर घटना के दो अर्थ निकाल देती है । धूप की वास्तविकता तो वही रहती है लेकिन रंगीन चश्में से उसका रंग भी चश्में के ही रंग का हो जाता है । टर्की के सुल्तान मुस्तफ़ा तृतीय 1717–1773 को उसके अपने ही चाचा सुल्तान उस्मान ने गद्दी प्राप्त करने के लिये हकीम द्वारा दवा के रूप में विष दिलवाने का षडयन्त्र रचा जब हकीम विष का कटोरा लेकर सुल्तान के समक्ष पहुँचा तो उसको

कुछ शक हो गया । और हकीम से पहिले खुद ही एक घूँट दवा पीने को कहा । सुल्तान उस्मान पीछे खड़ा खड़ा यह सोचते ही सोचते भय से मर गया कि हकीम के तड़प तड़प कर मरते ही षड़यन्त्र का भेद खुल जायेगा । और उस्मान का गला काट दिया जायेगा। इस घटना में "जैसी करनी वैसी भरनी" की बू तो आती है मगर सत्य का कोई चमत्कार दृष्टिगोचर नहीं होता मुस्तफ़ा की दूरअन्देशी की जीत नज़र आती है और इसी दूरअनदेशी द्वारा जन्मा षडयन्त्र खुल जाने का भय उस्मान की मृत्यु का कारण बनता है ।

टीपू सुल्तान जो इतिहास में स्वतन्त्रता का हामी माना जाता है, फ़तेह मुहम्मद के पुत्र हैदर अली का लड़का था । टीपू के दादा मैसूर के हिन्दू राज्य में फ़ौजदार थे और उन्हें राज्य की ओर से बुदी कोट की जायदाद मिली हुई थी अनपढ़ हैदरअली बुदी कोट ही में जन्मा था । उसकी वीरता से खुश होकर उसे मैसूर राज्य की सेना में भर्ती कर लिया गया । कुछ दिनों बाद वह सीमान्त प्रदेश का संरक्षक नियुक्त कर दिया गया । 1755 में वह हिन्दीगल का फ़ौजदार बना । और धीरे धीरे वह प्रधान सेनापति बन गया। 1763 में बदेनूर राज्य गद्दी के दो दावेदार खड़े हो गये । हैदर अली ने चालाकी पर अमल किया एक दूध पीते बच्चे का साथ दिया जिसमें उसका निजी स्वार्थ निहित था । बड़ा मारा गया बच्चा गद्दी पर बिठा दिया गया । और हैदर अली उस का प्रधानमन्त्री बन गया । कुछ दिनों बाद हैदर अली ने भारत की प्रसिद्ध उपज "ग़द्दारी" का अश्रय लिया और उस बच्चे को छल से मारकर स्वंय वहां का शासक बन बैठा लार्ड बैलेज़ली ने 1799 में श्री रंग पट्टम में टीपू को दुर्ग के सामने फाटक पर मार डाला । उसी के लोगों ने अन्दर से फाटक बन्द कर दिया और उसको अन्दर प्रवेश तक नहीं करने दिया । हिन्दू राजा के मुलाज़िम हैदर अली ने राजा के साथ ग़द्दारी की तो टीपू के मुलाज़िमों ने टीपू के साथ ग़द्दारी की । अन्त कुछ भी हुआ परन्तु प्रवल जीत यहां असत्य और छल

ही की हुई । इलतुतमिश के पुत्र नासिरउद्दीन को बीमारी की हालत में 18 फरवरी 1266 को बलवन ने विष देकर मार डाला । बलवन के पोते कैमूर्स को 1290 में विष देकर मार दिया गया । नासिर उद्दीन की तरह बलवन का वन्श भी नष्ट हो गया ।

अकबर के शिक्षक और प्रधानमनत्री बेरम खां ने तार्गविग को मार डाला तार्गविग के लड़के ने बैरम खां को हज करते जाते समय 1561 में रास्ते में मार डाला ।

राज्य पाने के लिये जहांगीर ने अपने बाप अकबर के साथ विद्रोह किया था? खुसरों ने अपने बाप जहांगीर के साथ विद्रोह किया था।

1817 वर्ष ईसा पूर्व महाराजा अशोक ने पोत्र वृहद्रथ के सेनापति पुष्प मित्र ने नृप का वध कर 36 वर्ष तक राज किया पुष्प मित्र के पोत्र देव भूतित के सेनापति वसुदेव कण्व ने अपने नृप का वध कर गद्दी प्राप्त की ।

रिपुन्जय को उसके मन्त्री पुलिक ने विद्रोह कर मार डाला और गद्दी छीन ली पुलिक के लड़के बालक को उसके सामन्त भट्टिय ने विद्रोह करके मार डाला और 543 ईसा पूर्व गद्दी हासिल की ।

इन चुटकीं भर ऐतिहासिक प्रमाणों से इस बात की पुष्टि होती है कि सत्य जीतता है । और "जैसी करनी वैसी भरनी" की कहावत को बल मिलता है । लेकिन निःसन्देह यह भी कहा जा सकता है कि इस दुनिया में आदि काल से जितना असत्य जीता है उतना सत्य नहीं जीता । कुछ मेरे व्यक्तिगत अनुभव सुनिए ।

एक दिन क़स्बा बिलारी में सड़क के किनारे ठीक नौ बजे दिन के रिक्शे पर से उतारकर एक बैंक मैनेजर को मारकर खाइयों में डाल दिया गया । क़ातिल को भी कई दिन बाद पकड़कर बन्द

कर दिया गया । इस पर मुक़दमा चलाया गया । मगर ऐसे ज़ालिम और क्रूर के ख़िलाफ गवाही देकर अपनी या अपने बच्चों की जान ख़तरे में कौन डाले चुनाँचेः गवाहों के सहारे इन्साफ़ करने वाली अदालत ने विवश होकर उसको वाइज़्ज़त छोड़ दिया । क्योंकि गवाही न मिलने के कारण उसको निर्दोष माना गया ।

इसी तरह की अनेकों घटनायें संसार मे रोज़ घटती रहती है। वकीलों की शतरन्जी चालें, कतरनी सी जीभ अदालत की आंखों में ख़ाक झोंककर सोने की तलवार से क़ानून और इन्साफ़ का गला काटते रहते हैं ।

रात के तीन बजे मेरे गेट पर कोई परेशान हाल मुझे बार बार टेर रहा था मैंने उठकर देखा तो मेरे पड़ोस में स्थित पी.डब्लू.डी. की कोठी का चौकीदार था । "क्यों भाई ? क्या बात है जो इतने परेशान हो ?" मेरे मुँह से सवाल फूटा । वह बोला मेरे घर में डकैत घुस गये है । दुल्हन को तंग कर रहे है और जवान लड़की को खींच कर जंगल की तरफ़ ले जा रहे हैं । आप थाने को फ़ोन कर दें पुलिस भी आई और अपना काम भी कर गई । मैं सुबह चौकीदार के पास पहुंचा । हक़ीक़त समझी । कुछ दिनों बाद डकैत पकड़े गयै । और तमाम गहने व कपड़े पकड़े गये । लेकिन वह ग़रीब चौंकीदार अपनी मेहनत की कमाई और दुल्हन के गहनों को न पा सका । क्योंकि क़ानूनन उन्हीं जैसे नौ गहने और बनवा कर उनके पास रखे गये और फिर दुल्हन को पहिचानने को कहा गया । कोई भी दुल्हन अपने गहनों को इतनी बारिकी से कहाँ देखती है । जो उसी जैसे दसों में से पहिचान कर अपने निकाल ले। फलतः डकैतों से छीने गये गहने पुलिस से नहीं छीने जा सके । अब यह भयभीत चौकीदार मेरी ही कोठी में किराये पर रह रहा है । यहां कौन जीता ? पाठक स्वयं इसका निर्णय कर लें । यहां स्पष्ट सत्य की हार हुई है । इस प्रकार हम यह कह सकते हैं । कि "सत्यमेव जयते" ग़लत है । बल्कि असत्य और अधर्म भी जीतता है । सत्य

जीतता ज़रूर है लेकिन सत्य ही जीतता है यह गलत है । यहां केवल गहराई तक पहुँचने और वास्तविकता को समझने का सवाल है ।

धार्मिक लोगों के दिमाग़ में अन्धविश्वास के प्रवेश के लिये तो बहुत बड़ा द्वार खुला हुआ है मगर तर्क का प्रवेश बिल्कुल ही वर्जित है । धर्म और तर्क का सम्बन्ध सांप और न्योले जैसा है । पारद और शिक्षा जैसा रिशता है हम तर्क से काम लें तो हर वस्तु की वास्तविकता सामने आ जायेगी ।

यदि "सत्यमेव जयते" किसी विद्वान कवि या धार्मिक गुरू की देन है तो भी हम यह क्यों मान लें कि इसमें कोई त्रुटि नहीं होगी या विद्वान कोई ग़लती नहीं करेंगा । हमारे राष्ट्रीय गान तक में ग़लती है जबकि वह भी मामूली विद्वान की देन नहीं है और मामूली लोगों द्वारा मान्य नहीं है । देखिये ।

जन गण मन अधिनायक जय है । भारत भाग्य विधाता ।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा । द्राविड. उत्कल बंग ।।

संविधान परिषद ने 24 जनवरी 1950 ईस्वी को "जन गण मन अधिनायक" को राष्ट्रीयगान घोषित किया था । सम्भव है कि यह गान दो चार वर्ष पूर्व ही रचा गया होगा । लेकिन यह भी सर्व विदित है कि भारत देश 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ था। कहने का अभिप्राय यह है कि राष्ट्रीगान के लेखक को यह ज़रूर मालूम होगा । कि सिन्धु की एक इन्च धरती भी भारत में नहीं है । वह सारा पाकिस्तान में चला गया फिर भारत के राष्ट्रीय गान में सिन्धु को जौड़ने का क्या औचित्य था । कविता का वज़न ही सही करना था तो इसकी जगह गुआ लिखा जा सकता था और यह लाइन यों हो जाती ।

पन्जाब गुआ गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल वंग ।

ग़लती तो केवल भगवान से नहीं होती है बाकी सबसे होती है। छोटे से छोटे ही नहीं बल्कि बड़े से बड़े भी ग़लतियां करते हैं । इसलिये कविगण ही इस पाप से कैसे बच सकते हैं । जिस प्रकार "सत्यमेव जयते" अशोक की लाट पर चढ़कर सब की जुबानों पर चढ़ गया । इसी प्रकार फिल्मों के गाने भी जन साधारण में प्रसिद्ध हो जाते हैं । ख़ूब ज़ोर शोर से गाये और सुने जाते हैं । कोई उनकी कमियों और त्रुटियों पर ध्यान तक नहीं देता जैसे

उस रेशमी पाज़ेब की झन्कार के सदके ।

पाज़ेब जैसा कि नाम से ज़ाहिर है पैरों में पहना जाने वाला गहना होता है । अमीर लोग सोने की पाज़ेब पहनते थे ग़रीब लोग चांदी की पाज़ेब बनवा लेते थे लेकिन सिल्की या रेशमी पाज़ेब इतिहास में कहीं सुनने को नहीं मिलती । चलो इस गीत के लेखक ने अपने सपने में किसी को रेशमी पाज़ेब पहने देख भी लिया हो । जिसकी बिना पर यह आइडिया तैयार किया हो । तो यह कदापि सम्भव नहीं हो सका कि रेश्मी पाज़ेब में "झनकार" पैदा हो जाये । मगर फ़िल्मी कलाकार की रेश्मी पाज़ेब भी झनक जाती है ।

इतना है तुमसे प्यार मुझे मेरे राज़दार ।
जितने के आसमान में तारे हैं बेशुमार ।।

ढेर सारे प्यार और असीम प्रेम को बेशुमार तारों से उपमा देने वाले कवि को आलंकारिक दोष का भी ज्ञान नहीं भला बेशुमार तारों की प्यार से क्या तुलना । मेरे दिल में इतने ज़ख़्म हैं जितने कि आकाश में तारें हैं । यह उपमा तो ठीक हैं या तुम्हारे सिर पर इतने बाल हैं जितने कि आकाश में तारे हैं, यों भी ठीक है।

हाल क्या है दिलों का न पूछों सनम ।
आपका मुस्कुराना ग़ज़ब हो गया ।।

यहाँ शब्द "दिलों" का प्रयोग ग़लत है क्योंकि किसी के भी एक से अधिक दिल नहीं होता है और कोई भी प्रेमी अपनी प्रेमिका के व्यवहार से सुखी या दुखी होकर अपनी ही स्थिति का वर्णन करता है, सारे पड़ोसियों, या महफ़िल वालों या दर्शकों का नहीं । प्रेमी अपनी प्रेमिका पर दूसरे की नज़र पड़ने देना भी गवारा नहीं करता। दूसरा दोष इसमें कर्ता और क्रिया का है । पूछो क्रिया का करता "तुम" है यानी तुम पूछो । दूसरी लाइन में "आपका मुस्कुराना ग़ज़ब हो गया" । एक ही व्यक्ति को एक ही साथ तुम और आपसे सम्बोधन करना काव्य दोष होता है । इसलिये इस का शुद्ध रूप हो सकता था ।

हाल क्या है मिरा ये न पूछें सनम ।
आपका मुस्कुराना ग़ज़ब हो गया ।।
या
हाल अपना बताऊँ मैं क्या ऐ सनम ।
आपका मुस्कुराना ग़ज़ब हो गया ।।
या
हाल क्या है हमारा न कुछ पूछिये ।
आपका मुस्कुराना ग़ज़ब हो गया ।।

जो भी हो कवि ने कविता में दोष का ध्यान किये बिना ही काव्य रचना कर डाली और भावुकता वश लिखता चला गया । इसी प्रकार मानव कृतियों में कोई न कोई कितनी बार हम ग़लत बोलते हैं जैसे आदमी के प्रयोग की चीज़ को मच्छर दानी जहाज़ों के खड़े होने की जगह को बन्दरगाह, पशुस्थान को चिड़ियाघर की संज्ञा देते हैं । कहते क्या है अर्थ क्या लगाते हैं । दोष रह ही जाता है इसलिय सत्यमेव जयते की जगह सत्यम् जयते होना चाहिये था । क्योंकि छल, कपट, बल बुद्धि और युक्ति की भी जीत होती है । जैसे राम गुप्त को जब शकों ने हरा दिया तो उसको शकों से सन्धि करनी पड़ी । और अपनी रानी ध्रुव देवी को भी सन्धि की शर्तों के अनुसार शक नृप को समर्पित करने का प्रस्ताव मानना पड़ा । राम गुप्त का छोटा भाई चन्द्र गुप्त बहुत कूट नीतिज्ञ था

उसको यह असह्य था वह स्वयं ध्रुवदेवी के वेश में राना रतन सिंह की पत्नि रानी पझिनी की भांति सहेलियो के बहाने पालकियों में सैनिक बिठाकर शकों के शिविर में पहुँच गया । जब कामातुर शक नृप ध्रुव देवी का आलिंगन करने के लिये आगे बढ़ा तब चन्द्रगुप्त ने उसका वध कर दिया । और अपने सैनिकों की मदद से शकों को मार भगाया । और उसका राज भी छीन लिया ।

712 ईस्वी में जब मुहम्मद बिन क़ासिम ने राजा दाहिर के दो टुकड़े कर दिये और उसकी रानी लादी की शादी अपने साथ कर तथा उसकी जवान लड़कियों (सूर्य देवी और परमल देवी) को खलीफ़ा के पास भेज दिया । रास्ते में दोंनों ने उसके अत्याचारों का बदला लेने की तरकीब सोची । उन्होंने ख़लीफ़ा के पास पहुंचकर शिकायत की कि मु. बिन क़ासिम ने उनका कौमारित्व भ्रष्ट करके यहां भेजा है । इस पर वह बड़ा क्रुद्ध हुआ । और मु. बिन क़ासिम को भैसे की ताज़ा खाल में सीकर मंगवा भेजा और रास्ते ही में वह दम घुटकर मर गया । यह सत्य की जीत नहीं युक्ति की जीत है।

अंग्रेज़ों की युक्तियां भी प्रसिद्ध है। इस जाति ने सारे संसार में युक्ति पूर्वक तरीक़ों ही से राज्य किया है । भारतीय नरेशों में भी कहीं कहीं बैसाख की गलन की तरह युक्ति दिखाई देती है । वहरहाल इस दुनिया में सत्य के अलावा और चीज़ों की भी जीत होती है और "सतयमेव जयते" ग़लत है ।

10

स्वर्ग और नरक

मानवता के प्रेमियों या इन्सानियत के शौदाईयों, नेकी के पुजारियों या धर्म गरूओं का एक ही उद्देश्य रहा है कि इस संसार में हर इन्सान अच्छा आदमी बना रहे किसी भी ढंग से उसके मन और मस्तिष्क पर बुराई के बुरे परिणाम का भय बना रहे । जिस प्रकार मां बाप अपने नादान बच्चों को सड़क पर जाने से पहिले टोकते हैं, समझातें हैं, उपदेश देते हैं इस पर भी यदि उत्पाती और नटखट बच्चा नहीं मानता है तो उसको दुर्घटना ग्रस्त लोगों की दर्दनाक रोमान्चिक मन गढ़त या सच्ची वारदातें सुनाने लगते हैं । मारने पीटने की नौबत सी आ जाती है ।

ठीक इसी प्रकार स्वर्ग, नरक, जन्नत दोज़ख, हेवेन—हेल का सृजन भी हुआ होगा वास्तव में उनका अस्तित्व कुछ भी नहीं है । यह दोनों मनीषियों की कल्पनाओं के गोरख धन्धे हैं । सन्मार्ग पर चलाने के हसीन हथकन्डे हैं ।

जो भी धर्मावलम्बी या अन्ध विश्वासी मेरी विचार धारा को स्वीकार न करते हों जो भी कट्टर पन्थी मुझसे नाराज़ हों मैं उनसे नाराज़ नहीं हूं । वे मेरे बड़े भाई के समान हैं और मैं छोटे भाई के

नाते उनसे यह प्रश्न पूछता हूँ कि यदि स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व में कुछ सत्यता है तो जिस प्रकार दो दूने चार, और चार दूने आठ होते हैं । सारी पृथ्वी पर, हर विद्या में, हर एक ज़ुवान पर यह दो दूने चार और चार दूने आठ ही रहते हैं और हर धर्म का परमात्मा गुणों में समान है नामों में भिन्न भले ही हो । उसी प्रकार स्वर्ग और नर्क, जन्नत और दोज़ख़ हेवेन और हेल भी आपस में एक दूसरे के बिल्कुल समान होने चाहिये । कोई आगरे का ताजमहल देख कर आया हो तो उस का विवरण और वर्णन आगे आने वाले सभी दर्शकों के बयान से अक्षरशः मेल खाता हुआ होना चाहिये । यह क्या कि प्रत्येक अलग ही अलग बातें सुनाये ।

यदि किसी ने स्वर्ग या नर्क को देखा है या किसी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा वहां की जानकारी हासिल की है तो उसका कथन अन्य सभी कथनों से मेल खाता हुआ होना चाहिये क्योंकि भगवान ने किसी समुदाय या जाति विशेष के लिये स्वर्ग और नरक के सृजन में द्विभांति नहीं बरती होगी ।

किसी के गॉड ने छै दिनों में सब कुछ रच कर सातवें दिन किया । किसी के ख़ुदा ने "कुन" ही कहने मात्र से सब कुछ पैदा कर दिया । हमारे लिये स्वर्ग में शराब भी मिलेगी हूरें भी मिलेंगी फल मेवे आदि सब कुछ मिलेगा । हमारी औरतों को वहां जाकर क्या मिलेगा ? यह पता नही न इसका कोई ज़िक्र ही है । शायद वह अकेली ही विधवा जीवन बिताती फिरेंगी । हर कर्म के स्वर्ग नर्क का लिखित वर्णन पढ़ने के बाद पता चलता है कि वहां भी विभिन्नतायें हैं । यही बातें ये प्रकट करती हैं कि यह सब मानव कृत है । ईश्वर का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है ।

हमारा भौतिक शरीर सुख दुख का एहसास करता हैं लेकिन आत्मा को न सुख दुख होता है न कष्ट पहुंचाया जा सकता है। आदमी के शरीर द्वारा किये गये अच्छे और बुरे कार्यो के फल आत्मा

को मिलने का कोई औचित्य नहीं होता है । बाद मरने के किसी की रूह को क्या सज़ा दी जायेगी मेरी समझ में नहीं आता । कोई भी कार्य जब आदमी करता है तो उसमें अकेली आत्मा ही नहीं मन और बुद्धि भी प्रेरक होते हैं । मगर मालूम ऐसा होता है कि रूह ही को सज़ा मिलेगी और वह भी क़यामत के दिन ।

एक तरफ़ तो उसको सर्व शक्तिमान कहा जाता है सर्वज्ञ बताया जाता है। सब कुछ कर्ताधर्ता घोषित किया जाता है । दूसरी तरफ़ स्वर्ग नरक का निर्माता भी वही है । जब सब कुछ का कर्ता धर्ता वही है बिना उसकी मर्जी के कुछ नहीं होता । तो इन्सान को नेक और बद बताना तो निरर्थक ही हुआ । यदि हमारी ही तरह भगवान भी स्वंय को दुनिया में सब कुछ का कर्ता धर्ता मान लेता तो मैं यह कह सकता हूँ कि वह स्वर्ग नरक का निर्माण ही नहीं करता, क्योंकि वह समझ लेता कि हर काम उसी की मर्ज़ी से होता है फिर इन्सान गुनहगार ही नहीं ठहरता । मगर ऐसा नहीं है । इस दुनिया में भी ऐसा नहीं माना जाता हैं । यदि यहां भी उसी को हर काम का कर्ता धर्ता मान लिया गया होता तो अदालतों में किसी को जेल और किसी को रिहाई नहीं मिलती ।

आदमी की परीक्षा भी ली जाती है । मैं इस कथन में विश्वास नहीं करता हूँ हर नेक इन्सान की परीक्षा ली जाती हैं इसमें तो कोई सन्देह नहीं है लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि नेक लोगों की जांच या परीक्षा हमारा समाज लेता है भगवान नहीं वह तो "सर्वज्ञ" है । सब कुछ जानने वाले को पता है कि कौन डिग जायेगा और कौन नहीं डिगेगा । मीरा की राणा ने जांच ली, इमाम हुसैन की यज़ीद ने जांच ली, गांधी की अंग्रेज़ों ने जांच ली, ईसा की हिब्रु समुदाय ने जांच ली, मन्सूर की कट्टरपन्थी फ़िरक़े ने जांच ली भगवान ने नहीं ।

जो भगवान क़यामत तक किसी रूह की कोई सुनवाई नहीं करेगा।

रोज़े महशर ही सब का फैसला होगा तो उसने जन्नत और दोज़ख़ पहिले ही से बना कर क्यों रख दी वह तो इस काम को क़यामत से पल भर पहिले ही पूरा कर सकता था । जब इन्सान किसी भी धर्म का अनुयायी नहीं था । उसकी कोई विशेष सभ्यता नहीं थी आज भी भारत में कितने ही आदिवासी जंगलों में प्राकृतिक जीवन जी रहे हैं वह कहां जायेंगे इसका किसी धर्म में कोई हवाला नहीं मिलता सोचने की वात हैं जब वहां अपने अपने गुटों अपने अपने समथर्कों, अपने अपने अनुयाईयों ही का साथ दिया जाएगा तो उन बेचारों का क्या होगा जो यह भी नही जानते कि परमात्मा भी कोई चीज़ हैं ।

स्वर्ग नरक का विवरण मुझे तो बिलकुल ऐसा लगता है जैसे कोई मां बाप अपने बच्चे के न पढ़ने पर उस की शिक्षा में रूचि पैदा करने के लिये उसको रोज़ कुछ खाने के लिये पैसे दे देते हैं। ताकि उसी ललक में वह रोज़ स्कूल जाता रहे, या समझाते हैं कि बेटा पढ़ लिख कर बड़े हाकिम बनोगे कन्चन, कामनी, कोठी कार का सुख भोगोगे । अरदली तुम्हारे आगे पीछे घूमेंगे । नहींपढ़े तो घसीटा की तरह गर्मी धूप में नंगे उघाड़े घास खोदते फिरोगे और महान कष्ट उठाकर अपमानित जीवन बिताओगे । बच्चे इस प्रकार के भय से भयभीत होकर पढ़ने लगते हैं ।

आदमी भी स्वर्ग नर्क के भय से सचेत रहता है और अच्छे अच्छे काम करता है मेरे ख़्याल में तो बस इतना ही उद्देश्य है इस काल्पनिक गोरख धन्धे का ।

11

क्या वह दयालू हैं?

किसी निर्धन विधवा का का इकलौता लड़का जवान हुआ, शादी का समय आया । उसको सजाया संवारा गया, साफ़ा सहरा वंधा। बरसों से निराश्रित दुखी वैधन्य जीवन का बोझ ढोती चली आ रही माता, दूल्हे का चेहरा देख कर फूली नहीं समा रही थी । घोड़े पर सवार दूल्हा बैन्ड बाजे की मधुर ध्वनि के साथ विदा हुआ । थोड़ी दूर जाकर घोड़ा विदक गया और बेक़ाबू होकर उछलने कूदने लगा । जीवन में पहिली बार घोड़े पर सवार हुआ दुल्हा नीचे गिर गया और घोड़े की टापों से कुचल कर घटना स्थल पर ही दम तोड़ गया । हसीन आशाओं का ताना बाना छिन्न भिन्न हो गया। कातर ह्दय माता को इतने पर भी कहते सुना गया वह बड़ा रहीम (कृपालु, दयालु) है । वन्दे को हर हाल मैं शुक्र ही अदा करना चाहिये ।

जूट की लकड़ियों से खाना बनाती एक महिला जलती आग छोड़कर नल पर से पानी लेने गई । इसी बीच जलती जलती लकड़ियां पास ही खड़ी अन्य लकड़ियों तक पहुँच गई और आग के शोले उत्तुंग हो उठे, छप्पर तक पहुंच गये । जब वह पानी लेकर लौटी तो पूरी झौपड़ी में धुआँ था । और धूं धूं करके आग जल रही थी । अब वह और अधिक पानी लेने के लिये नल पर गई आग बुझाने लायक पानी जितनी देर में उसने नल से निकाला उतनी ही

देर में शोले और अधिक भड़क उठे और उसकी बाल्टी का पानी अपर्याप्त था । अब वह आग पर क़ाबू पाने में असमर्थ थी । कुछ निकालने के लिये अन्दर भी प्रवेश नहीं कर सकती थी । चीख़ती चिल्लाती बच्चों को पुकारती बाहर निकल गई । वह जिन फूल से बच्चों को बाहर ढूंढ रही थी वे अन्दर घर ही में घिर गये थे। और जब आग ने सब कुछ स्वाह कर दिया तो तीनों बच्चे झुल्से झुलसाये एक दूसरे से लिपटे ज़मीन पर पड़े मिले । पति जब हल जोत कर आया तो उसने सब कुछ जला पाया । उसकी आंखों में आँसू थे और ज़ुवान पर वही मुद्दत से चले आ रहे चन्द शब्द "उसकी यही मर्ज़ी थी । उसे जो अच्छा लगता है वही करता हैं उसकी अमानत थी उस ने ले ली । बन्दा कर ही क्या सकता है। वह बड़ा दयालू है पता नहीं इसमें उसका क्या राज़ हैं । वह जो भी करता है अच्छा ही करता हैं ?" ये शब्द जिनको बाबा आदम के ज़माने से अभी तक इन्सान नहीं भूला है । चाहे शादी करके फ़ौरन जंग में जाकर शहीद हुये युवक के घर वाले हों । चाहे सैलाव ज़दा इलाक़े के परेशान लोग हों, चाहे तूफ़ान पीड़ित दुखी जनता, चाहे भयावह संक्रामक रोगों से ग्रासित बीमार हो, चाहे अकाल और दुर्भिक्ष से जर्जर अधमरा निबल समान हो, चाहे व्यवसाय में निर्धन हुआ दिवालिया, चाहे लुटा हुआ अमीर हो चाहे भूखा नंगा फ़कीर, चाहे वमों की तीक्षण ज्वाला में जला हुआ शहर हो, चाहें ज़ालिम शासकों की मज़लूम रिआया, चाहे बूंद बूंद पानी को तरसते रेगिस्तानी लोग हों चाहे बर्फ़ से लदे बेचारे बर्फ़ानी लोग, अपने अपने नाक़ाबिले बर्दाश्त ग़मों और असत्य नवदुर्दान्त विपक्षओं में निहायत सब्र और सन्तोष से काम लेते हुये दुहराते वही रटे रटाये वाक्य है । मेरी समझ में अभी तक यह फ़लसफ़ा नहीं आया कि दुनिया उस परमात्मा को जो इच्छा और वासना रहित है, दयालु या कृपालु किस बिना पर कहती है

यह वाक्य एक ऐसी परम्परा बन गये हैं, जिसमें सोचसमझ का कोई दख़्ल नहीं है । दस मील दूर से आ रहा एक आदमी रास्ते

में जगह जगह मिलने वाले हर आदमी से एक मनगढन्त वाक्य कहता चला जाये । कि एक महापुरूष कह रहा है, एक हफ़्ते तक बबूल के पेड़ पर एक जनेऊ रोज़ बांधने से लड़का पैदा होगा हर सुनने वाला यही वाक्य हर जगह आम कर दे और अन्धविश्वासी लोग वैसा ही कहने लगे । और एक लम्बे समय बाद यही अन्धविश्वास एक रस्म बन जाये जैसे दक्षिणी अमेरिका में चिली और मेक्सिकों प्रदेशों में दूल्हा सुहागरात में अपनी दुल्हन के थप्पड़ या घूसा ज़रूर मारता है वरना यह समझा जाता है कि वह उससे प्यार ही नही करता है ।

कोई भी रस्म कोई भी रिवाज कोई भी परम्परा या कहावत किसी घटना विशेष से सम्बन्ध अवश्य रखती है । इसीलिये हर एक के पीछे कोई न कोई रहस्य भी ज़रूर होता है । जो लोग भगवान को दयालू बताते हैं कृपालु कहते हैं मै उनसे एक प्रश्न करना चाहता हूं । हम किसी भी व्यक्ति के प्रति, चाहे वह परिचित हो चाहे अपरिचित, देखा हुआ हो, चाहे बिना देखा, कोई भी कारण बिना चारित्रिक विशेषताओं के सुने या अनुभव किये निश्चित नहीं करतें। किसी की तारीफ़ या बुराई करने के लिये हमें कोई न कोई प्रमाण तो अवश्य ही चाहिये । दुनिया में परमात्मा को दयालू या कृपालु बताने का विचार धार्मिक ग्रन्थों से पहिले भी यदि कहीं प्रचलित था तो उसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता । यदि उसको दयालु केवल इसलिये बताया जाता है कि उसने हमें रहने को ज़मीन पैदा की, खाने को तरह तरह के मेवे, अनाज और फल फूल पैदा किये, हवा, पानी, रोशनी, बेल, बूटे, पशु, पक्षी, पैदा किये तो सांप, बिच्छू भिड़, दरिन्दे, काँटे, कष्ट, रोग, भौगोलिक यातनायें, मक्खी, मच्छर, बाघी, खटमल, पिस्सू डींगर, झींगर, आदि की बिना पर उसको ज़ालिम भी कहा जा सकता है । मगर कोई ऐसा कहेगा नहीं क्योंकि वड़ों और शक्तिशाली लोगों की बुराई करना मानव प्रवृति नहीं रही है। शैक्सपियर की उसके जीवन ही में सबने तारीफ़ की और उस को खूब सम्मान दिया । क्योंकि उसने जीवन भर राजाओं महाराजाओं

या वीर पुरूषों ही के गुनगान किये थे लेकिन उसी का युग का मार्लो था जो उससे कम विद्वान नहीं था मगर उसके जीवन में उसकों न सराहा गया न समुचित सम्मान ही मिला क्योंकि उसने झोंपड़ी वाले वेकस निर्धन, और किसान का विवरण और वर्णन किया था । फुटपाथों पर पड़े बेसहारा लोगों की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला था ।

भरी सभा में द्रोपदी को नंगा करके अपमानित करना भगवान को अच्छा न लगा और श्रीकृष्ण जी ने उसका चीर इतना लम्बा कर दिया कि खींचने वाला ही बेसुध होकर गिर पड़ा लेकिन वह नग्न न हो सकी । इब्राहिम बच्चे की ठोकरों से मक्का की तपती रेत में पानी निकल आया जो "आबे ज़मज़म" कहलाया । यह तो ऐतिहासिक घटनायें हैं । इन जैसी अनेकों घटनाओं के अतिरिक्त ध्रुव प्रहलाद अहिल्या, मत्सोदरी, यूनोस, आदि की घटनायें भी इसकी दयालुता पर प्रकाश डालती है ।

इन जैसी घटनाओं के आधार पर उसको दयालु और कृपालु बताने वाले लोग यह बतायें कि उसकी दयालुता या कृपालुता किसी व्यक्ति विशेष ही के लिये रिज़र्व है जैस भारतवर्ष में अछूत और पिछड़ी जाति के लिये रिज़र्वेशन का नियम है । क्या वह त्रिलोकी या रब्बुलआलमीन सब पर दया नहीं करता है । सबके दुख दर्द नहीं सुनता है । यदि वह सब का स्वामी है । सब पर दया करता है तो फिर असग़र से मासूम बच्चे को प्यासा तड़पा तड़पा कर अन्य लोगों के साथ शहीद क्यों कर देता है । उस दयनीय समय में उसकी दया कहां सो गई थी । हिन्दू तो इस बात को पूर्व जन्म के कुकर्मो का फल भोगना कह सकते हैं लेकिन मुसलमान लोग तो पूर्व जन्म में विश्वास ही नहीं करते और इस जन्म के मासूम बच्चे के कोई भी ऐसे कुकर्म नही हो सकते जो ऐसी यातना के भागीदार बनें । वह चाहता तो कर्बला की धरती पर बारिश कर सकता था । धार्मिक दर्शन इसका अपने तौर पर कोई भी (ईश्वर के पक्ष में) उत्तर दे सकता है लेकिन मैं तो इन प्यासे जामेशहादत पीने वाले बे गुनाहों

को भगवान की क्रूरता का शिकार ही मानूंगा । वह शहीदे अज़ीम हक़ पर कुर्बान तो हो गये लेकिन उसकी दया पर हर्फ़ अवश्य आ गया ।

द्रोपदी के चीर को लम्बा करने वाले ने सीता जैसी पतिवृता देवी को अपहरण होने से रोकने में कोई मदद नहीं की और न पाकिस्तान हिन्दुस्तान में बेशुमार अपमानित होने वाली स्त्रियों की आन बचाई । जाति और धर्म की आड़ में रात दिन होने वाले दंगे फ़िसादों में वे गुनाह और मासूमों के रक्त पात पर उसको दया नहीं आती उसके सामने गाजर मूली की तरह एक दूसरे को काटकर नदी नालों में फेंक देता हैं ।

अगर समाज में कोई क्रूर, निष्ठुर निर्दयी और दुष्ट प्रवृति का आदमी मारा जाता है तो यह सोचकर सन्तोष कर लिया जाता है कि इसके कर्म ही बुरे थे इसलिये बुरी तरह मारा भी गया लेकिन जब कोई वेख़ता बेक़ुसूर अपमानित होता है, लूटा सताया जाता हैं या मार दिया जाता हैं । और ज़ालिमों को कोई सज़ा नहीं मिलती तब ऐसा महसूस होता है कि ईश्वर के यहां न दया है न इन्साफ़ है । अनुभव तो यही बताता है शेष ईश्वर जाने ।

मेरे निकट ही एक गांव है जिसमें एक जवान लड़की मेले से लापता अपने छोटे भाई को ढूंढ़ती फिर रही थी कि कुछ गुन्डों ने उससे यह कह दिया कि वह लड़का तो गांव से बाहर तालाब के किनारे घूमता फिर रहा था । चल हम तेरे साथ उसे ढूढ़ने चलते हैं । वह अवला उनके साथ चल दी ईखों के किनारे पहुँचकर उन लड़कों ने उसका मुंह दबा लिया और चाकू की नोक पर ईख में घसीट कर ले गये सभी ने उसके साथ बलात्कार किया और गला घोंटकर मार डाला । एफ.आई.आर. दर्ज करा दी गई । पुलिस ने कई दिन तक गांव के चक्कर भी लगाये । मगर कोई भी हाथ नहीं लगा । छैः अरब की आबादी वाली दुनिया में यह मिसाल

कोई मानी नहीं रखती लेकिन पाठकगण इसीसे मिलती जुलती अनेकों घटनायें रोज़ सुनते रहते होंगें जिनकी पुतलियां भगवान की दया और कृपा की बाट जोहते जोहते फिर जाती होंगी । एक एक सांस का हिसाब रखने वाले भगवान के यहां तो च्यूंटी के मारे जाने का भी हिसाब रहता है तो फिर वह छोटी से छोटी घटना को हमारी तरह लापरवाही से कैसे टाल जाता है । वह तो त्रिलोक नाथ है ।

चौंसा की लड़ाई में अफ़गानों ने हुमायूँ को रोंध डाला । बेचारा हुमायूँ घोड़े सहित नदी में कूद पड़ा । घोड़ा पानी में डूब कर मर गया । उसी समय एक भिश्ती ने अपनी मशक में हवा भर कर नदी में फेंक दिया जिसके सहारें हुमायूँ की जान बच गई मगर आठ हजार सैनिक डूब कर मर गये । हमीदा बानों (हुमॉयू की बेगम, अकबर की माँ) ने तो ईश्वर का शुक्र अदा किया होगा कि अल्लह तआला की बड़ी मेहरबानी हुई उसने बड़ा करम किया जो हुमायूं की जान बच गई ! लेकिन आठ हज़ार मृत सैनिकों की विधवाओं ने तो ऐसे नहीं कहा होगा । वे किसने डुबोये । राजा पर दया करने वाला ग़रीबों की तरफ़ से निष्क्रय क्यों बैठा रहा ?

कामरान हुमायूँ का भाई था । वह अकबर को मारना चाहता था । बलराम ने अकबर को जब वह बालक था क़िले की उस दीवार पर बिठा दिया जहां तोप के गोलों की वर्षा हो रही थी। थोड़ी देर में हमायूँ की मदद को चारों तरफ़ से सेनायें आने लगी और कामरान ने सन्धि कर ली अकबर सुरक्षित बच गया । लेकिन एक दिन लाहौर में पुस्तकालय की सीढ़ियों पर से उतरते समय अकबर का बाप हुमायूँ गिर कर मर गया । जबकि वह नमाज़ पढ़ने को जा रहा था । यहाँ दयावान भगवान क्यों चुप बैठा रहा ।

रायसेन के शासक पूरनमल पर शेरशाह ने आक्रमण कर दिया बहुत दिनों तक घेरा चलता रहा ।अन्त में शेरशाह ने विश्वास दिलाया कि उसके परिवार वालों और सम्बन्धियों को कोई क्षति नहीं पहुँचाई

जायेगी । इस विश्वास पर पूरनमल दुर्ग से बाहर चला आया । शेरशाह ने राजपूतों का सँहार शुरू कर दिया । थोड़े से स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर कोई भी जीवित नही बचा । यहां भगवान ने अपनी दया के हाथ क्यों समेट लिये । मासूम मारे गये और ग़द्दार की चांदी कटी ।

ऊधव वैरागी हिन्दू धर्म का प्रचार करता था औरग़जेब ने उसको पकड़ कर मरवा दिया । 1672 में दो हजार सतनामी औरंगजेब ने बेरहमी से मरवा दिये गुरू तेग़ बहादुर की हत्या की गई । गुरू गोविन्द सिंह के दो पुत्रों को दीवार में जीवित चुनवा दिया । शम्मा जी की आंखे निकलवा ली गई । और 15 दिन तक कठोर यातनायें देने के बाद उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े करके कुत्तों को डाल दिये गये ।

1739 में नादिरशाह ने दिल्ली में पांच घन्टे तक मासूमों का खुन बहाया । तैमूर लंग ने 15 साल के एक लाख क़ैदियों को मौत के घाट उतार दिया ।

बेगुनाह नन्द कुमार पर वारेन हैज़टिंग्स ने आरोप लगाया और मुक़दमा चलाकर फांसी दे दी । 1857 में हैवलोक ने कानपुर में चार दिनों तक बेशुमार नरनारियों और बच्चों को मौत के घाट उतार दिया ।

कटहरे में बलवन ने तमाम बस्तियों में आग लगवा दी । नौ वर्ष से अधिक आयु वाले पुरूषों को मरवा दिया गया ।

711 ईस्वी में मुहम्मद विन क़ासिम ने देवल में 15 वर्ष से ऊपर की आयु वाले पुरूषों का वध करवा दिया ।

शाह फ़ैज़ल द्वितीय, उसके मामा, भूतपूर्व अंग रक्षक अब्दुल सलाह,

प्रधानमन्त्री नूरी और उनके परिवार वालों को भेड़ बकरियों की तरह काट डाला गया और गणराज्य की घोषणा कर दी गई ।

मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने 4 मार्च 1934 को शेख़ सईद को पकड़वा कर मृत्युदण्ड दिया और उसके छयालिस साथियों को भी यमलोक पहुँचा दिया ।

1801 में अरब के वहावियों ने करबला में हज़रत हुसैन के मज़ार को नष्ट किया अगले वर्ष नजफ़ में हज़रत अली के मज़ार की वेहुमर्ती की, यह मुसलमानों के पवित्र तीर्थ स्थान हैं ।

1860 में ईसाई द्रूज झगड़े में 61000 ईसाई मारे गये ।

1510 में बायज़ीद के उत्त्ताराधिकारी सलीम ने अपने राज्य में रहने वाले 40000 शियाओं को मौत के घाट उतार दिया ।

अक्टुबर 1951 से जून 1952 तक चीन में 450000 व्यापारियों को मार डाला गया । 1940 में चीनी साम्यवादियों के नेतृत्व में किसानों की गुरिल्ला टुकड़ियों ने जापानियों का काफ़ी नुक़सान किया। और उनके 1360877 व्यक्ति खेत रहे । 446000 चीनी भी मारे गये । 1941 के बीच दस हज़ार जापानियों ने चिन छा ची क्षैत्र में पेइचुएह ज़िलें में 4500 आदमियों को मारा । 15000 मकान जला का ख़ाक कर दिये । पानचिआताह में 1280 आदमियों का कत्ल किया और सारे मकान जला दिये । और तहख़ानों में छिपे लोगों को गैस पम्प करके मार डाला जिनकी कोई शुमारी ही नहीं है । इस प्रकार उत्तरी चीन के साम्यवादी इलाक़े की आबादी चार करोड़ चालीस लाख से घटकर ढ़ाई करोड़ रह गई । चाऊ एनलाई के अनुसार उसकी गोलियों से ग़रीब वे गुनाह 5000 मज़दूरों की जाने गईं ।

1863 में शाही फ़ौंजों ने नानकिन पर तीन तरफ़ से आक्रमण किया । हुड. ने विष खा लिया । उसके परिवार का क़त्ल कर दिया गया और हुड की लाश की क़ब्र से निकाल कर बेइज़्ज़ती की गई । 200 स्त्रियों को फांसी दी गई । 2000 लोगों को खाई में ढकेल दिया गया । एक सितम्बर 1924 को टोकियो में बड़ा भंयकर भूचाल आया 130000 की जानें गई । चार अप्रैल 1905 को सुबह छ बजे मध्य भारत में भंयकर भूचाल आया जिसमें बेशुमार व्यक्तियों की जानें गई । अपार सम्पत्ति नष्ट हो गई । 12 अक्टूबर 1986 को मैक्सीकों में सल्वाडोर भूकम्प में 1800 लोगों की मृत्यु हुई ।

अब्दुल हमीद प्रथम तुर्की का शक्ति शाली शासक था परन्तु तुर्की की अधिकान्श जनता ईसाई थी । मुसलमानों ने 12000 ईसाई स्त्री पुरूष बच्चे और बड़े क़त्ल कर दिये और उनके घर फूंक डाले।

21 मई 1871 को पेरिस में घुसकर थीयर्स की सेना ने कम्यूनर्ड दल के सत्रह हज़ार लोगों को नृशन्सता पूर्वक क़त्ल कर दिया ।

22 जनवरी 1905 ई. को सेन्ट पीटर्सवर्ग के निहत्थे हज़ारों मज़दूर जब ज़ार के सामने अपनी कठिनाइयां सुनाने गये तो ज़ार के हुक्म से उन्हें गोलियों से भून डाला गया ।

प्रथम विश्व युद्ध में एक करोड़ पचास लाख जानें गई । द्वितीय विश्व युद्ध में तीन करोड़ पचास लाख लोग मारे गये ।

नेपोलियन ने रूस पर विजय पाने के लिये 6 लाख सेना लेकर चढ़ाइ की मगर जाड़े सिर पर आ गये । खाने की कमी हो गई। और वापिसी का हुक्म देना पड़ा । इसी मुसीबत से पांच लाख अट्ठावन हजा़र सैनिक सर्दी और भूख से मर गये । कुछ को रूसियों ने क़ैद कर लिया

भारत में बिहार और बंगाल के दुर्भिक्ष की भांति आइरलैण्ड में 1845 में आलू की खेती नष्ट हो जाने के कारण पचास लाख लोग देश छोड़ कर भाग गये और बीस लाख लोग भूखों मर गये।

1894–96 के बीच 50000 विद्रोहियों को जो तुर्की मुस्लिम अत्याचार के विरोध में सुल्तान के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द कर रहे थे बेरहमी के साथ मार डाले गये ।

1665 में लन्दन में प्लेग से एक लाख आदमी मर गये । 1666 में लन्दन में आग लगी तेरह हज़ार घर जल कर राख हो गये और एक लाख लोग बेघर हो गये । 1692 में कम्बावेल क़बीले के लोग बदले की भावना से मेक्डानलड कबीले के यहां मेहमान बनकर गये। उन्होंनें इन पर कोई शक नही किया जब वह लोग सो रहे थे तो इन महमानों ने तमाम मेज़बानों का क़त्ल कर दिया ।

मलिका मैरी ने तीन सौ प्राटस्टैन्टों को सिर्फ़ इस बात पर जीवित जला दिया कि वे उस के कहने पर रोकमन कैथोलिक नहींबने थे। रिडले (विशपआफ़ वरस्टर) लेम्टेमर (विशप आफ़ लन्दन) भी इन्हीं के साथ जलाये गये थे ।

इसके अतिरिक्त भी न जाने कितने मासूम बेगुनाह लोग और मारे गये हैं जिन का सविस्तार विवरण नहीं दिया गया है राजा नवाबों के सैनिकों की शुमारी भी लगभग इन आंकड़ो से अलग है जो अरबों की संख्या तक पहुँचती है । यह आंकड़े तो मैंने केवल निर्दोष लोगा के दिये हैं । जो भगवान की इस धरती पर भगवान की दया और कृपा के नितान्त अधिकारी थे । मुसतहिक़ थे । परन्तु भगवान ने किसी पर कोई दया नहीं की । उस दयालू परमात्मा की आंखों के सामने इस दुनिया में जितना बेबसों, बेकसों, मासूमों, बेगुनाहों, निर्दोषी पेट की आग बुझाने के लिये अमीरों की नौकरी करने वालों और सैनिकों (जो निर्दोष होते हैं) का खून बहाया गया उतना ज़ालिमों,

मक्कारों दुष्टों और शासकों का खून नहीं बहाया गया बल्कि अधिकांश अपने महलों में राग रंग का आनन्द लेते रहे और बाहर कटे हुये गालों से रक्त की फुहार निकलती रही । क्या यह ख़ून ख़राबा उस भगवान की दयालुता का प्रतीक है ?

सारी ज़मीन सुर्ख़ है इनसाँ के ख़ून से ।
फिर भी रहीम उसको बताते रहे हैं हम ।।

उसको दयालू और कृपालू बताने वाले लोग सोचें कि वे किस बिना पर, किस घटना के आधार पर उसको दयालु और कृपालु कहना सीखे हैं । क़ुरान शरीफ़ में उसको रहीम (रहम करने वाला) करीम (कृपा करने वाला) क़हहार (क़हर यानी जुल्म करने वाला) जब्बार (यानी जब्र और अत्याचार करने वाला) बताया गया है । यह चारों गुण उसपर आरोपित करने से निष्कर्ष निकलता है । कि वह अच्छा भी है और बुरा भी ।

मेरा मत यह है कि वह अच्छा ही अच्छा है बुरा बिल्कुल भी नहीं है बुरे हैं तो हम है या प्रकृति के परिवर्तन परिणाम । हमारे हाथ पैर हमारी भावनाओं से प्रेरित होकर आगे उठते है । उसके हुक्म से ऐसा कुछ नहीं होता है । यदि लोग बाग यह बात मानने को तैयार ही नहीं हैं, केवल उसी के हुक्म की कारस्तानी मानते हैं तो उनको अपने ख़ुदा को रहीम और करीम बताते समय कुछ तर्क और बुद्धि से भी काम लेना होगा ।

यदि कोई मनीषी या भला मानस किसी घटना विशेष की बिना पर उसको दयालु कहने लगा है तो वही भोला भाई किसी मासूम के खून पर उसको क्या कहेगा ?

मैं तो यह समझता हूँ और जो कुछ भी समझता हूँ वह अनुभव की बिना पर समझता हूँ कि इस दुनिया में जितना भी जुल्म और

अत्याचार हुआ है उस सब का ज़िम्मेदार शोषणकर्ता रहा है । महत्वाकांक्षी रहा है । दूसरों के घरों के अवैध लुटेरे राजा नवाब रहे हैं । इतिहास गवाह है इन्सान जितना ज़ालिम रहा है उतना कृपालु या दयालु नहीं रहा है । ज़ालिमों ने अपने आप को निर्दोष साबित करने के लिये सब कुछ का कर्ता धर्ता ईश्वर ही को बता कर शोषित वर्ग द्वारा स्वंय को कलंकित होने से बचाने का असफल प्रयास किया है । और रचा है अपने को पाक साफ़ बनाये रखने का ढोंग ।

वास्तविकता तो यह है कि ज़ालिम और क्रूर, अच्छा और बुरा जो कुछ भी है इस पृथ्वी पर आदमी है । भगवान तो मूक दर्शक है । यह दूसरी बात है कि अन्धविश्वासी और परम्परावादी लोगकिसी व्यक्ति विशेष के साथ बरती गई किसी मानव द्वारा कृपा को भी भगवत कृपा समझ बैठें । या इस मानव कृपा में ईश्वर की कृपा का संकेत समझने लगें क्योंकि "बिना उसके हुक्म के पत्ता भी नहीं हिलता मानने वाले लोगों के आगे किसी की कुछ नही चलती हैं। उपकृत जितना पग पग पर भगवान का धन्यवाद अदा करता है यदि उतना उपकार करने वाले का शुक्रिया अदा करता तो मानव ह्दय में और भी अच्छा काम करने की भावना प्रबल होती । अच्छे काम करने वाले की तारीफ़ अच्छाई में वृद्धि करती है और बुरे काम की उपेक्षा बुराई घटाती है । लेकिन यहां तो अच्छे कामों का क्रेडिट भी इन्सान को न देकर भगवान की महरबानी ही मानी जाती है। जिससे अच्छे काम करने वाले की अच्छी भावना को कोई ख़ास बल नही मिलता । प्रचलित धार्मिक परम्परायें, रीति रिवाज, मिसालें और कहावतें जो शोषण कर्ता स्वार्थी समुदाय ने ग़रीबों के मनमस्तिष्क में केवल इसलिये जमा बसा रखी है ताकि हम उन के अत्याचार के विरूद्ध एकमत होकर उनके मुक़ाबिले पर न आ जायें । सब्र और सन्तोष धारण किये बैठे रहें और निर्धनता की लक्ष्मण रेखा को पार न कर जायें । आपने पीछे की तरफ़ मुड़ कर यदि देखा होगा

तो यही बातें जो धनिक हमें सिखाते नहीं थकते वह स्वंय इन पर अमल करते नज़र नहीं आते । मैं इस सिलसिले में संकेत मात्र से काम लेना चाहता हूँ । मिसालें देना नहीं चाहता ।

12

समर्थ का निशाना

समर्थ संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है वह व्यक्ति जिसमें कोई काम करने की शक्ति हो, या दूसरे कामों या पदार्थों पर अपना प्रभाव डालने की शक्ति रखने वाला हो । समर्थवान बनने के लिये शक्ति की आवश्यकता है । शक्तियां कई तरह की होती है, 'फ़न शक्ति', जन शक्ति, तन शक्ति, मन शक्ति, धन शक्ति आदि। चाहे कैसी भी शक्ति का मालिक हो । शक्तिवान हमेशा कमज़ोर को सताता आया है । शक्ति का निशाना आदि काल से निर्बल यानि दलित वर्ग मज़दूर और किसान ही रहा है । किसी भी ऊँची से ऊँची इमारत के ज़ीने की केवल तीन ही सीढ़िया होती हैं । इन्हीं तीन सीढ़ियों (दलितवर्ग, मज़दूर और किसान) पर चढ़कर महलों तक पहुंचा जाता है । राजा रंक फ़कीर शासक नेता मीर सभी को यह ऊपर तक पहुंचाती है । प्रकृति का सिद्धान्त भी कुछ ऐसा ही है । तालाब की घास और काई को कीड़े मकोड़े खा जाते हैं। कीड़े मकोड़ों को छोटी छोटी मछलिया खाती हैं । मछलियों को बड़ी मछलियां निगल जाती हैं । मछली को बगुला खा जाता है। बगुले को बाज़ दबोच लेता है बाज़ को खा जाने वाले भी अनेकों जीव जन्तु हैं । बड़े बड़े पेड़ों के साथ में उगे छोटे-छोटे पोधे कभी भी पनप नहीं पाते ।

इन्सान ने भी आज तक इसी नियमानुसार जीवन बिताया हैं । यदि उसने इन तीनों के साथ कोई हमदर्दी या कृपा दिखाई है तो उसके पीछे उसी का कोई स्वार्थ निहित होता है । इन्सानियत सौजन्य की पर्याय मानी जाती है । सौजन्य, सजनता या भलमनसाहत को कहते हैं । उसकी विशेषता या खूवी इन्सान और सारे इन्सानों को एक सा समझने में हैं । मगर कोरिया, क्यूवा, वियतनाम, भारत जर्मनी आदि के विभाजनों से स्पष्ट हैं कि इस इन्सान से ऐसा हुआ नहीं । तरो ताज़ा रक्त से निरन्तर उठती भाप भले ही मूक हो परन्तु मानव की दानवीय प्रवृति की ओर संकेत अवश्य करती रहेगी । उसकी शतरनजी चालें उसकी तिजोरियों में रखी सोने चॉंदी की चमक और उसकी शाही वेशभूषा और मुकुट की जगमगाहट से प्रकट होती रही हैं ।

हालांकि उसने अपनी सुन्दर जवान पत्नी और बच्चों को अर्धरात्रि में सोते हुये छोड़कर महलों के ऐश्वर्य और वैभव को तिलान्जलि देकर जंगल की राह ली, कठोर तपस्या भी की । शरीर को इतना दुख दिया कि जर्जर हो गया । काम भी किया, उपदेश भी दिया। दुखी पीड़ित दलित अपमानितों का स्तर भी उठाया । उन्हें सर्वण के पास बिठाने लाइक़ भी बना दिया ।

उसकी बातों से ऐसा लगा कि दलित, अत्यन्त सर्वहारा और अछूत को समाज में अब कोई अपमानित नहीं कर सकेगा । उसका भविष्य उजागर होगा । अच्छा जीवन जीने का अवसर आयेगा । उसकी आवाज़ में दम था वह और बुलन्द हुई लंका, जावा, सुमात्रा, बोर्नियों, कम्बोडिया, ब्रह्मा, स्याम, चीन और सूर्यदेश जापान तक सुनी गई । भाई चारा और सद्भाव परवान चढ़े । मगर कराहती पीड़ित जनता की चीत्कार किसी न किसी कोने से आती अवश्य रही । धूड़ की सी आग सुलगती ही रही । अछूत जब भी घर से बाहर निकलता था तो दो डन्डे लेकर चलता था और उन को आपस

में टकरा टकरा कर या ज़मीन पर पटक पटक करआवाज़ पैदा करता चलता था । ताकि उसका अंग किसी सर्वण से छू न जाये ।

उस नेक दिल सच्चे मानव हितोपदेशी महात्मा से पहिले भी इस अछूत पद दलित की बस्तियां शहर या गांवों से बाहर ही होती थी। आज भी उसकी कालोनियां बस्ती से बाहर ही बनवाई जाती हैं । सम्मान का दृष्टिकोण रखने वाली योजनाओं में भी बासी साग की भांति नफ़रत की दुर्गन्ध आती है । ऐसी अनेकों ऐतिहासिक मिसालें हैं जिनसे यह सिद्ध होता हैं कि ऊँचे लोगों के यही पद दलित और अछूत अधिक काम आया है । हज़रत ईसा मसीह बढ़ई थे महाराजा अशोक का दादा चन्द्र गुप्त मौर्य शूद्र था, हिटलर रंगरेज़ था, स्टालिन और जगजीवनराम मोंची थे, मुसोलिनी लुहार था, स्टीफ़नसन कोयले की खान का मज़दूर था, सन्त रेदास चमार थे, भारतीय संविधान का निर्माता महाविद्वान डा. अम्बेडकर शूद्र था ।

कभी इस महामानव को भंगी कहा जाता था । कभी अछूत, कभी अन्त्यज और कभी दलित । एक अन्यत्रहात्मा ने इस के साथ सदभाव सदव्यवहार यानी इन्सानों जैसा बरताव किये जाने पर ज़ोर दिया । आर्य समाज की स्थापना की मगर इस प्रशंसनीय प्रयास के बावजूद वह सताया जाता रहा । उसको वास्तविक सम्मान प्राप्त नहीं हो सका । कारण इसका स्पष्ट है, उस बेचारे से हमदर्दी और प्यार किसी को नहीं था । धार्मिक ग्रन्थों से लदे प्राणी के पास विद्या थी, ज्ञान था, उपदेश था परन्तु अमल नहीं था । वह दूसरों से तो मिल कर चलने मिलकर रहने की बात करता था मगर अपना दामन उससे बचाये ही रखता था । अगर मेरी बात झूट है तो कोई एक मिसाल दे दें जिसमें किसी ब्राह्मण ने उसके घर जाकर जन्म से लेकर मरण तक का कोई संस्कार कराकर (उसकी रसोई में एक बार भी भोजन किया हो जबकि ईसाई और मुसलमानों ने उसकी तरफ़ प्यार का हाथ बढ़ाकर अपने पास ही नहीं बिठाया रोटी बेटी के नातों

में भी शरीक कर लिया ।

हिन्दुओं को यह भय था कि वह बहुत बड़ा दल मुसलमान या ईसाई न बन जाये । हिन्दुओं की शुमारी न घट जाये । मैं समझता हूँ यही उद्देश्य रहा सभी समाज सुधारकों, प्रवचन कर्त्ताओं, धार्मिक नेताओं का । उसको मान सम्मान देने का किसी का कोई ठोस इरादा नहीं था । वह भंगी था, शूद्र था और इस सब कुछ के बाद भी यह वही बना रहा । उसके स्थान में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जैसे दूव घास खेत की मेंड पर उगे चाहे अमीर की कोठी के लॉन में, रहती पद दलित ही हैं । यज्ञों में आहुती देने में काम आने वाली घास पैरों से कुचली जाती रही हैं ।

तीसरे महात्मा ने इस पिछड़े व्यक्ति को भंगी कहना मुनासिब न समझा उसको भंगी कहा जाना बुरा लगा । उसने अपनी मातानुसार एक सम्मानित मिये नाम दिया "हरिजन" । यानी हरि का आदमी। भगवान का भक्त भी कह सकते हैं । सोचने की बात यह हैं कि वह किसी हरि का जान बना । हरि के मानैं तो अनेकों हैं, जैंसे भूरा आदमी, पीला, हरे रंग का, विष्णु, शिव, बन्दर अग्नि, श्रीकृष्ण श्री राम, इन्द्र, घोड़ा, सिंह, सूर्य, किरण, चन्द्रमा, गीदड़, शुक, तोता, कोयल, हंस, मैंढ़क, सर्प, वायु, यम ।

यह कैसा हरिजन बना कि पत्थर की मूर्तियों के दर्शन करने के लिये मन्दिरों में बिना तिलक लगाये प्रवेश तक नही कर सकता। जिस भगवान के हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता यह सदा उससे दूर ही खड़ा रहता है । चाहे रेदास बनकर वह उसके पास तक पहुँच गया परन्तु अधिकान्श लोगों ने उसके साथ तक से नफ़रत की है । हरिजन की संज्ञा देकर, उसकी बस्तियों में झाड़ू लगाकर उनसे प्यार और सौहर्द्र दर्शा कर उस तीसरे महात्मा को भले ही शान्ति मिली हो लेकिन गोलियों से छलनी उसकी आत्मा आज देख ले कि उसकी आंखें बन्द होते ही उस हरिजन के लिय हरि के द्वार

भी बन्द हो गये हैं और यह मस्जिद तथा चर्च में तो सम्मान के साथ सीना ताने चला जाता हैं लेकिन पन्डित जी के जूते का भय उससे मन्दिर की सीढ़ियों पर भी चढ़ने में हिचक पैदा करता हैं ।

इस बेचारे के उद्धारकर्ता का एक ही मन्शा नज़र आता हैं यानी यह लोग ईसाई और मुस्लिम ध्वज के तले न पहुँच जायें । क्योंकि कई प्रलोभन उसको उधर आकर्षित होने को लालायत कर रहे हैं। और यह भय सवर्णो को विवश कर रहा है कि उसको मान दें । कितनी अजीब बात हैं कि यह घृणित पशु सुअर भक्षक होकर भी मुसलमानों में आदर पा जाता हैं यह उनके ह्दय की विशालता हैं और मुसलमान धर्म की विशेषता ! लेकिन हिन्दुओं के विचारों की संकीर्णता देखिये कि हम उसको गऔं का पालक होने के नाते से भी अपने पास बिठाते हुये कतराते हैं । इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता । कि झूटी पत्तलें उठाने के लिये बुलाये जाने वाले इस हरिजन के लिये बहुत कुछ अमली काम भी किया जा रहा हैं । मगर फिर भी उसका रहन सहन और खान पान हमसे अलग हैं। हरिज्न की संज्ञा से विभूषित करके उसको बेव़कूफ़ बनाया गया हैं।

कहीं से दावत खाकर निकलने वाले सभी लोगों में केवल ब्राहणों को दक्षिणा दी जाती है जिससे उनके मन में एक भाव टंकोरता हैं कि वे ब्राह्मण हैं और अन्य लोगों को आत्मचेतना गुदगुदाती हैं कि वे ब्राह्मण नहीं हैं हरिजनों को अनुदान और सीटों का रिजर्वेशन यह सिद्ध करते है कि हरिजन भंगी का पर्याय हैं और वह 1947 से अभी तक वहीं हैं जब तक शूद्र में शूद्र का भाव समाप्त नहीं हो जाता तब तक उनको दी जाने वाली अनेकों वित्तीय सहायतायें, कालोनियों का निर्माण, अन्य सुविधायें और रिज़र्वेशन अर्थहीन हैं । आदमी में परिवर्तन और उत्कर्ष के लक्षण मन और बुद्धि के बदलाव से शुरू होते हैं । और यह उसी हालात में सम्भव होता हैं जब हम उस व्यक्ति विशेष के मन से हीन और मीन भावना को जन्म

ही न लेने दें । यह सम्भव है कुशल व्यवहार द्वारा या स्वच्छ प्यार द्वारा । अनुदान और सुविधायें मानसिक उत्थान में सहयोगी नहीं हो सकते । बढ़ने वाले लोग साधन हीन स्थिति में भी साधनयुक्त लोगों से कहीं आगे निकलते देखे गये हैं । कमज़ोर को मदद देना अच्छी बात हैं । मगर मदद के सहारे जीते रखना उसको कायर भी बना देना है ।

हमने आदिकाल से उसका सेवक समझा है । सेवक तो अपने बाल बच्चे और नौकर चाकर भी होते हैं । जो काम वह करता हैं वह काम घर घर में रोज़ होता हैं मगर अछूत का व्यवहार हमने इसी से किया हैं ।

यह है समर्थवान का रवैया जो उसके प्रति आर्यों से लेकर आज तक बराबर चला आ रहा है । अछूत हमारे समाज का महत्वपूर्ण अंग है परन्तु हमने उसकी क़द्र कम करके अपनी मनुष्यता, धार्मिकता, विद्वता, उदारता, शास्त्रविदता, ओर कुन्टलों धार्मिक पुस्तकों की अहमियत बढ़ा दी हैं । और इन सबकी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया हैं ।

इन्हीं का शोषण कर अमीर वर्ग उभरा हैं और चिकनी चाँदनी तों दें धूली हैं । इस धर्ती पर आर्यो के पग धरने से पूर्व भी यह लोग किसी न किसी संज्ञा को धारण किये हुये मौजूद थे लेकिन उस युग से पहिले का इतिहास ही लिखित रूप में नहीं मिलता तो अछूत के अस्तितव की रूपरेखा ही कैसे उपस्थित की जाये । हां जबसे इसको देखा और सुना गया है आज तक हज़ारों साल व्यतीत हो जाने पर भी इसकी दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है । और वह चराचर का स्वामी जो सब कुछ का कर्ताधर्ता है अवश्य ही किसी के हाथ में है यदि ऐसा न होता तो यह कैसै सम्भव था कि सृष्टि का यह सब से सुन्दर प्राणी व्यवस्था विश्मता का इस क़दर शिकार होता । तुलसी दास जैसे सन्त कवि ने भी दलित

वर्ग के लियें "ताड़न के अधिकारी" लिख डाला । कहने का मन्शा यह है कि न इस पर भगवान कृपालु हुआ न इन्सान ।

महलों की दूसरी सीड़ी है मज़दूर । जी हां मज़दूर । यह भी पृथ्वी पर वायु और आकाश के तारों के समान हमेशा से है । राजा से पहिले इसका जन्म हुआ । महंत से पूर्व यह मौजूद था । नूह पैग़म्बर की कश्ती इसने बनाई थी । अर्जुन का गाण्डीव इस ने बनाया था । पत्थर के हथियार लोहे की तलवार, अमरीकी बम्बार आदि सभी का यह निर्माता हैं । सृजनकार हैं । मज़दूर पूरी पृथ्वी पर निवास करते हैं । हर देश की अपनी अपनी समस्यायें होती हैं जिनका मज़दूर वर्ग पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं । यही पिचता हैं । यही सताया जाता हैं ।

प्रथम सम्पूर्ण विश्व युद्ध का एक खरब छयासी अरब डालर के व्यय में यह भी शरीक था और युद्ध उपरान्त हारने वालों पर जो चालीस हज़ार करोड़ पौन्ड का असहनीय क़र्ज़ा लादा गया उसमें भी इसको अधिक कन्धा लगाना पड़ा ।

एक बार बरेली जाते समय मेरी कार को एक पुल पर रोक लिया गया । और पाँच रूपये लेकर पास होने दिया । मैंने पूछा यह काहे का टैक्स हैं तो जवाब मिला कि इस पुल पर जितनी लागत आई हैं जब तक वह पूरी वसूल नहीं हो जाती है तब तक यह टैक्स वसूल किया जाता रहेगा । यानी राष्ट्र निर्माण में एक एक ईंट हमारे ही रूपयों से ख़रीदी गई होती हैं । दूसरें लोगो के टैक्स अदा करने के तो और भी अनेंकों साधन होते हैं । मगर मज़दूर अपना पेट काट काट कर ही टैक्स भरता हैं ।

राजा और नवाब इसको इसी लिये ज़िन्दा रखते आये हैं कि वे स्वंय ज़िन्दा रह सकें । हनुमान की भांति मज़दूर को अपनी शक्ति का बोध नहीं । युद्ध की बलि वेदी पर भी इसी को क़ुर्बान किया

जाता हैं अपनी अपनी गद्दी सलामत रखने के लिये शासकों ने कितने ही "कलिंग" "पानीपत" "विलासी" "वाटर लू और ट्राफालगर" लड़े हैं । और अभी तक मज़दूर के सिर पर युद्ध प्रेमियों की दुधारी तलवार लटकी हुई है । हीरोशिमा और नागासाकी की सन्तप्त धर्ती इस तथ्य की गवाह हैं ।

1643-1648 में, चीन में चांज चूँ नामक सम्राट जिस दिन गद्दी पर बैठा था । उसी दिन छे लाख नर चार लाख नारियां, बत्तीस हज़ार सैनिक, सात सौ राज्य कर्मचारी मरवाये गये थे । उसने पांच साल में तीन करौड़ लोगौ का खून बहाया था । सभ्य और उन्नत अमरीका वियतनाम मैं एक सैनिक को मारने के लिये 344829 डालर दावी (1724135) सत्रहलाख चौबीस हज़ार एक सौ पैंतीस रूपये ख़र्च करता था ज्यूलियस सीज़र पिछतर सेन्ट, नेपोलियन इक्कीस डालर और दूसरे विश्व युद्ध में पचास हज़ार डालर यानी चार लाख रूपये प्रति सैनिक के वध पर व्यय होते थे । करोड़ों रूपया कब्रें और मक्बरें बनवाने में ख़र्च करने वाले शहन्शाह, अरबों रूपया महलों और क़िलों की तामीर में लगाने वाले मूर्पात, क्या कहीं मज़दूरों के निवास के लिये अच्छी कालोनी के निर्माण का भी कोई सबूत दे सकते हैं । महलों के पास उन्हें बनाने वालों की झुग्गी झोपड़ियां महलों के सम्पूर्ण होने के बाद ठोड़ी के कटे हुये बालों की भांति निर्दयता से दूर फेंक दी जाती हैं । पेट पालने के अथक परिश्रम करने वाला मज़दूर आज भी व्यस्तता का जीवन जी रहा हैं । न उसके पास कोई मनोरंजन का साधन है और न समय । न उसके पास धार्मिक मोटी मोटी किताबों में सिर खपानें का वक़्त हैं, न व्याख्यान सुनने की धड़ियां ।

धन वालों की आम धारणा यही रही है कि मज़दूर वर्ग को सुखी नहीं होना चाहिये वरना वह मज़दूरी करना छोड़ देगा और उसके काम अधूरे पड़े रह जायेंगे । इसी विचार धारा के तहत पूँजीपति वर्ग ने उसको कुछ ऐसी बातें सिखा रखी है जिससे वह जहां का

जहां पड़ा रहे । उन्नति न कर सकें । ख़ुशहाल हो कर उनका सामना न कर सके । विलारी क़स्बे में एक अमरी एम.एल.ए. ऐसा था । जो यह कहा करता था कि मैं यह कैसे गवारा कर सकता हूँ कि मेरे पड़ोसी का लड़का बी.ए., ,एम.ए. करके मेरे सामने आये। ऐसे लोगों ने यह बातें मज़दूर और ग़रीब को सिखाई हैं । "भगवान तेरा सहारा है "जो नसीब में लिखा है वही मिलेगा " भगवान के हुक्म के बिना पत्ता नहीं हिलता + अपनी हालत पर सन्तोष करना चाहिये "वह जिसे चाहे इज्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दें" माग बिन फिर मांग सी खोय क्या होगा मन के ढमकाये आदि । क्या नौ के सौ बनाने वाला व्यापारी क्या घूस के नोटों को जेब में सरकाता हुआ अधिकारी क्या बग़ावत करता दरबारी, क्या दूसरे के राज्य को हड़पने वाला षड़यन्त्रकारी, उन कहावतों में से किसी एक पर स्वंय अमल करता है एक हाथ में सोना और दूसरे हाथ में तलवार उठाने वाला भौतिकवादी महाबली धार्मिक पुस्तक कैसे उठा सकता हैं ।

स्वार्थी और धनिकों के यह चन्द मनगढ़न्त वाक्य मज़दूर को स्थिति सुधारने के लिये जागृत होने, कुलबुलाने, जद्दोजहद करने और आगे बढ़ने की भावना का अर्विभाव नहीं होने देते । और वह अज़दहे की तरह जहां का जहां पड़ा हुआ है । अन्याय के विरूद्ध और शोषण के ख़िलाफ़ लड़ने वाले क्रान्तिकारी को कष्ट भी उठाने पड़ते हैं । 1793 सितम्बर में फ्रान्सीसियों का क़त्लेआम इसी बात का सुबूत हैं । मगर प्रकृति का नियम हैं कि एक शाख़ कटने से अनेकों शाखाये और निकल आती हैं । ज़ुल्म ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ने की भावना को दबा तो सकता है ख़त्म नहीं कर सकता । फ़्रांस, रूस, इंग्लैण्ड की क्रान्तियां इसी बात के जीवित प्रमाण हैं ।

मज़दूर ने अपनी एकता और शक्ति का यदा कदा प्रर्दशन तो कर दिया है । और वह सीने पर गोलियां खाकर सफल भी हुआ है लेकिन अभी तक वह धनिकों, चालाकों, राजनीतिज्ञों के हाथ का खिलौना बना हुआ हैं । उसके सुख का कुछ ख्याल अगर किया

जाता है तो अमीर के पालतू अलशोशियन डाग की तरह । कुत्ता मर गया तो कोई भी सिरफिरा उसके घर में घुस जायेगा । यानी घर की सुरक्षा का ख़्याल, कुत्ते की देखभाल कराता हैं ।

भारत में मज़दूर के साथ सरकार का रवैया क़ानूनी एतवार से कुछ सुधर रहा है । उसके प्रति सहानुभूति दर्शाई जा रही हैं लेकिन कानून पर अमल करने वाले तो वही चरित्रहीन, देशद्रोही, लालची, लोभी अनियमित, कृतघ्न, शोषणकर्ता सरकारों के पिछलग्गू, बेईमान और मक्कार लोग हैं । यह ग़रीब मज़दूर को राहत कैसे पहुँचाने देंगे। मै अपने अनुभव की बिना पर यह लिख रहा हूँ ।

एक बार मेरे पास एक लेबर इन्सपैक्टर आया और बोला मैं किसी ऐसे किसान से मिलना चाहता हूँ जो कुछ मज़दूर रखता हो यानी बड़ा किसान हो क्या आप इतना कष्ट उठा सकेंगे ? मेंने हां कर दी और सरकारी कर्मचारी का सहायोगी बनकर पास के गांव में एक किसान के यहां ले गया । उसकी स्कूटर, आगे रास्ता ठीक न होने की वजह से गांव के बाहर ही एक जानने वाले किसान की सुर्पुदगी में उसके घर पर खड़ी कर दी । बड़े किसान के घर पर पहुँचे । उसने आव भगत के साथ बिठाया । ख़ातिर तवाज़े की, इन्सपैक्टर ने सवाल दाग़ा आप कितने नौकर रखते हैं। क्या वेतन देते हैं? कितनी छुट्टियां देते हैं । किसान सच सच बताता रहा। वह बेचारा एग्रीकल्चर एक्ट से अपरिचित था उसका सच बोलना इतना घातक सिद्ध हुआ कि उसने एक पर्चा हाथ में थमाते हुये कहा आप हफ्तें में एक छुट्टी नहीं देते, वेतन 12 रू० रोज़ से कम देते हैं । अन्य कोई रियायत भी नहीं देते हैं । बेचारा किसान मुँह देखता रह गया । हम चले आये । स्कूटर उठाते समय दूसरे किसान को भी वैसे ही प्रश्न पूछने के बाद इसी प्रकार का पर्चा थमा दिया। मुझे क्या पता था कि यह नाग धोखे से फन मारेगा । मुझे बड़ी ग्लानि हुइ और रास्तें भर यह सोचता रहा कि आज से ये लोग मुझे अपना शत्रु समझने लगेंगे । बरसों से चली आ रही आपसी मित्रता

आज मिट्टी में मिल गई । अस्पताल पर आकर मैंने उससे पूछा आपने जो पर्चे दिये है इनकी क्या प्रतिक्रिया होगी ? वह बोला "इन पर मुक़दमा चलेगा । अदालतों के चक्कर काटेगें हज़ारो ख़र्च करेंगे । "मै बौला बेचारे इन किसानें को ऐसी सज़ा क्यों देते हो साहिब। कोई आसान तरीक़ा बता दो ताकि मामला सुलझ जाये । यह सुनकर वह मुस्कुराते हुये बोला पाँच पाँच सौ रूपया लेकर मेरे पास सम्भल भेज दीजिये मामला सुलझ जायेगा । वह चला गया । मगर मैं उन दोनों की नज़र में अमित्र सिद्ध हो गया । और आज तक उस बैर की सज़ा भोग रहा हूँ । किसानों के किसी मज़दूर को तो कोई राहत नही मिली लेकिन लेबर इन्सपैक्टर को हज़ार रूपये अवश्य मिल गये ।

"क़ानून का पालन करना चाहिये । क़ानून तोड़ने वाले को सज़ा मिलनी चाहिये" इन्सपैक्टर साहिब के शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे और मैं सोच रहा था कि यह बात केवल जनता के लिये ही है अधिकारी वर्ग के लिये नहीं हैं जितनी क़ानून की उपेक्षा अधिकारी वर्ग करता है उतनी क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी जनता नही करती । जानबूझ कर क़ानून तोड़ने वाला अधिक पाप का भागी हैं । वनिसवत अन्जान के । इसी प्रकार की अनेकों घटनायें रोज़ घटती रहती हैं। जो स्पष्ट करती हैं कि मज़दूर के हक़ में उठाये जाने वाले क़दम कितने कारगर सिद्ध हो रहे हैं । आये दिन होने वाली हड़तालें और बन्द इसी धांधलेबाज़ी की तरफ़ एक खामोंश इशारा करते हैं लेकिन खट्टी डकारें लेने वाले पूँजीपति के कान पर भूखे ग़रीब मज़दूर की आहों की जूँ नहीं रेंगी हैं ।

महलों तक पहुँचने वाले ज़ीने की तीसरी सीढ़ी है किसान । बह्म, विष्णु, महेश हिन्दू समाज में पूजनीय और माननीय समझे जाते हैं लेकिन यह तीनों (दलित मज़दूर किसान) सारे संसार में मान्य हैं। हैं तो सच मुच यह भी आदरणीय और पूजनीय । मगर कोई इन के साथ ऐसा शिष्ट आचरण करता नहीं हैं । बेचारे किसान के

भाग्य में भी सुख और सुविधा नहीं हैं उसको रात दिन कन्टकार्कीण मार्ग पर नंगे पैर चलना हैं । वक़्त बे वक़्त खाना हैं । अच्छा आनाज बेच कर घटिया और सस्ता सादा अनाज खाना हैं वह भी साहूकारों के डर से लुक छिपकर । न सर्दी गर्मी वर्षा ओले की कुछ चिन्ता है न पाले हवा ब्यार का कुछ ख़ौफ़ । न उसके जीवन की कोई सुरक्षा है न उसके भविष्य का कोई आश्वासन जो कुछ स्वास्थ, सुविधा संस्थान खोले भी जा रहे हैं तो वहां भी गोरे गोरे उजले उन्नत लोगों ही का बोलबाला हैं ।

पड़े रहते रोगी रात दिन बाहर ही क्वाटर के ।
लगाये जाते हैं इन्जेक्शन डिस्टिलडवाटर के ।।

दुनिया भर के किसानों का इतिहास उठाकर इन्साफ़ की नज़र से पढ़ा जाये तो पता चलता है कि किसी भी समय किसी भी शासक ने इसके तन और पेट, परिश्रमिक का कोई खास ध्यान नहीं किया हैं । शासक सर्वदा से इसका शोषण करते आये हैं। पश्चिमी आक्रान्ताओं से आज तक के सभी शासक किसान की कमाई पर गिद्ध दृष्टि जमाये रहे । भारत स्वतन्त्र होने पर कुछ राहत की आशा बन्धी थी । वह भी नगण्य हो गई । भारत सरकार ने सात सौ देशी रियासतों के शासकों के ताज उतार लिये । सीरदारी समाप्त कर दी । सीलिंग में बारह एकड़ से अधिक की आराज़ी कृषकों से छीन कर भूमिहीनों में बांट दी मगर देश में आज भी ग़रीबी मौजूद हैं ।

हमारे देश में सात लाख गांव हैं । और 1981 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या देहातों में रहती हैं ? 7 प्रतिशत झुग्गी झोपड़ी वाले हैं । यानी 87 प्रतिशत जनसंख्या देहातों में रह रही हैं । जिसमें से 70–75 प्रतिशत जनसंख्या ग़रीबी में जीवन बिता रही हैं । जिसमे दलित, मज़दूर और किसान तीनों ही आ जाते हैं । यदि आज़ादी के चालीस सालों में किसान की कुछ उन्नति हुई भी है तो दूसरे लोग उस से कहीं आगे निकल गये हैं ।

सरकार की; किसानों को राहत पहुँचाने वाली योजनायें, चाहे कितनी ही क्यों न हों लेकिन वह उस तक पहुँच भी नहीं पातीं और रास्ते ही में अधिकारियों की जेबों में समा जाती हैं। काग़ज़ों का पेट भरने वाले वारेन हेज़्टिंगस के पिछलग्गू आख़िर में किसानों को अंगूठे दिखा देते हैं यदि कुछ मदद मिलती भी है तौ एक एक साल लग जाता हैं। किसान के साथ क़ानून भी अजीब-अजीब तरह के अमल में लाये जाते हैं। जैसें काश्तकार की भूमि का मूल्य जो सरकार द्वारा तय किया गया हैं जब सरकार किसान की ज़मीन किसी अपने काम में ले लेती हैं तो उसको मामूली सा मुआवज़ा दिया जाता हैं। पूर्व निश्चित मूल्य के अनुसार नहीं दिया जाता। वह मूल्य केवल किसानों के आपसी क्रय विक्रय के लिये हैं। यानी सरकार के लेने की बात और हैं। देने की और। इससे किसान की ग़रीबी कम होने की बजाय और बढ़ती हैं। क्योंकि यही उसकी सम्पत्ति हैं तो सरकार कौड़ियों में ले लेती है।

दूसरे, तमाम देश को वन विभाग को दे दिया गया हैं। इसके परिणाम भंयकर होंगे। इस पर सरकार की निगाह नहीं हैं। किसान को लकड़ी की बड़ी आवश्यकता रहती है वह अपनी आवश्यकता के अनुसार पेड़ पौधे लगाता था और समय पर काट लेता था। लेकिन उसको पेड़ पौधे लगाने का हक़ तो हैं पर आज़ादी से काट नहीं सकता। पहिले उसे फ़ोरेस्टर से आज्ञा लेनी पड़ेगी। पचास रूपया प्रति पेड़ की क़ीमत तहसील में जमा करनी होगी। तब पेड़ काटा जा सकता हैं। इस क़ानून का यह नतीजा हो रहा हैं कि किसान ने पेड़पौधे लगाने ही बन्द कर दिये। केवल यूकलेप्टिस ही लगाता है क्योंकि इसके काटने पर कोई पाबन्दी नहीं है। मगर यह सबसे अधिक पानी चाहता है और बारिश होने में सहयोग नहीं देता। जो पेड़ पहिले से लगे हुये है उनको किसान काटने के लियें क़ानूनी पचड़े में न पड़ने के लिये जड़ो में चूना व तेज़ाब डालकर उनको सुखा देता हैं। सूखे पेड़ काटने पर कोई पाबन्दी नहीं है। इस कानून से देश के दो नुक़सान होते हैं एक तो पेड़ों की पैदावार

घट रही है दूसरे सरकारी टैक्स की चोरी हो रही है । क्रशर्स मनमानी क़ीमत पर गन्ना ख़रीदते है सरकार उनकी इस ख़रीद पर कोई नियम निर्धारण नहीं करती । एम.एल.ए. और एम.पी सभी जानते है कि किसान लुट रहा है मगर कोई कुछ नहीं करता ।

देश की आज़ादी से पहिले किसान का शोषण ज़मींदार करता था लेकिन आज उसके सत्रह ख़सम उसका ख़ून पी रहे हैं जैसे मिल, केन डिवलप्मैन्ट सूसाइटीज़, रिवेन्यू डिपार्टमेंन्ट, तहसील, कचहरी, रजिस्ट्रार, थाना, बिजली विभाग, चकबन्दी ब्लाक, डिवलप्मैन्ट, इरीगेशन डिपार्टमैन्ट को आपरेटिव संस्था, ऐजूकेशन विभाग, मिल्क इन्सपैक्टर, मेकेनिक, डिस्ट्रक्ट बौर्ड, जेलख़ाने, शफ़ाख़ाने, आदि सभी अपने अपने तीक्षणडंक किसान के कन्धे पर जमाये बैठे हैं । किसान के शोषण का जीता जागता सबूत और क्या हो सकता हैं । आप इन विभागों के किसी भी कर्मचारी के घर की स्थिति का जायज़ा लीजिये । सर्विस से पहिले और सर्विस के बाद की हालत में जमीन आसमान का अन्तर नज़र आयेगा । लेकिन किसान की दशो पुशतों से चली आ रही स्थिति में कोई ख़ास अन्तर नज़र नहीं आयेगा । हर साल बढ़ने वाले टैक्सों के बोझ से किसान दवता जा रहा है और रेल गाड़ियो में रोज़ अथाह भीड़ सफ़र करती हैं । तब भी साल के अन्त में रेलवे डिपार्टमैन्ट करोड़ो के घाटे मे जाता है । कहां कमी है इस पर सरकार ध्यान नहीं देती ।

भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर के किसानों के साथ उनकी अपनी अपनी सरकारें अनेकों प्रकार की बेइनसाफ़ियां और अत्याचार करती हैं रूस में ज़ार के शासन काल में भी किसानों की स्थिति दयनीय थी फ्रान्स में उससे भी अधिक थी । वुलीन लोग जिसका चाहे उसका अपमान कर सकते थे । छोटे छोटे किसानों को (ज़ैली) भूमिकर पैदावार का 90 प्रतिशत सरकार को अदा करना पड़ता था । जो किसान आराम से रहते थे उनसे कहा जाता था कि तुम समृद्ध हो और अधिक कर दे सकते हो और जो बुरी दशा में रहते

थे उनसे कहा जाता था कि तुम मितव्ययी हो इसलिये तुम्हारे पास धन होगा ही । सड़को पर बेगार में काम करना पड़ता था । अपनी आय का 85% राज्य ज़मीनदार और चर्च को देना पड़ता था ज़मीनदार किसानों के खेतों में शिकार खेलते थे । फ़सलों को नुक़सान पहुँचाने वाले जंगली कबूतर, हिरण, ख़रगोश को कोई भी किसान नहीं मार सकता था जैसे भारत में किसान देखता रहता है और नील गायों के झुन्ड के झुन्ड उसकी फ़स्ल को खाते कुचलते निकल जाते हैं।

यदि ज़मीनदार के मकान के पास किसी तालाब में मेढ़क बोल पड़े तो चाहे आधी रात ही क्यों न हों ज़मीनदार का हुक्म पाते ही उन मेंढ़कों को भगाना पड़ता था । कनाडा में किसान को एक गाय बेचने के लिये भी सरकार से आज्ञा लेनी पड़ती थी । एक तरफ़ किसान को पेट पालना भारी था दूसरी तरफ़ राज महलों में ख़र्चा आसमान छू रहा था । केवल भोजनालय का वार्षिक ख़र्चा 45 लाख रुपये था । 75 लाख रूपये दरबारियों पर व्यय होता था । राज महिषी की सेवा के लिये पाँच सौ सेवक नियुक्त थे ।

दुकानदार की आमदनी का कोई ग्राहक अनुमान नहीं लगा सका मगर सेलटैक्स खरीदार ही देता है । भारत में सरकारी कर्मचारी वर्ग की वेतन, मंहगाई, भत्ता हर साल बढ़ता है, उसको हफ्तें में एक छुट्टी भी मिलती है और जब नौकरी से रिटायर होता हैं तो उसको काफ़ी रूपया भी मिल जाता है जो उसके बुढ़ापे में सहायक होता हैं लेकिन किसान के जीवन में न कोई अवकाश है न आराम है ज़माने भर की जोखिम और दुर्घटनायें मुंह बाय खड़ी रहती हैं । न उसकी सुरक्षा की कोई गारन्टी है न आश्वासन । न उसके बच्चों का भविष्य उजागर न भावी सुख सुविधा की कोई सूरत । वह अपनी मौत मरता है अपनी ज़िन्दगी जीता है । "बैक बोन आफ़ द कन्टरी" की उपाधी पाने वाला किसान अपनी टूटती कमर थामें हल जोत रहा हैं ।

सरकारी चरित्रहीन रिश्वती कर्मचारियों द्वारा शोषित किसान अपनी मूर्खताओं का भी शिकार बना हुआ हैं । समाज में झूटी शान शौकत, हौड़ दिखावा और प्रतिष्ठा, बेहूदा रस्मोरिवाज, दुर्वयस्न और अकारण मामूली खातों पर होने वाले झगड़े और फ़िज़ूल ख़र्ची भी उसकी उन्नति में रोड़ा अटकाये हुये हैं । अमरीका और रूस से गेहूँ तो मंगाया जा सकता है फ़सलों को नुक़सान पहुँचाने वाले चूहों आदि जीवों को मारने में किसान की मदद नहीं की जा सकती ।

ब्रह्मा विष्णु महेश की तरह दलित, मज़दूर और किसान सारी दुनिया के आधार हैं । यह तीन न हों तो सारे महल ढह जायेंगे । जैसे धर्म, काम और मोक्ष । सतोगुण, रजो गुण, और तमोगुण । जन्म, जीवन और मृत्यु । बचपन जवानी और बुढ़ापा । बुरा मत देखो, बुरा मत कहो, और बुरा मत सुनौ । सत्य, प्यार और अंहिसा । हरा, सफ़ेद और पीला । आर्मी, नेवी, और एयर फ़ोंस । एलेक्ट्रान, न्युट्रान, और प्रोटोन । सत्यं, शिवं और सुन्दरम । नर, नारी और हिजड़ा । माता, पिता और गुरू । मन बुद्धि और आत्मा । समाज का इतना आवश्यक अंग होते हुये भी इन लोगों की तरफ़ किसी का भी रवैया सौहार्द्रपूर्ण और सहानुभूति युक्त नहीं हैं ।

दस लाख साल से इसी प्रकार जीवन की ज़न्जीर फैलाता चला आ रहा यह त्रिगुट आखिर कब तक इसी प्रकार दूसरों का मुंह देख देख कर असुविधापूर्ण जीवन जीता रहेगा ।

इसे अपने बल और पुरूषार्थ का सहारा लेकर लेनिन, बालतेयर, डा. सनयात सेन, मुस्तफ़ा कमाल पाशा और सुभाष चन्द्र बोस की शिक्षाओं और वलवलों को अंगीकर करना पड़ेगा । यदि ऐसा नहीं किया तो इसका भाग्य बदला नहीं जा सकेगा । यहां तो पुरूषार्थ और कर्मठता विवेक और जागृति ही की जीत होती हैं । थाली में सजा कर सुख और समृद्धि न सरकार दे सकती है न करतार। रूढ़िवादिता को त्यागनें ही से उन्नति क़दम चूमेगी । "हर आदमी

अपने भाग्य का स्वंय निर्माता हैं । "ए मैन इज़ दा मेकर ऑफ हिज़ ओन प्रिडेस्टिनी" महामन्त्र सर्वश्रेष्ठ है ।

बड़े बड़े राजा नवाब और एम्बाइर इसी मूल मन्त्र के शैदाई रहे हैं । इसी ने मक्इनिया से भारत, इंगलैण्ड से फ़ाक लेण्ड, भारत से अफ़ग़ानिस्तान जावा, सुमात्रा, बोनिर्यो और कम्बोज, जापान से ब्रह्म, चीन से अलास्का, फ़्रांस से मैक्सिकों और मिश्र से ब्राजील तक महत्वाकाँक्षी महामानव को हाथ पैर फैलाने का साहस प्रदान किया था । अगर इस त्रिगुट की भांति वह भी भाग्यवादी और लकीर के फ़कीर बने रहते तो नेपोलिन, सीज़र, नेलसन, हिटलर, चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, माओत्सेतुंग मुहम्मद ग़ौरी, बाबर और अकबर का नाम सुनने को भी नहीं मिलता ।

कठिनाइयों में साहस, मुसीबतों में ढारस, बनाये रखना चाहिये और अत्याचार के विरूद्ध लड़ना चाहिये । ज़ुल्म के आगे सिर झुकाने का मतलब है सफलता की दहलीज़ से वापस लौट आना ।

खुदा ने आज तक कौम की हालत नही बदली ।
न हाहे जिसको ख्याल आप अपनी ही हालत बदलने का ।।

मेरी बस्ती में एक ऐसा मुसलमान रहता था जिसकी थोड़ी सी ज़मीन सड़क के किनारे आबादी के निकट भी थी । वह तंग तुस्त था जवान लड़की की शादी में रूपये की ज़रूरत पड़ी । उसने उसी ज़मीन को बेचना चाहा । कई हिन्दू ग्राहक तो आये परन्तु रक़म अधिक होने के कारण कोई मुसलमान नहीं आ सका । और वह मुसलमान के अतिरिक्त किसी अन्य को देना नहीं चाहता था ।

एक नवयुवक, नवीन विचारधारा के साइकिल मिस्त्री मुसलमान के कानों में जब यह भनक पड़ी तो उसने फ़ौरन उस ज़मीन का बयाना दे दिया और गहने बेच कर कुछ रिश्तेदारों से लड़की की

शादी करने के बहाने से कर्ज़ा लेकर उस ज़मीन को ले लिया । कुछ दिनों बाद मिस्त्री ने उस जमीन को डेढ लाख (चौमुखी क़ीमत) में एक हिन्दू ट्रांसपोर्टर को बेच डाला और सारा कुर्ज़ा चुकता करने के बाद अपनी दुकान बनाली, मकान ठीक कर लिया । और कारोबार संभाल लिया । अब वह पहिले से कहीं अधिक खुशहाल है। यह कहलाती है युक्ति ।

हर व्यक्ति एक जनरेटर है, एक पावर हाउस है लेकिन जब वह अपनी शक्ति का प्रयोग ही नहीं करे तो क्या किया जाये । प्रचलित सूक्तियों से विक्षिप्त मन को तसल्ली तो मिलती है कुसमय और परेशानी का वक्त तो पास हो जाता है मगर परेशानी ख़त्म नहीं होती हैं ।

यदि घड़ी में से तीनों सुईयां निकाल दी जायें तो समय बोध नहीं होगा । लेकिन इसके साथ एक बात और देखने लाइक़ है घन्टे से मिनट छोटा होता हैं । और मिनट से सेकेण्ड छोटा होता है मगर सैकेण्ड की सुई सबसे बड़ी होती है और मिनट की घन्टे से बड़ी होती है । यह छोटे की महत्ता की और इंगित करती है। यानी सेकेण्ड ही घन्टे का निर्माता है ।

अतः दलित मज़दूर और किसान को अपनी अहमियत समझनी चाहिये और दूसरों की तरफ़, न देखकर अपनी तरफ़ देखना चाहिये। इस की अनवरत महनत, अविरल कमाई, अविराम परिश्रम से सन्सार जगमगाता है फिर यही अन्धेरे में खो बैठा है इसका जवाब उसे ढूंढना है और उसका निवारण भी स्वंय को करना होगा वरना उसके ख़ून के प्यासे सुरसा की भांति विश्व भर में तैयार बैठे हैं ।

13

कर्तव्य और चरित्र

चाहे राजनीति शास्त्र हो, चाहे जीवन क्षेत्र, चाहे राम का युग हो, चाहे कृष्ण का ज़माना, साधारणतयः कर्तव्य के साथ अधिकार का ज़िक्र किया जाता रहा है । भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही नहीं पश्चिम के देशों की विभिन्न जातियों में भी राइटस एण्ड डयूटीज़" ही की परिचर्चा मिलती है । लेकिन मैंने कर्तव्य के साथ चरित्र को जोड़ा है । अटपटी बात है । परन्तु गीता में कहा गया है कि निष्कर्म कर्म करो । फल की इच्छा मत रखो । अंगरेज़ी विद्धानों ने भी इस उच्च विचार का अनुवाद किया है "डू योर वर्क इनसिसेन्टली, बट नॉट लैट दाई हर्ट वी अटेच्ड" और इस आइडिये की भूरि भूरि प्रशन्सा की है । बस इसी विचार से प्रभावित होकर मैंने कर्तव्य के साथ अधिकार को कम और चरित्र को अधिक महत्ता दी है । कर्तव्य का अर्थ होता है करणीय कर्म या अवश्य करने योग कार्य । चरित्र योग कार्य । चरित्र का अर्थ होता है जीवन में किये जाने वाले कार्य या आचःरण, इस प्रकार के कार्यों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता, मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है । इस प्रकार यह दोनों ही शब्द "कर्मकाण्ड" के रथ में दो पहियों के समान हैं । जीवन में इन का बहुत ही बड़ा महत्व है । किसी भी व्यक्ति विशेष

परिवार, जाति, या देश विशेष की उन्नति का रहस्य इन्ही दोनों शब्दों में छिपा हुआ है । चरित्रवान लोग और कर्तव्यपरायण व्यक्ति ही सफल जीवन जीते हैं और अमरता प्राप्त करते हैं ।

आदमी सुख और शान्ति से जीने के लिये बहुत सी इच्छायें रखता है । इतनी इच्छायें कि उन की गणना आकाशीय तारागण की भांति असम्भव है। ज़ाहिर है कि हर उस इच्छा पूर्ति के लिये कुछ कर्म करना आवश्यक है जो व्यक्ति के मन में गूलर के अन्दर भुनगों की भांति कसमसाती है । यही कुछ करना कर्तव्य कहलाता है । यानी इच्छा के जन्म के बाद कर्तव्य जन्मते हुये भी महत्वपूर्ण हैं ।

अनगिनत फराइज़ पूरे न हो सकेंगे ।
बेचारी ज़िन्दगी को गिनती के दिन मिले हैं ।।

प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक इकाई है । समाज इतना विशाल शब्द है कि सारे संसार के लोगों को अपनी परिधि में ले लेता है । इसी लिये वेद के रचियता ने "वसुधैव कुटम्बकम्" लिख डाला । इस लिये एक इन्सान को कर्तव्यों के अनुसार एक अच्छा पुत्र, एक अच्छा भाई, एक अच्छा दोस्त, एक अच्छा पड़ोसी, एक अच्छा हाकिम, एक अच्छा पति, एक अच्छा पिता, एक अच्छा नागरिक और एक अच्छा इन्सान बनने की कोशिश करनी चहिये। यह सारे रिश्ते अपने अपने क्षेत्र में अनेकों कर्तव्य लिये हुये हैं और आदमी को उन्हें सहर्ष अंगीकार करना है । धर्म का उद्देश्य भी आदमी को अच्छा इन्सान बनाने का है "अच्छा इन्सान" ही एक ऐसी हस्ती होती है जिसमें उपरोक्त तमाम गुणों का समावेश हो जाता है ।

पाण्डवों की सेना में अनेकों वीर थे, सात अक्षोहिणी सेना (21870 रथी, इतने ही हाथी सवार, 109350 पैदल और 60000 घुड़सवार यानी दोलाख तेरह हज़ार नब्बे सैनिक एक अक्षोहिणी सेना में होते थे) कुछ कम नहीं होती है । चौदह लाख इक्क्यानवे हज़ार छै सौ तीस आदमियों के टिड्डी दल में हम केवल पाण्डवों (अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठर) ही के

नाम से परिचित हैं । इसी प्रकार हम यहां कर्म और कर्तव्य के टिड्डी दल में केवल पाँच ऐसे कर्तव्यों का वर्णन करना पसन्द करेंगे जो सभी कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व कर सकें और संक्षेप में हर बात प्रकाश में आ जाये । अधिक विस्तार से पढ़ने का समय किसी के पास नहीं है ।

अच्छा और आर्दश नागरिक या इन्सान बनने के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से बढ़कर मानवता के चिन्ह और क्या हो सकते हैं । प्राणी मात्र के लिये यही पाँच सामाजिक, आवश्यक नियम मुख्य कर्तव्यों की श्रेणी में आते हैं । मनुष्य के सामने सर्वाधिक ज्वलन्त प्रश्न जीवित रहने और अपना अस्तित्व क़ाइम रखने का रहता आया है। इसी अधिकार के साथ अहिन्सा का सिद्धान्त या कर्तव्य जुड़ा हुआ है । जितने परिणाम में हम इस कर्तव्य का पालन करेंगे उतने ही परिणाम में सब लोग निर्भय और आश्वस्त रह सकेंगे । जब आदमी को मानसिक शान्ति और हार्दिक प्रसन्नता ही नहीं होगी तो उसका कोई भी कार्य करने को जी नहीं चाहेगा । उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा । अपना जीवन भी वर्यथ और मूल्यहीन लगने लगेगा । ऐसी नैराश्य और अशान्ति की स्थिति में लोग आत्महत्या तक कर बैठते हैं ।

9 सितम्बर 1905 को जन्मा छत्तीस पुस्तकों का लेखक आर्थर कोरासलर अपनी पत्नी के साथ बन्द कमरे में आत्महत्या कर बैठा, स्टीफ़न ज्विग, अर्वेस्ट टॉलर, वजीर्निया बुल्फ़, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, सिलिमिया प्लाथ, हार्ट क्रेन, मायकोनस्की, योकयो मिशिया, अरबिर्न रोमेल जर्मन महान योद्धा, हालीवुड की प्रख्यात अभिनेत्री मार्लिनमनरो, और विनोबा भावे के अतिरिक्त अनेकों विद्धानों ने आत्महत्या की है और कर रहे हैं । मामूली आदमी ऐसा निकृष्ट कार्य करे तो मूर्खता या भावुकता की संज्ञा दी जा सकती है लेकिन जब विद्धान, मनीषी, लेखक या वैज्ञानिक ऐसा करता है तो अवश्य कोई गम्भीर राज़ बेपर्दा होता है । यह सभी घटनायें विक्षिप्त मन के कारण होती हैं और यह स्थिति परेशानी की चरमसीमा का प्रतीक होती है जोकि आदमी को तोड़ देती है । मारपीट, ऐक्सीडेन्ट, अप्रिय घटना या क़त्लोग़ारत के स्थलों पर शान्ति स्थापित होने के वर्षों बाद भी आदमी

वहां से गुज़रते हुये चौकन्ना हो जाता है और हर समय इधर उधर देखते हुये चलता है । जैसे कि वहां के पैड़ पौधे और ईंट पत्थर भी प्रेतात्मा बन गये हों । यह भय का करिश्मा है जो सुख शान्ति का शत्रु सिद्ध होता है । जैसे कभी कभी बुरी चीज़ें भी भली सबित होती हैं जैसे भय बुरी चीज़ है मगर ईश्वर का भय इन्सान को भला बनाने में सफ़ल होता है , भय और अशान्ति की जन्मदाता हिंसा है । इसीलिये सामाजिक शान्ति के लिये अहिन्सा का पालन बहुत ही आवश्यक हो जाता है ।

दूसरा सामाजिक कर्तव्य है पारस्पारिक विश्वास और प्रतिज्ञा पालन सभी सामाजिक व्यवहार और लेन देन इसी के आधार पर चलते हैं । यदि लोगों को इस बात का निश्चय न रहे कि उन के साथ जो इक़रार किया गया है उस का पालन किया जायेगा तो सारी सामाजिक व्यवस्था दो दिन में अस्त व्यस्त हो जायेगी । इस विषय का सम्बन्ध सत्य के व्रत से है । जिन समाजों में सत्य का जितना अधिक पालन किया जाता है वे उतने ही समुन्नत दिखाई पड़ते हैं । "जाये लाख और रहे लाख" की कहावत इसी आधार पर प्रचलित हुई है । आम तौर पर देखा यही जाता है कि लोग झूठ अधिक बोलते हैं । सत्य कम बोला जाता है । फांसी सत्य ही बोलने वालों को अधिक दी गई है । झूठ बोलने वाले को कभी सज़ाये मौत नहीं दी गई । लेकिन व्यवहारिक जीवन की सफलता का रहस्य सत्याचरण ही में है । किसी भी काम को करने से पहिले सत्य ही काम में लाया जाता है फिर चाहे कैसा भी आचरण कर लिया जाये । संक्षेप में हम यह कहेंगे कि सत्य का पालन सफ़लता की कुन्जी है ।

समाज की नींव मज़बूत करने और शान्ति क़ाइम रखने के लिये तीसरी बात प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल प्राप्त होना और उस पर अधिकार रखना है : यदि लोगों में छीना झपटी, परसत्वापहरण की मनोवृति घर कर ले तो उस समाज की उन्नति तो दूर शान्ति से जीवन व्यतीत करना भी असम्भव हो जायेगा । चोरी डकैती हर युग में हेय समझी जाती है। इसलिये इन्सान का तीसरा कर्तव्य है कि वह अस्तेय वृत को धारण करे। इस से बेहतर जीवन, बेहतर सामाजिक न्याय और स्वस्थ पर्यावरण तैयार

होगा । शोषण और दमन स्वार्थ और लोलुपता की देन होते हैं। अपनी स्थिति से अशान्त और असन्तोषी जीवन अस्तेय की अवहेलना करता है। ग़रीबी और आवश्यकतायें दूसरे देशों में भी हैं लेकिन वहां लोग परिश्रम करके पूर्ति करते हैं हमारी तरह छीना-झपटी कर के नहीं । जब आदमी की कमाई और सम्पत्ति की सुरक्षा ही नहीं रहेगी तो वह कमाने में शिथिल हो जायेगा और अवनति की नींव रख जायेगी । जिन लोगों के कोई भी सन्तान नहीं होती है तो वह भी कार्य करने में शिथिलता को प्राप्त हो जाते हैं और यह कहने लगते हैं " अरे भई किसके लिये कमायें " – मिंया बीबी दो जने किस के पीसें जौ चने — इसी प्रकार छीना झपटी का वातावरण भी आदमी में निष्क्रयता की भावना को जन्म देता है ।

समाज का निर्माण परिवारों से होता है । एक स्त्री और एक पुरूष समाज का सब से छोटा रूप और उस की आधार शिला मानी जाती है। समाज की शुद्धता और सुव्यवस्था के लिये बहुत ही ज़रूरी है कि इस सम्मलित जीवन पर कोई बाहरी हस्तःक्षेप न हो । जिन जातियों में स्त्री पुरूष के सम्बन्ध की पवित्राता की रक्षा नहीं की जाती और उसे किसी प्रकार छल बल से खराब करने की कोशिश की जाती है तो वे पतित हो जाते हैं और समाज की नज़रों से गिर जाते हैं । ऐसे लोग या तो ग्लानी का जीवन व्यतीत करते हैं या आत्म हत्या कर बैंठते हैं । इस सामाजिक अधिकार की रक्षा केलिये ब्रह्मचर्य व्रत का पालन परमावश्यक हो जाता है । कहीं कहीं लोग ब्रह्मर्चय का अर्थ केवल स्त्री से बचे रहने ही को समझते हैं । ऐसा नहीं है । जिस प्रकार "रोज़ा" रखने में भूखों रहना ही सम्मलित नहीं होता है बल्कि हर इन्द्री का रोज़ा होता है । बुरा मत देखों, बुरा मत सुनो, बुरा मत सोचो, बुरा मत करो, बुरा मत कहो यह सभी रोज़ों को मुख्य अंग होते हैं । इतना करने पर भूखे रोज़ादारों को पूरा सवाब मिलता है, इसी प्रकार इन्द्रियों को संयत कर और मन को क़ब्ज़े में रख कर अनुचित ढंग की कामुकता और वासना तृप्ती से बचे रहने को ब्रहाचर्य कहा जाता है । इसी वृत पालन से समाज की पवित्राता की रक्षा की जा सकती है और शान्ति बरक़रार रखी जा सकती है । स्त्री के मुख पर घूँघट और औरत के चेहरे पर नक़ाब इसी वृत के पालन की ओर इंगित

करता है । आये दिन बलात्कार की घटनायें और स्त्री अपहरण तथा खून ख़राबा कामुकता और वासना की अनुचित ढंग से तृप्ति के नमूने हैं। विदेशों में भी ऐसी घटनायें होती हैं मगर न के बराबर । मैंने स्वंय इंग्लिस्तान में जहां तहां गोरवपूर्ण ललनाओं के अर्धनग्न शोंले की काया लिये फिरते देखा है कि कोई किसी की तरफ़ नज़र उठा कर भी नहीं देखता । कितना अच्छा लगता है वह समाज़ जहां शक्ति और संयम के साथ जिओं और जीने दो के सिद्धान्त का पालन किया जाता है । हर जाति और धर्म में इस नियम का पालन अनिवार्य बताया गया है । आदमी का दिल स्वाभावत: आदि युग से बेशुमार इच्छाओं और लालसाओं का पिटारा रहा है । इसमें कोई शक नहीं कि इच्छाओं की वैशाखी के सहारे ही से जीवन आगे बढ़ता है । जिसके मन में कोई इच्छा न हो वह मृतप्राय समझना चाहिये।

लेकिन इन इच्छाओं का आधिक्य भी अच्छा नहीं ।
सुख से दुनिया में रहा, इच्छायें जिसकी कम रहीं ।।

हमारी जितनी अधिक इच्छायें होंगी उनकी पूर्ती के लिये हम उतने ही अधिक प्रयत्नशील होंगे । समाज की प्रगति के लिये यह भी आवश्यक हैं कि सभी को कार्य करके उचित निर्वाह कर सकने का मौक़ा दिया जाये। हर आदमी अपनी सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार रखकर उसका उपयोग करता रहे तो कोई ऐतराज़ की बात नहीं हैं लेकिन उसे यह भी ध्यान रखना चाहिये कि दूसरे लोगों को भी सामाजिक सम्पत्ति में से उचित भाग मिल सके और वे भी अपना गुज़ारा आसानी से कर सकें । एक व्यापारी के गोदाम में करोड़ो मन अनाज बन्द पड़ा हुआ है और दूसरी तरफ़ अनेकों लोग दाने दाने को मुहताज हैं । एक तरफ़ कारखानों में कपड़ों की बहुतायत से काम बन्द करना पड़ा हैं । तमाम जगहें कपड़ों से भरी पड़ी हैं तो दूसरी तरफ मैले कुचैले चिथड़े लपेटे जर्जर प्राणी काम कर रहा है एक तरफ़ रूपया संभालने और ख़र्च करने की तरकीबें सोची जा रही है ? दूसरी तरफ़ आवश्यकता पूरी करने भर को निर्धन के पास पैसा नहीं है । यही अभाव और सामाजिक असमानता अपरिग्रह के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । इस सामाजिक रोष को मिटाने के लिये अपरिग्रह व्रत का पालन आवश्यक है ।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता और उपयोगता के अनुसार ही चीज़ों के ख़रीदने की आदत डालनी चाहिये । आवश्यकता से अधिक चीज़ें जमा न करने की आदत व्यक्तिगत फ़िज़ूलख़र्ची ही पर नियन्त्रण नहीं करेंगी बल्कि चीज़ों के भाव भी नीचे रखेगी और हर आदमी को उपयोगी चीजें सुगमता और सस्तें दामों पर मिलने का अवसर देगी ।

यह पांच नियम या पांच कर्तव्य एक आदमी को अच्छा इन्सान बनने में पूर्ण सहायोग देंगे । मेरा तो यह विश्वास है कि यह कर्तव्य पूरे हो जायें तो हर धर्म का पालन हो जाये और जीवन सफल भी ।

अब हम चरित्र की विशेषता और महत्ता पर रोशनी डालते हैं । गुलाब में गुलाब की गन्ध आती है । यह सुनकर कोई चौंकेगा नहीं कोई चौंकेगा तो इस बात पर कि मैं कितनी नादानी की बात कर रहा हूँ । भला गुलाब मे गुलाब की बू नहीं आयेगी । तो क्या गैंदे या कामिनी की आयेगी । इससे एक बात सामने आई कि हर फूल अपनी नस्ल का प्रतिनिधित्व करता हैं। आदि से करता चला आ रहा है और प्रकृति का नियम सलामत रहा तो इसी प्रकार नुमाइन्दगी करता भी रहेगा । लेकिन आदमी के साथ प्रकृति के इस नियम का कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता । यानी हर आदमी में आदमी की बू नहीं आती । यह अपनी 'आदमी नस्ल' की नुमाइन्दगी करता नज़र नहीं आता । आदमी तो दर किनार देवता तक इस नियममें असफल होते देखे गये हैं आम तौर पर अच्छे स्वभाव और आचरण वाले को चरित्रवान और बुरे स्वभाव यानी बुरे आचरण वाले को चरित्रहीन की संज्ञा दी जाती है जब कि इन शब्दों की जगह सुचरित्रवान और कुचरित्रवान कहना चाहिये क्योंकि चरित्र स्वभाव या आचरण को कहते हैं और प्रकृति के नियम अनुसार कोई भी चीज़ चरित्रहीन नहीं हो सकती प्रत्येक चीज़, प्रत्येक व्यक्ति का अपना अपना चरित्र अवश्य होता है अच्छा हो या बुरा । उर्दू में बद अख़लाक़ और ख़ुश अख़लाक़ कुचरित्रवान और सुचरित्रवान ही के पर्यायवाची शब्द हैं । जिनकी जगह चरित्रहीन (जिनका कोई चरित्र नहीं होता) और चरित्र वान (जिनका कोई चरित्र होता है) का प्रयोग किया जाता है मगर इनका आशय सुचरित्रवान और कुचरित्रवान ही से होता हैं । इस प्रकार हम

चरित्रवान शब्द को अच्छे आचरण वाले नेक पुरूष के लिये प्रयुक्त होने वाला अपूर्ण या सांकेतिक शब्द कह सकते हैं । सम्पूर्ण वास्तविक शब्द सुचरित्रवान ही हो सकता है । इसी प्रकार कुचरित्रवान को समझ लीजिये । नेक चलन और बदचलनशब्द भी इन्ही शब्दों के समानार्थी हैं ।

दुनियाभर में आर्य जाति को सबसे पुराना और सभ्य सुसन्स्कृत माना जाता है । इसी बिना पर भारत वर्ष को संसार में आज तक सम्मान प्राप्त हुआ हैं । धर्म कर्म आदर्श, शौर्य, पौरूष, ज्ञान विज्ञान, तप, योग, भक्ति आदि सभी गुण इन लोगों में विशेष रूप से पाये जाते थे । मगर इसका यह भी अर्थ नहीं हैं कि उन उत्तम पुरूषों के समुदाय में कुचरित्रवान नहीं होते थे।

श्रीराम के पिता दशरथ के मित्र और अनंग देश के राजा लोमपाद ने नर्तकियों की सहायता से ऋृषि श्रंग की तपस्या भंग करने की कोशिश की थी । यह एक मिसाल है कुचरित्रवान की । रावण, जिसको राक्षस के नाम से पुकारा जाता हैं । महाराजा जनक ने सीता स्वयंवर में उसे बुलाया था। कुछ ये भी कहते हैं कि बिन बुलाये गया था जो भी हो सीताहरण से लेकर उनकी रिहाई तक तो वह उसी के महल में क़ैद रही उसने उनके साथ कैसा भी व्यवहार किया हो लेकिन बदचलनी का व्यवहार नहीं किया। "अग्नि परीक्षा" इस तथ्य की साक्षी हैं । और इस प्रकार वह सुचरित्रवान भी था । ऐसी ही अनेंकों मिसाले अरवाचीन इतिहास में विद्यमान हैं । लेकिन हम दृढ़ता और विश्वास के साथ यह तो अवश्य कह सकते हैं कि अगले युग में अधिकांश आदमी सुचरित्रवान थे । इस ज़माने की निक्रष्टता और सुचरित्रहीनता उनमें नहीं थी जो कुछ हमने देखा नहीं है और उस समय का लिखित इतिहास भी हमारे पास नहीं है केवल सुना ही सुना हैं । हम उस को ग़लत तो नहीं बताते लेकिन हम उसके सिलसिलें में अधिक कुछ न कह कर इधर के युग की बात करना चाहते हैं । आगे बढ़ने वाले को पीछे मुड़कर देखना शुभ नहीं होता हैं ।

जैसे जैसे समय बीतता गया ? दुनिया की आबादी बढ़ती गई, रोज़ी रोटी की समस्या मुंह बाय खड़ी हो गई । नई नई बातें सामने आने लगीं । नये

नये दृष्टि कोण उभरने लगे, नई नई विचारधारायें उपजाने लगीं । नई नई सभ्यताओं का जन्म हुआ । वैसे ही वैसे बेचारी सुचरित्रता को कुचरित्रता के हाथों ठगा और लूटा जाने लगा । उसके घर ज़लाये गये । उसके मकान गिराये गये । उस पर सितम ढाये गये । उस पर बम बरसाये गये । उसकी आंखे निकलवाई गईं उसको अपमानित किया गया । उसको नग्न किया गया । उसके साथ बलात्कार किया गया, अत्याचार किया गया ।

बहादुरशाह ज़फ़र को हुमायूं के मक़बरे में अंग्रेज़ों के हाथ गिरफ़्तार कराने वाला मिर्ज़ा इलाही वख़्श, ताँत्या टोपे को फांसी पर चढ़वाने वाला मान सिंह, शिवाजी को आगरा की जेल में डलवानें वाला जैं सिंह,. राना रतन सिंह को बन्दी बनाने वाला अलाऊद्दीन, 11 दिसम्बर 1845 को सतलज के किनारे कर्नल लारेन्स के हाथों सिक्खों को परास्त करने वाला लाल सिंह और तेज सिंह, जंग प्लासी में अंग्रेज़ों का साथ देकर सिराजुदौला को हराने वाले मीरजाफ़र और रायदुर्लभ अपने स्वामी रिपुन्जय का वध करके गद्दी प्राप्त करने वाला पुल्कि, अपने आश्रयदाता काश्मीर नरेश वालादित्य को धोखे से वध करने वाला हूण नरेश मिहिरकुल, उच्च के दुर्ग के नरेश का क़त्ल कर फाटक खुलवाकर मौहम्मद ग़ौरी को प्रवेश कराने वाली उसी की रानी, इसी श्रेणी में आतें हैं । पृथ्वीराज की ऑखें निकलवाने वाले मौहम्मद ग़ौरी अशोक पुत्र कुणाल की आंखें निकलवाने वाली उनकी मौसी (सौतेली मा) कारुवा की, अमीर उमर और मंगूखां की आंखें निकलवाने वाले अलाउद्दीन, ख़िज़्रख़ां के पुत्र शादी खां की आंखें निकलवाने वाले मलिक काफ़ूर, शिवाजी के पुत्र शम्मा जी की आंखें निकलवाने वाले औरंगज़ेब, शहर यार की आंखें वाला नूरजहां का भाई शहर यार का मामा आसिफ़ खां।

यहूदी और हिन्दुओं की तरह सबसे अधिक सताई गई सुचरित्रता ने मर्यादा पुरूषोत्तम राम की भांति अपने उसूलों का पालन किया हैं और सारे संसार में जहां तहां राम का "नाम लेकर हक़ पर शहीद" होती रही हैं । कुचरित्रवान व्यक्ति छल–कपट से छीना झपटी द्वारा धन एकत्रित कर चमकदार उन्नति तो कर सकता हैं । मगर उसकी नींव रेत की धरती पर

आधारित होती हैं वो कभी भी समय के सागर में सत्य के ज्वार भाटें आने से धराशायी भी हो जाती हैं यदि कुचरित्रता, पाप, कपट, छल, और बल ही को श्रेयस्कर माना गया होता तो नासिरउद्दीन बादशाह होकर भी कुरान शरीफ़, नक़ल करके और टोपियों पर कशीदाकारी करके गुजारा नहीं करता और न अशोक कलिंग में प्रवाहित रक्तपात देखकर हमेंशा के लिये तलवार म्यान में रख देता । धर्मशालायें बनवाना पिआऊ लगवाना, लंगर चलवाना, दान पुण्य आदि सभी बन्द हो जाते ।

हालांकि इस भौतिक युग में अधिकांश लोगों ने धन लोलुपता को अंगीकार कर लिया है । "जैसा भी हो कमाओं" का सिद्धान्त अपना रखा हैं । मेरे व्यक्तिगत जीवन में ऐसी अनेकों घटनायें हरेक को ऐसी धटनाओं का सामना करना पड़ता होगा । एक बार की बात है मैंने अपनी ज़मीन को आबादी में दर्ज कराने के लिये तहसील बिलारी से सम्बन्धित अपने एक सहपाठी मित्र के माध्यम से लेखपाल से बात कराई । पन्द्रह सौं रूपये में काम पूरा हो जाने का वायदा हो गया । पूरी रकम सहपाठी पर जमा कर दी गई । साढ़े सात महीने में यह काम पूरा हुआ । जब कुछ तामीर कराने के लिये म्यूनिसिपलिटी विलारी से नक़्शा पास कराने के लिये एक साल बाद फ़र्द ली गई तो उसमें 251 नम्बर को भी 252 लिख दिया । और 252 को तो 252 लिखना ही था । यह नियम है कि किसी भी एक बस्ती या गांव के तमाम खेतों के नम्बर सिलसिलेवार होते हैं दो खेतों के एक ही नम्बर नहीं हो सकते । यह महान ग़लती कैसे हुई जबकि यह काम लेखपाल, क़ानूनगों, वकील, कातिव, एस.डी.एम. साहिब महोदय और उनके पेशकार की नज़रों से होकर गुज़रता है छानबीन से पता चला कि सहपाठी मित्र पाँच सौ खुद खा गया । लेखपाल ने हज़ार में से एक भी रूपया किसी अन्य सम्बन्धित व्यक्ति को नहीं दिया । इसलिये झुझंला कर एस.डी.एम. के पेशक़ार ने यह ग़लती दानिस्ता पैदा कर दी जिसका ख़मियाज़ा मैंने लगभग ढाई साल तक उठाया और उतना ही काम सन्शोधन के लिये फिर किया। इस कुचरित्रता से धन ही नहीं समय का भी नुक़सान हुआ और मेरी उन्नति ढाई साल पिछड़ गई । इस प्रकार की बातें न जाने रोज़ मर्रा कितनी होती

रहती हैं । रिश्वत का बाज़ार गर्म हैं कानूनी व्यवहार नर्म हैं और सब कुछ बाइसेशर्म हैं ।

धन कमाना चाहिये, उन्नति करनी चाहिये । लेकिन एक नियम बद्ध ढंग से जिस कमाई में अन्याय, शोषण और लालच का समावेश हो वह कमाई ठीक नहीं होती है चाहे राजा करे चाहे रंक । बुरा काम तो बुरा ही होता हैं । परमात्मा को मानने वाला बुलन्द आवाज़ से उसकी दुहाईदिने वाले अखण्ड कीर्तन करने वाले धर्म कर्म की बातों में व्यस्त भक्त जन, दाढ़ी और तिलकधारी सज्जन, सुचरित्रवान बनने से क्यों कतराते हैं और क्यों अच्छी बातों पर अमल करने से बचते हैं जबकि वह स्वयं उन बातों के प्रचारक हैं ।

दबी ज़ुवान से उनका किया गया शिकवा मेरे कानों में झकृंत हैं । मैं समझता हूँ कि वह ठीक कहते हैं । बेटा बाप के आचरण ही नक़ल करता हैं । बड़ों की आज्ञा का पालन करता हैं । मुझे ख़ास तरीक़े से पता है कि एक गन्ने के मिल मालिक के कर्मचारी ने अपनी सुन्दर जवान कुंआरी बेटी के हाथ शराब की बोतल सेठ के चैम्बर में भिजवाई थी । और ख़ुद बाहर खड़ा रहा था । अगले दिन उसकी पदोन्नति होकर बाइस सौं रूपये मासिक वेतन हो गई । सेठ के चौंकीदार ने यह भेद खोल भी दिया परन्तु उन पर कोई असर नहीं पड़ा । जब ऑख का पानी ढल जाता है तो ऐसा ही होता हैं । लेकिन क्या यह आवश्यक था कि बेटी बाप की इस नीयता में शरीक होती ? जब किसी मिनिस्टर की लड़की या लड़के की शादी होती है तो नीचे से उछलता हुआ रूपया उनकी जेबों तक पहुंच जाता है और इस योजना में मातहतों की भी चान्दी हो जाती है लेकिन क्या यह ज़रूरी हैं कि वे मातहत उन भ्रष्ट अधिकारियों के कहने में चलें । मै समझता हूँ कि नेक लोगों के सामने भी कभी कभी ऐसी मजबूरिया आ जाती हैं। कि करों या मरों का पालन करना पड़ता हैं । वे नहीं चाहते हुए भी कुकृत्य को कर बैठते हैं । एक बार ब्लाक वी.डी.ओ. ने अपने विभाग की एक युवती सुन्दर हाउस विज़ीटर को शाम को अपने बंगले पर बुलाया नेकदिल

युवती घबराई । अन्य सहेलियों से सलाह मश्विरा करने लगी । जवाब मिला "नौकरी करनी हैं और सुख शान्ति से रहना हैं । तो कहना मानों वरना कल ही किसी दूर दराज़ गांव में तबादला कर दिया जायेगा। जहां इन जैसे अनेकों भेड़ियों की शिकार होकर रह जाओगी और जीवन की आसानियां भी समाप्त हो जायेंगी इसलिये एक ही की हो जाओ। मेरा मतलब यहां अनेकों अनुभवी घटनाओं को एकत्रित करने का नहीं हैं । इन चन्द मिसालों से मैं यह प्रकट करना चाहता हूँ कि राष्ट्रीय सुचरित्र निमार्ण की ज़िम्मेदारी उच्च अधिकारीयों की हैं । यदि ऊपर वाले भ्रष्ट बने रहे तो देश की भ्रष्टता बढ़ती चली जायेंगी । और यही पतन की नीव रख देगी । यही फिर गुलामी का बीजारोपण कर देगी । दुनिया भर के उन्नत शील देशों की उन्नति का मूल कारण वहां के नागरिकों के नैतिक गुण और सुचरित्रता ही है । जापान और जर्मन इसकी ज़िन्दा मिसाल हैं किसी भी देश की अधिक आबादी या अधिक सम्पत्ति या विपुल खनिज भन्डार उसकी उन्नति के लिय काफ़ी नहीं होते हैं । काफ़ी होते हैं एक प्याला पानी के पीछे जान निछावर करने वाले नर शहवाज़ पठान, राणाप्रताप के नमक हलाल सेवक, भामाशा, मुहम्मद उवैस और देशबन्धु एन्ड्रूज़ जैंसे महापुरूष ।

14
संक्षिप्त में

संसार में जब से मानव का जन्म हुआ है तब से उसकी सभ्यता के विकास के साथ, उसके समाज में अन्धविश्वास, पूर्वाग्रह, व्यामोह, परम्परा, अन्धी प्रतिबद्धता, रस्म और रिवाज का भी विस्तार हुआ है । सीधे सांधे इन्सान को उस अवैज्ञानिक युग में चालाक आदमियों ने जैसे जो कुछ समझा दिया, इसने भोले पन से उसी को सत्य मान लिया । और समय बीतने के बाद उसकी सन्तति ने बिना तर्क और बुद्धि से काम लिये उन बातों को ज्यों का त्यों मान लिया ।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर और आत्मा की आवाज़ पर एक सपने से प्रेरित होकर (जिसका वर्णन आगे करूंगा) तर्क और बुद्धि से काम लेकर "किरनों के पदचिन्ह" की रचना की हैं । मैं चाहता हूँ कि हर आदमी अपने सोचने समझने के दृष्टि कोण में सत्य और वास्तविकता को भी स्थान दे । ईश्वर में आस्था, कर्म में विश्वास और धर्म में श्रद्धा रखे । अवैज्ञानिक बातों को व्यवहारिक जीवन में स्थान देना अनुचित हैं ।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार हैं लेकिन किसी पर भी उन विचारों को थोपने का कतई अधिकार नहीं हैं । दूसरे जो कुछ सुधारक या विचारक कहता हैं यदि वे पूर्णतः सत्य नहीं हैं तो पूर्णतः

असत्य भी नहीं हो सकतें । आवश्यकता है समझने विचारने की । तथ्य की गहराई में जाने की । लेकिन रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास आदमी को स्वतन्त्रता पूर्वक सोचने में बाधक बनते हैं ।

हज़ारों साल पहिले वेदों में महाविद्धानों और पंडितों ने साफ़ साफ़ कह दिया था कि पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ़ चक्कर लगाती हैं । लेकिन जब कॉपरनिक्स ने बाइबल में वर्णित इस वैज्ञानिक सत्य के प्रतिकूल कथन को ठुकरा कर वैदिक सिद्धान्त को प्रतिपादित किया कि सूर्य नहीं; पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती हैं । तो उस बेचारें को अन्धविश्वासियों ने फांसी दे दी । यदि तर्क और बुद्धि से बाइबिल के अनुयाइयों ने काम लिया होता तो एक विद्धान का अन्त न होता ।

आज से 200 वर्ष पूर्व रेल इन्जिन का उद्‌भव हुआ । पश्चिमी समाज की इस देन का पश्चिमी वैज्ञानिक डा. सोल्मनी ने विरोध किया, उनकी धारणा थी कि ट्रेन की तेज़गति होने के कारण उसमें बैठने वाले यात्रियों के नाक आंख, कान और मुहं से ख़ून निकलने लगेंगें । आज ध्वनि से भी तेज़ गति के अन्तरिक्ष यान से मनुष्य चांद तक होकर लौट आया है और कुछ भी नहीं हुआ है ।

इसलिये यहां न किसी की हर बात सही है न हर बात ग़लत हैं किसी भी विषय में मेरा ज्ञान नगण्य हैं, अपूर्ण हैं, इसलिये मैं यह नहीं कह सकता कि मेरा कथन सत्य हैं । मैं तों केवल इतना कहना चाहता हूँ कि इन्सान को परलोक के बारे में अधिक न सोच कर इहिलोक के विषय में सोचना चाहिये क्योंकि वह दुनिया में रहता है । उसका जीवन यहीं बीतता हैं, यह दुनिया उसकी अपनी हैं । सारे लोग उसके परिवार के हैं और सभी एक ईश्वर की औलाद हैं । इसलिये सभी की भलाई और सुख सभी का उत्कर्ष और शान्ति के विषय में आदमी को सोचना चाहिये । अन्धविश्वासी न बनकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये । और नैतिक नियमों का पालन करना चाहिये । धर्म भी यहीं चाहतें हैं ।

रूस के स्वप्न विज्ञानी डा. वास्ली कसात्किन, कैलीफोर्निया स्थित स्वप्न

शोध सन्स्थान के निदेशक काल्विन हाल, फ़्रान्सीसी गणितज्ञ, दार्शनिक और क्रान्तिकारी मारकिडे कन्डारसेट, जरमन वैज्ञानिक फ़्रेडरिक केल्पूल्वान स्ट्रानिज, जर्मन अमरीकी भेषज एवम् शरीर विज्ञानी ओटोलेवी, अमरीकी अनुसन्धानकर्ता एलियस होवे,सीसे की गोलियां कम ख़र्च मे बनाने वाले जेम्स वाट ही ने नहीं सपनों की वास्तविकता और चमत्कार, उनके तिलिस्मी रहस्योदघाटन और जादुई मार्मिक दैनिक संकेतों को विश्व प्रसिद्ध लेखकों ने भी माना है । और लाभानवित हूये हैं । कोलरिज की "कुवला खान" दांते की "डिवाइन कामेडी", लुइस स्टीवेन की "द स्ट्रैन्ज केल आर्फ डॉ. जोकिल एण्ड मि. हाइड", सपनों ही से प्रेरित होकर लिखी गई थी । प्रसिद्ध पुरातत्वाविद सर अर्नेस्ट वेलिस वग, हरमन हिलप्रेट, संगीतकार बीथोवेन, मोजटि और वायलिन वादक टारटिनी ने भी सपनों से लाभ उठाया था। प्रेरणा पाई थी ।

10 सितम्बर की रात को दो बजे के लगभग मैंने एक सपना देखा । कि एक काला सांप मेरी कमर के नीच लम्बा लम्बा दवा हुआ हैं । मुझे उसके रेंगने और कुलबुलाने का भली प्रकार एहसास हो रहा है । मैंने अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं की उस समय मुझे न भगवान याद आया न कोई देवी देवता । मैंने फन को एक कपड़े की मदद से कस के पकड़ लिया झटका देकर घुमाया और पटक दिया । वह मर गया । हे भगवान ! तेरा शुक्र हैं सांप मर जाने के बाद मेरे मुँह से यह शब्द निकले और मैं उठ बैठा। मुझे सारी रात नींद नहीं आयी और कई दिन तक जागते समय भी सांप का एहसास कमर के उसी निश्चित भाग पर बराबर होता रहा ।

मैने सुबह तक इसी सोचविचार में समय व्यतीत किया । महाकवि तुलसीदास की चौपाई "कर्म प्रधान विश्व कर राखा" बिल्कुल सत्य हैं । गीता भी इसी बात का संकेत करती हैं । हमें कर्म को सबसे अधिक और सबसे पहिले महत्ता देनी चाहिये । कर्म से सब कुछ होता हैं । कर्म महान हैं, कर्म इन्सान हैं और कर्म ही भगवान हैं ।

इस सपने से प्रेरित होकर मेरे विचारों में तरह तरह की मर्म स्पर्शी बातें

उभरती रहीं और मैंने मन की उस प्रतिक्रिया को इस पुस्तक के रूप में उपस्थित कर दिया । वैसे ध्यानपूर्वक देखा जाये तो मैंने कुछ नया नहीं कहा हैं । कितने ही विद्धान और मनीषी आगे ऐसा ही बहुत कुछ कह चुके हैं । लेकिन जैसे भगवान का नाम हर व्यक्ति द्वारा बार बार लेने पर भी अच्छा कार्य कहलाता है इसी प्रकार सत्य को दुहराते रहने का कार्य भी प्रिय होता है । यह सोचकर मुझे सन्तोष हैं । रहे नाम भगवान का ।

000